स्तोत्र रत्नमाला

(अर्थ सहित)

श्रीनाथद्वारस्थ विद्याविलासि
आचार्यवर्य्य गोस्वामितिलकायित
श्री १०८ श्रीइन्द्रदमनजी (श्रीराकेशजी)
महाराज श्री की आज्ञा से प्रकाशित

जगद्गुरु श्रीमद् वल्लभाचार्य वंशावतंस
आचार्य वर्य्य गोस्वामि तिलकायित
श्री 108 श्री इन्द्रदमन जी (श्री राकेश जी) महाराज
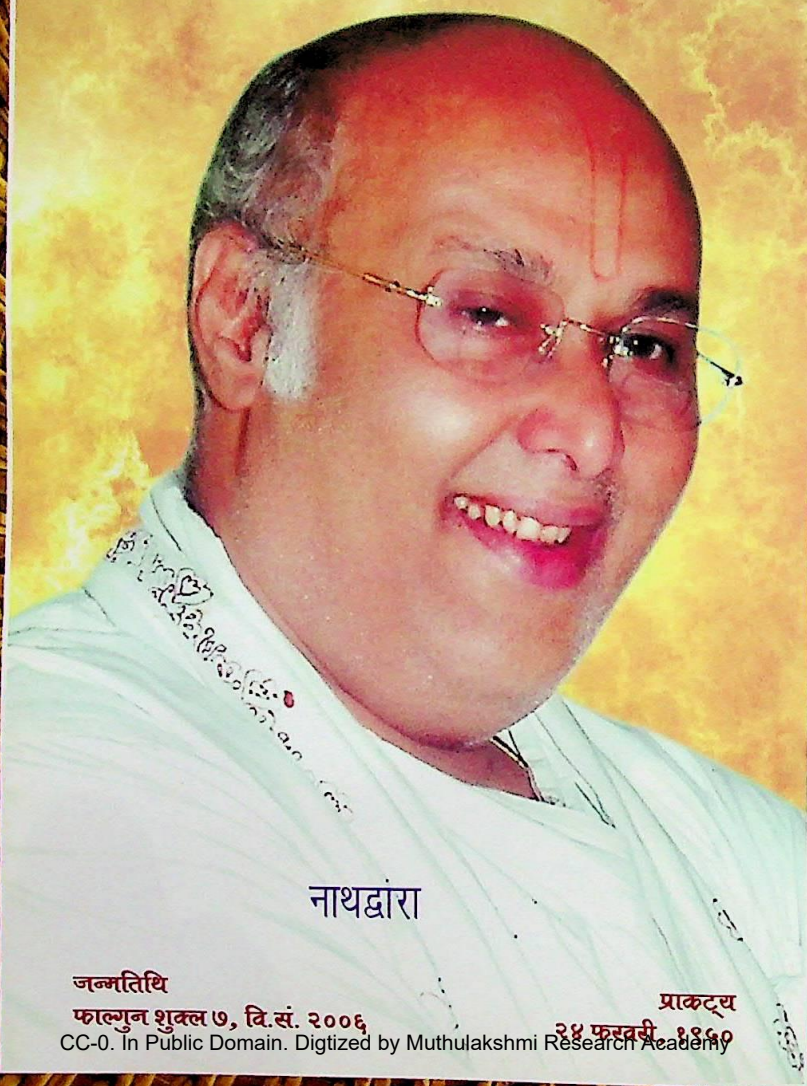
नाथद्वारा

जन्मतिथि
फाल्गुन शुक्ल ७, वि.सं. २००६

प्राकट्य
२४ फरवरी, १९५०

स्तोत्र रत्न माला

अर्थ सहित

अनुवादक, सम्पादक एवं संशोधक

त्रिपाठी यदुनन्दन श्रीनारायणजी शास्त्री

साहित्यायुर्वेदाचार्य, एम.ए.संस्कृत, हिन्दी

अध्यक्ष

विद्याविभाग, मन्दिर मण्डल, नाथद्वारा

प्रकाशक

विद्याविभाग, मन्दिर मण्डल, नाथद्वारा

संवत २०७३ न्योछावर २५ /-

तृतीयावृत्ति

प्रति -२०००

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	पृ.सं.
	मंगलाचरण	
१	श्री सर्वोत्तम स्तोत्र	७
२	श्री वल्लभाष्टक	१८
३	श्री यमुनाष्टक	२२
४	सिद्धान्तरहस्य	२७
५	नवरत्न	२९
६	विवेक धैर्याश्रय	३२
७	कृष्णाश्रय	३७
८	चतु:श्लोकी	४०
९	मधुराष्टक	४१
१०	नन्दकुमाराष्टक	४३
११	श्री पुरुषोत्तम सहस्रनाम	४७
१२	श्री यमुना कवच	१०७
१३	श्री सुदर्शन चक्र स्तुति	११०
१४	श्री नारायण कवच	११८
१५	गजेन्द्र मोक्ष	१३१

'संक्षिप्त स्तोत्र परिचय'

नित्य नियम पाठ पुस्तक में वैष्णोपयोगी पंचदश स्तोत्र संकलित है। इस पुस्तक की निर्विध्न समाप्ति एवं पाठकर्ता के नित्य नियम पाठ पूर्ति के लिए सर्व प्रथम मङ्गलाचरण किया है।

(१) सबसे उत्तम श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र पुष्टिमार्गीय वैष्णवों की गायत्री है। ब्राह्मण प्रतिदिन नियम पूर्वक गायत्री जप न करे तो द्विजत्व का तिरोभाव हो जाता है। उसी प्रकार वैष्णवों को भी श्री सर्वोत्तम स्त्रोत का पाठ नित्य नियम पूर्वक करना चाहिए।

(२) श्रीविठ्ठल दीक्षित विरचित श्रीवल्लभाष्टक में वर्णन किया है कि श्रीमहाप्रभुजी वास्तव में श्रीकृष्ण के स्वरूप में ही प्रकट हुए हैं तभी तो आपको "गोकुलेश" जानकर ही भजन करते हैं।

(३) श्रीयमुनाष्टक को षोड़श ग्रन्थों का मङ्गलाचरण माना है। इसमें आचार्य श्री ने श्रीयमनुजी के स्वरूप एवं माहाम्य का वर्णन किया है। श्रीयमुनाजी को चतुर्थ यूथ की स्वामिनी माना है। यमुनाष्टक के पाठ से देह की शुद्धि तथा नवीन दिव्य देह की प्राप्ति होती है। श्री ठाकुरजी की सेवा का अधिकार प्राप्त हो जाता है एवं प्रभु में स्नेह हो जाता है तथा स्वभाव पर विजय होती है।

(४) "सिद्धान्त रहस्य" श्रीवल्लभाचार्यजी का अपूर्व ग्रन्थ है। भक्ति सर्वमान्य है। अन्य आचार्यों ने इस दृष्टिकोण का पृथक् ग्रन्थ रूप में कहीं वर्णन नहीं किया है। शास्त्रों में यह बात अप्रकट

(अप्रकटित) है। इसलिए इसे ''सिद्धान्त रहस्य'' नाम दिया है। इसमें बताया है कि प्रतिक्षण ब्रह्म सम्बन्ध स्मरण से पंच दोषों की निवृत्ति हो जाती है।

(५) नवरत्न में जो श्लोक है वे नो रत्नों के समान है। जीव को स्वभाव वश चिन्ता होती रहती है। किन्तु जीव को चिन्ता करना उचित नहीं है। जिसने ब्रह्म सम्बन्ध ले लिया है उस पर श्रीठाकुरजी निश्चित रूप से अनुग्रह करेंगे। उसका अहित नहीं होने देंगे। नवरत्न ग्रन्थ में जीव को सर्वथा चिन्ता का परित्याग करने को कहा गया है।

(६) विवेक द्वारा कामना वेश के समय दृढ़ता तथा दुःख के समय धैर्य द्वारा दृढ़ता दृढ़ रहे तभी प्रभु का आश्रय प्राप्त होता है। श्रीठाकुरजी के ऊपर कभी भी अविश्वास की भावना मन में नहीं आने दे। किसी कार्य को करने के लिए प्रभु से प्रार्थना नहीं करे यही विवेक धैर्याश्रय का मन्तव्य है।

(७) कृष्णाश्रय ग्रन्थ में बताया है कि एक मात्र भगवान् श्रीकृष्ण ही रक्षक हैं। श्रीआचार्य चरण की यह आज्ञा है कि जीव को श्रीकृष्ण की शरण में ही जाना चाहिए। ग्रन्थ में इसी बात का सदुपदेश है। कलियुग में लोक, देश, काल, तीर्थ, मंत्र, सत्पुरुष सभी दोष युक्तहो गये हैं। इसलिए एक मात्र प्रभु ही सर्व प्रकार से रक्षक है तथा सेव्य है।

(८) चतुःश्लोकी श्रीमद्भागवत् के षष्ठ स्कन्ध से एकादश अध्याय के श्लोक संख्या २४ से २७ तक लिया है। इसमें वृत्रासुर

ने भगवान् को प्रत्यक्ष अनुभव करते हुए प्रार्थना की है कि आपके प्रिय भक्तजनों से मेरी मित्रता स्थिर रहे। आपकी माया से देह, गेह और स्त्री पुत्रादि में जीव आसक्त हो रहे हैं। उनके साथ मेरा कभी किसी प्रकार का सम्बन्ध न रहे।

(९) श्रीमद्व‌वल्लभाचार्य चरण द्वारा विरचित मधुराष्टक में श्रीठाकुरजी की समस्त लीलाएं मधुर है तथा मधुराधिपति भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र का सब कुछ कार्य मधुरता से युक्त है।

(१०) नन्दकुमाराष्टक में श्रीआचार्य चरण ने नन्दकुमार श्रीकृष्ण की विविध बाल लीलाओं का वर्णन किया है तथा प्रत्येक पद्यान्त में परब्रह्म नन्दकुमार श्रीकृष्णचन्द्र की भक्ति करो ऐसा उपदिष्ट किया है।

(११) श्रीपुरुषोत्तम सहस्रनाम पुष्टिजीवों के कल्याणार्थ अखण्ड भूमण्डलाचार्य पूर्ण पुरुषोत्तम वाग्देवतावतार श्रीमद्वल्लभाचार्य ने श्रीभागवत् के द्वादश स्कन्ध के भावानुरुप श्री पुरुषोत्तम के सहस्रनाम प्रकट किये हैं। पुष्टि सम्प्रदाय में इस प्रकार की मान्यता है कि आपके ज्येष्ठ पुत्र श्रीगोपीनाथजी श्रीमद्भागवत के सम्पूर्ण पाठानन्तर महाप्रसाद ग्रहण करते थे। श्रीमद्भागवत पाठ में अत्यधिक समय व्यतीत होता देखकर आचार्यश्री ने श्रीपुरुषोत्तम सहस्रनाम स्तोत्र की रचना की। इसके पाठ से श्रीभागवत के पाठ की पूर्ति हो जाती है। प्रातःकाल श्रद्धापूर्वक पाठ करने से प्रभु श्रीगोवर्धनधरण के चरणों में सायुज्य की प्राप्ति होती है। श्रीआचार्य चरण का दृढ़ विश्वास है कि श्रीशुकदेव मुनि के मुख से निसृत

श्रीमद्भागवत अमृत है। इस पाठ से पाठकर्ता को अमृत की उपलब्धि होगी।

(१२) श्रीयमुना कवच का गर्ग संहिता माधुर्यखंड के १६ वें अध्याय में वर्णन आया है कि सौभरि मुनि से मांधाता राजा ने धारण करने के लिए श्री यमुना कवच मांगा। यह कवच सर्वप्रकार की रक्षा करने वाला है। धर्म अर्थ काम और मोक्ष को देने वाला है। प्रातःकाल श्री युमना कवच के तीन माह तक नियमित ११० पाठ भक्तिपूर्वक जो कर लेता है उसको इच्छित सभी प्रकार की सिद्धि प्राप्ति होती है। सभी तीर्थों के फल प्राप्त करता है। अंत में योगी दुर्लभ परम धाम गोलोक को प्राप्त करता है।

(१३) दुर्वासा की दुःख निवृत्ति के लिए राजा अम्बरीष ने श्री सुदर्शन चक्र की स्तुति की थी। श्री सुदर्शन चक्र से कोई शत्रु विजय प्राप्त नहीं कर सकता है। यह विश्व रक्षक है। गदाधारी भगवान् ने दुष्टों के नाश करने के लिए ही आपको नियुक्त कर रखा है। श्री सुदर्शन चक्र का पाठ करने वाले का कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता है।

(१४) श्रीनारायण कवच देवराज इन्द्र ने नारायण कवच से सुरक्षित होकर शत्रुओं की चतुरंगिणी सेना को अनायास ही विजय कर त्रैलोक्य में लक्ष्मी का उपभोग किया था। देव पुरोहित विश्व रूप ने नारायण कवच का उपदेश इन्द्र को दिया था। इसके प्रभाव से ही देवराज ने असुरों पर विजय प्राप्त की थी। इस नारायण कवच के आदर पूर्वक श्रवण तथा धारण करने से सभी

प्राणी आदर से झुक जाते हैं। नित्य पाठ कर्त्ता सर्व प्रकार से भय मुक्त हो जाता है। यह वैष्णवी विद्या है।

(१५) गजेन्द्रमोक्ष सभी प्रकार के लौकिक कष्टों का निवारण करता है। दुःस्वप्न नाश एवं ऋण मुक्ति के लिए भी इसका पाठ उपयोगी है। इसके सतत पाठ करने से भवसागर से जीव की मुक्ति हो जाती है तथा भगवत् चरणारविन्द की प्राप्ति होती है।

स्तोत्र रत्न मणि माला अर्थ सहित पुस्तक को विद्याविभाग ने विद्याविलासि गोस्वामि तिलक श्री १०८ श्रीराकेशजी (श्रीइन्द्रदमनजी महाराज) श्री की आज्ञा से प्रकाशित की है। आशा है वैष्णवजन इस पुस्तक से लाभान्वित होंगे।

संशोधन में पूर्ण ध्यान दिया गया है फिर भी मानव स्वभाव वश अशुद्धि रह गई हो तो विज्ञजन क्षमा करेंगे।

त्रिपाठी यदुनन्दन श्रीनारायणजी शास्त्री
अध्यक्ष विद्याविभाग
मन्दिर मण्डल, नाथद्वारा (राज.)

।।श्रीकृष्णाय नमः।।

।।श्रीमदाचार्यचरणकमलेभ्योनमः।।

मंगला चरणम्

श्री गोवर्द्धन नाथ पादयुगलं हैयंगवीनप्रियं
नित्यं श्रीमथुराधिपं सुखकरं श्री विठ्ठलेशं मुदा।
श्रीमद्द्वारवतीश गोकुलपती श्री गोकुलेन्दुं विभुं
श्री मन्मन्मथमोहनं नटवरं श्री बालकृष्णं भजे।।१।।
श्रीमद्वल्लभ विठ्ठलौगिरिधरं गोविन्दरायाभिदं,
श्रीमद् बालकृष्णगोकुलपती नाथं रघूणां तथा।
एवं श्रीयदुनायकं किल घनश्यामं च
तद्वंशजान्, कालिन्दीं स्वगुरुन्गिरिं
गुरु विभून्स्वीय प्रभुंश्च स्मरेत्।।२।।

श्रीगोवर्द्धननाथजी के उभय चरण कमल का तथा नवनीत प्रियजी का' प्रतिदिन सुखदेने वाले श्री मथुरानाथजी का प्रसन्नता पूर्वक श्री विठ्ठलनाथजी का श्री द्वारकानाथजी का श्री गोकुल नाथजी का प्रभुजी गोकुल चन्द्रभा जी का नटवर प्रभु श्री मदन मोहन जी का तथा श्री बालकृष्ण जी का मैं भजन करता हूँ।

श्री वल्लभाचार्य जी तथा श्री विठ्ठलनाथजी और श्री गिरिधरजी श्री गोविन्दराय जी, श्रीबालकृष्णजी, श्री गोकुलनाथजी, श्री रघुनाथजी, श्रीयदुनाथजी, श्रीघनश्यामजी तथा आप श्री के वंश में प्रकट होने वाले सभी गोस्वामि बालकों का श्री यमुनाजी, अपने गुरुदेव श्री गिरिराजजी अपने गुरु के सेव्यस्वरूप तथा अपने सेव्यस्वरूप श्री ठाकुरजी का स्मरण करें।

।।श्री मंगला चरण संपूर्ण।।

श्री सर्वोत्तमस्तोत्रम्

(1) मंगलाचरणम्

चिन्तासन्तानहन्तारो यत्पादाम्बुजरेणवः।
स्वीयानां तान्निजाचार्यान् प्रणमामि मुहुर्मुहुः।।१।।
यदनुग्रहतो जन्तुः सर्वदुःखातिगो भवेत्।
तमहं सर्वदा वन्दे श्रीमद्वल्लभनन्दनम्।।२।।
अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरुवे नमः।।३।।

अर्थ– जिनके चरण कमल के रजकण अपने सेवकों के चिन्तासमूह को नाश करने वाले हैं उन अपने आचार्यचरण श्रीमद्वल्लभाचार्यजी को मैं बारम्बार प्रणाम करता हूं। जिनकी कृपा से जीव सब प्रकार के दुःखों को उल्लंघन करने वाला होता है उन श्रीमद्वल्लभाचार्यजी के पुत्र श्रीविट्ठलनाथजी श्रीगुसांईजी की सदैव वन्दना करता हूं। जिन श्रीगुरुदेव ने ज्ञान–रूपी अंजन शलाका द्वारा अज्ञान रूप अंधकार से अन्ध ऐसे मेरे नेत्रों को खोला है उन श्रीगुरूदेव को मेरा प्रणाम हो।१–२–३।

नमामि हृदये शेषे लीलाक्षीराब्धिशायिनम्।
लक्ष्मीसहस्रलीलाभिः सेव्यमानं कलानिधिम्।।४।।
चतुर्भिश्च चतुर्भिश्च चतुर्भिश्च त्रिभिस्तथा।
षड्भिर्विराजते योऽसौ पञ्चधा हृदये मम।।५।।

अर्थ- लीलारूप क्षीर-समुद्र में हृदयरूपी शेषशय्यापर शयन किये हुए और सहस्त्रशः लक्ष्मियों की लीला से सेवित, कलाओं के निधि रूप ऐसे पूर्ण पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण को मैं नमन करता हूं। श्रीमद्भागवत दशमस्कन्धके जन्म प्रकरण के चार अध्यायों से, तामस प्रकरण के सात-सात अध्यायों के प्रमाण, प्रमेय, साधन और फल मिलाकर २८ अध्यायों से, राजस प्रकरण के सात-सात अध्यायों के प्रमाण, प्रमेय साधन और फल मिलाकर २८ अध्यायों द्वारा तथा सात्विक प्रकरंण में सात-सात अध्यायों के प्रमेय, साधन और फल मिलाकर २१ अध्यायों के द्वारा एवं अन्तिम गुण प्रकरण में ऐश्वर्य, यश, श्री, वीर्य, ज्ञान और वैराग्य इन ६ गुण वाले ६ अध्यायों के द्वारा, इस रीति से पांच प्रकरण मिलाकर ८७ अध्यायों से श्रीमद्भागवत के दशमस्कन्ध में जो भगवान् विराजमान हैं वेही भगवान् पांच प्रकार से निरोध रूप से मेरे हृदय में विराजमान हों।४-५।

।। इति श्रीमंगलाचरणम् सम्पूर्णम्।।

।। श्रीमदाचार्य चरण कमलेभ्यो नमः।।

प्राकृतधर्मानाश्रयमप्राकृतनिखिलधर्मरूपमिति।
निगमप्रतिपाद्यं यत्तच्छुद्धं साकृति स्तौमि।।१।।

अर्थ- जो प्राकृत धर्म के आश्रय से रहित और समग्र अलौकिक धर्मरूप है इस प्रकार वेद में प्रतिपादित एवं साकार तथा शुद्ध स्वरूप जो भगवान् हैं उनकी मैं स्तुति करता हूं।।१।।

कलिकालतमश्छन्नदृष्टित्वाद्विदुषामपि।
संप्रत्यविषयस्तस्य माहात्म्यं समभूद्भुवि।।२।।

अर्थ– विद्वान् पुरुषों की भी ज्ञान दृष्टि कलिकाल रूप अंधकार से आच्छादित होने के कारण उस भगवत् स्वरूप का माहात्म्य वर्तमान समय में पृथ्वी में अपरिचित हो रहा है।।२।।

दयया निजमाहात्म्यं करिष्यन्प्रकटं हरिः।
वाण्या यदा तदा स्वास्यं प्रादुर्भूतं चकार हि।।३।।

अर्थ– जब दया के द्वार श्रीहरि को अपने वचन द्वारा अपना माहात्म्य प्रकट करने की इच्छा हुई तब अपने मुखारविन्द का प्रादुर्भाव किया।।३।।

तदुक्तमपि दुर्बोधं सुबोधं स्याद्यथा तथा।
तन्नामाष्टोत्तरशतं प्रवक्ष्याम्यखिलाघहृत्।।४।।

अर्थ– किन्तु उनका अर्थ समझना कठिन है अतएव जिस प्रकार वह माहात्म्य भलिभांति समझने में आ जाय उस प्रकार समस्त पाप का नाश करने वाले ऐसे श्रीमहाप्रभुजी के अष्टोत्तर शत अर्थात् १०८ नाम का वर्णन करता हूं।।३४।।

ऋषिरग्निकुमारस्तु नाम्नां छन्दो जगत्यसौ।
श्रीकृष्णास्यं देवता च बीजं कारुणिकः प्रभुः।।५।।

अर्थ– इस स्तोत्र के ऋषि अग्निकुमार हैं और जगति छन्द है तथा श्रीकृष्ण इसके (श्रीकृष्णास्य) देवता है और कारुणिक प्रभु बीज है।।५।।

विनियोगो भक्तियोगप्रतिबन्धविनाशने।
कृष्णाधरामृतास्वादसिद्धिरत्र न संशयः।।६।।

अर्थ– और इस सर्वोत्तम स्तोत्र में प्रतिबन्ध निवृत्त करने वाला विनियोग अर्थात् प्रयोजन भक्तियोग है और श्रीकृष्ण के अधरामृत का आस्वाद प्राप्त होना यह सिद्धि है इस विषय में कुछ भी संशय नहीं है।

श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी के १०८ नाम इस स्तोत्र में है–

आनन्दः परमानन्दः श्रीकृष्णास्यं कृपानिधिः।
दैवोद्धारप्रयत्नात्मा स्मृतिमात्रार्तिनाशनः।।७।।

अर्थ– आनन्द रुप और परमानन्द रुप श्रीकृष्ण के मुखारविन्द रूप और कृपा के भण्डार रूप एवं दैवीजीवों के उद्धार करने के लिये अपने मन में प्रयत्न करने वाले तथा स्मरण मात्र से आर्ति अर्थात् दुःख का नाश करने वाले श्रीमहाप्रभुजी है। 'आनन्द' श्रीमहाप्रभुंजी का प्रथम नाम है यहीं से १०८ नाम का प्रारम्भ होता है।

श्रीभागवतगूढार्थप्रकाशनपरायणः।
साकारब्रह्मवादैकस्थापको वेदपारगः।।८।।

अर्थ– श्रीमद्भागवत के गूढ़ अर्थ प्रकाशित करने में तत्पर साकार ब्रह्मवाद के स्थापन कर्ता एवं वेद के पार को प्राप्त होने वाले आचार्य श्रीमहाप्रभुजी हैं।।८।।

मायावादनिराकर्ता सर्ववादिनिरासकृत्।
भक्तिमार्गाब्जमार्तण्डः स्त्रीशूद्राद्युद्धृतिक्षमः।।९।।

' अर्थ– मायावाद को निराश करने वाले सर्ववादियों को निराश करने वाले तथा भक्तिमार्ग रूपी कमल को प्रफुल्लित (विकसित) करने के लिये सूर्य रूप (सदृश) एवं स्त्री शूद्रादि के उद्धार करने में समर्थ श्रीमहाप्रभुजी हैं।

अङ्गीकृत्यैव गोपीशवल्लभीकृतमानवः।
अङ्गीकृतौ समर्यादो महाकारुणिको विभुः।।१०।।

अर्थ– अङ्गीकार करने में मर्यादा युक्त एवं परम दयालु है स्वयं जीवों को अंगीकार करके गोपी पति भगवान् श्रीकृष्ण में वात्सल्यभाव उत्पन्न कराने वाले तथा सर्व समर्थ श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी हैं।

अदेयदानदक्षश्च महोदारचरित्रवान्।
प्राकृतानुकृतिव्याजमोहितासुरमानुषः।।११।।

अर्थ– दिया न जा सके ऐसा दान करने में समर्थ उदार चरित्र वाले एवं प्राकृत जन के समान अनुकरण करने के निमित्त से आसुरी जीवों को मोहित करने वाले आप श्रीमहाप्रभुजी है।

वैश्वानरो वल्लभाख्यः सद्रूपो हितकृत्सताम्।
जनशिक्षाकृते कृष्णभक्तिकृन्निखिलेष्टदः।।१२।।

अर्थ– वैश्वानर, श्रीवल्लभ, सुन्दर सत् जीवों का हित करने वाले तथा मनुष्यों को शिक्षा देने के लिये श्रीकृष्ण की भक्ति करने वाले एवं समग्र इच्छित वस्तु को देने वाले आचार्य श्रीमहाप्रभुजी है।

सर्वलक्षणसम्पन्नः श्रीकृष्णज्ञानदो गुरुः।
स्वानन्दतुन्दिलः पद्मदलायतविलोचनः।।१३।।

अर्थ– सर्व लक्षण सम्पन्न श्रीकृष्ण ज्ञानदाता और गुरु अपने स्वरूपानन्द से परिपूर्ण एवं कमलदल के समान विशाल नेत्र वाले श्रीमहाप्रभुजी हैं।।१३।।

कृपादृग्वृष्टिसंहृष्टदासदासीप्रियःपतिः।
रोषदृक्पातसंप्लुष्टभक्तद्विड् भक्तसेवितः।।१४।।

अर्थ– कृपा दृष्टि की वृष्टि द्वारा प्रसन्न होने वाले दास दासी जनों के प्रिय स्वामी और रोष युक्त दृष्टि के द्वारा भक्तों के द्वेषियों को जला देने वाले तथा निजभक्तों के द्वारा सेवित श्रीमहाप्रभुजी हैं।।१४।।

सुखसेव्यो दुराराध्यो दुर्लभांघ्रिसरोरुहः।
उग्रप्रतापो वाक्सीधुपूरिताशेषसेवकः।।१५।।

अर्थ– सुख पूर्वक सेवा करने योग्य और कष्ट द्वारा आराधना करने योग्य जिनके चरण रूपी कमल दुर्लभ हैं, उग्र प्रताप वाले, वाणीरूप अमृत द्वारा समग्र सेवकों को परिपूर्ण करने वाले श्रीमहाप्रभुजी हैं।।१५।।

श्रीभागवतपीयूषसमुद्रमथनक्षमः।
तत्सारभूतरासस्त्रीभावपूरितविग्रहः।।१६।।

अर्थ– श्रीमद्भागवत् रुप अमृत समुद्र के मंथन करने में समर्थ, उनके सारभूत ऐसी रास क्रीड़ा को स्त्रीभाव से परिपूर्ण करने वाला जिनका श्रीअंग है ऐसे श्रीमहाप्रभुजी हैं।।१६।।

सान्निध्यमात्रदत्तश्रीकृष्णप्रेमा विमुक्तिदः।
रासलीलैकतात्पर्यः कृपयैतत्कथाप्रदः।।१७।।

अर्थ– अपने सानिध्य मात्र से भगवान् श्रीकृष्ण में प्रेम का दान करने वाले तथा मुक्ति देने वाले एवं केवल रास लीला में जिनका तात्पर्य है तथा कृपा करके उस श्रीकृष्ण की कथा का दान करने वाले श्रीमहाप्रभुजी हैं।।१७।।

विरहानुभवैकार्थसर्वत्यागोपदेशकः।
भक्त्याचारोपदेष्टा च कर्ममार्गप्रवर्तकः।।१८।।

अर्थ– केवल विरहानुभव के लिये अन्य सर्व का त्याग करने का उपदेश देने वाले, भक्तिमार्ग के आचार का उपदेश देने वाले एवं कर्म मार्ग के प्रवर्तक ऐसे श्रीमहाप्रभुजी हैं।।१८।।

यागादौ भक्तिमार्गैकसाधनत्वोपदेशकः।।
पूर्णानन्दः पूर्णकामो वाक्पतिर्विबुधेश्वरः।।१९।।

अर्थ– यज्ञादि कर्म में केवल भक्तिमार्ग ही एक साधन है ऐसा उपदेश देने वाले, पूर्ण आनन्द रूप, पूर्ण कामना वाले, वाणी के अधिपति एवं विबुधों के विद्वानों के ईश्वर ऐसे आचार्य श्रीमहाप्रभुजी हैं।।१९।।

कृष्णनामसहस्रस्य वक्ता भक्तपरायणः।
भक्त्याचारोपदेशार्थनानावाक्यनिरूपकः।।२०।।

अर्थ– भगवान् श्रीकृष्ण के सहस्रनाम के वक्ता अर्थात् पुरुषोत्तम सहस्रनाम ग्रन्थ के लेखक, भक्तों के एकमात्र शरणरूप एवं भक्तिमार्ग के आचार धर्मों के उपदेश देने के लिये विविध प्रकार के वाक्य निरूपण करने वाले श्रीमहाप्रभुजी है।।२०।।

स्वार्थोज्झिताखिलप्राणप्रियस्तादृशवेष्टितः।
स्वदासार्थकृताशेषसाधनः सर्वशक्तिधृक्।।२१।।

अर्थ– आपश्री की सेवा के लिये एवं अपने उद्धार के लिये समस्त सेवा विरोधी सत्वों का जिन्होंने त्याग किया है ऐसे सेवकों को आप प्राण से अधिक प्रिय हैं और

तादृशी वैष्णवों में विराजमान तथा अपने दासों के लिये समग्र साधन करने वाले और सर्व शक्तियुक्त ऐसे श्रीमहाप्रभुजी है।।२१।।

भुवि भक्तिप्रचारैककृते स्वान्वयकृत्पिता।
स्ववंशे स्थापिताशेषस्वमाहात्म्यः स्मयापहः।।२२।।

अर्थ– पृथ्वी में केवल भक्ति का प्रचार करने के लिये अपने वंश की वृद्धि करने वाले पितारूप तथा अपने वंश में अपने समस्त माहात्म्य को स्थापन करने वाले तथा गर्व को नष्ट करने वाले ऐसे श्रीमहाप्रभुजी हैं।।२२।।

पतिव्रतापतिः पारलौकिकैहिकदानकृत्।।
निगूढहृदयोऽनन्यभक्तेषु ज्ञापिताशयः।।२३।।

अर्थ– पतिव्रता के पति और परलोक एवं इस लोक सम्बन्धी सुख देने वाले, गूढ़ हृदय वाले और अनन्य भक्तों में अपने आशय को समझने वाले श्रीमहाप्रभुजी है।।२३।।

उपासनादिमार्गातिमुग्धमोहनिवारकः।
भक्तिमार्गे सर्वमार्गवैलक्षण्यानुभूतिकृत्।।२४।।

अर्थ– उपासनादि मार्गों में अत्यन्त मुग्ध पुरुषों के मोह को मिटाने वाले भक्तिमार्ग में अन्य सब मार्ग से विलक्षणता का अनुभव कराने वाले श्रीमहाप्रभुजी हैं।।२४।।

पृथक्शरणमार्गोपदेष्टा श्रीकृष्णहार्दवित्।
प्रतिक्षणनिकुंजस्थलीलारससुपूरितः।।२५।।

अर्थ– पृथक रीति से शरणमार्ग के उपदेष्टा, श्रीकृष्ण के हृदयभाव के ज्ञाता, क्षण–प्रतिक्षण निकुंज लीला के रस से परिपूर्ण श्रीमहाप्रभुजी हैं।।२५।।

तत्कथाक्षिप्तचितस्तद्विस्मृतान्यो व्रजप्रियः।
प्रियव्रजस्थितिः पुष्टिलीलाकर्ता रहःप्रियः।।२६।।

अर्थ- उस निकुंज लीला में श्रीकृष्णचन्द्र सम्बन्धी रास लीला की कथा द्वारा चित्त को आकर्षित करने वाले उस कथा को कहने के लिये अन्य अर्थात् उस कथा के विरोधी कार्य की विस्मृति कराने वाले एवं व्रज में स्थिति करने वाले एवं पुष्टि सम्बन्धी अनुग्रहात्मक रास लीला के कर्ता एवं एकान्तिक-अनन्य भक्ति में प्रीति रखने वाले श्रीमहाप्रभुजी है।।२६।।

भक्तेच्छापूरकः सर्वाज्ञातलीलोऽतिमोहनः।
सर्वासक्तो भक्तमात्रासक्तः पतितपावनः।।२७।।

अर्थ- भक्तों की इच्छा पूरी करने वाले, अन्य समस्त पुरुषों को आपकी लीला अज्ञात है तथा अत्यन्त मोह करने वाले अन्य सब में आसक्ति रहित तथा केवल भक्तों में आसक्त एवं पतित पुरुषों को पवित्र करने वाले श्रीमहाप्रभुजी हैं।।२७।।

स्वयशोगानसंहृष्टहृदयाम्भोजविष्टरः।
यशः पीयूषलहरीप्लावितान्यरसः परः।।२८।।

अर्थ- आपश्री के यशोगान से प्रसन्न होने वाले भक्तों के हृदय कमल में विराजमान, जिन्होंने अपने यश रूपी अमृत तरंगों के द्वारा अन्य रसों को न्यून किया है तथा जो सब से श्रेष्ठ है ऐसे श्रीमहाप्रभुजी है।।२८।।

लीलामृतरसार्द्रार्द्रीकृताखिलशरीरभृत्।

गोवर्धनस्थित्युत्साहस्तल्लीलाप्रेमपूरितः।।२९।।

अर्थ– लीला रूप अमृत सम्बन्धी रसादुभाव द्वारा समस्त शरीर धारियों को सरस बनाने वाले और गोवर्द्धन गिरिराज की स्थिति में उत्साह वाले और उस भगवद् लीला में प्रेम रस द्वारा परिपूर्ण श्रीमहाप्रभुजी हैं।।२६।।

यज्ञभोक्ता यज्ञकर्ता चतुर्वर्गविशारदः।
सत्यप्रतिज्ञस्त्रिगुणातीतो नयविशारदः।।३०।।

अर्थ– यज्ञभोक्ता, यज्ञ कर्ता, तथा चतुर्वर्ग अर्थात् धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष को देने में चतुर, सत्य प्रतिज्ञा वाले, तीन गुण से रहित एवं नीति में चतुर ऐसे श्रीमहाप्रभुजी है।।३०।।

स्वकीर्तिवर्द्धनस्तत्वसूत्रभाष्यप्रदर्शकः।
मायावादाख्यतूलाग्निर्ब्रह्मवादनिरूपकः।।३१।।

अर्थ– अपनी कीर्ति की वृद्धि करने वाले और तत्व सूत्र अर्थात् व्यास सूत्र के भाष्य अर्थात् अणुभाष्य के रचयिता, मायावाद रूप तूल में अर्थात् रूई को जलाने में अग्नि समान एवं ब्रह्मवाद का निरूपण करने वाले श्रीमहाप्रभुजी हैं।।३१।।

अप्राकृताखिलाकल्पभूषितः सहजस्मितः।
त्रिलोकीभूषणं भूमिभाग्यं सहजसुन्दरः।।३२।।

अर्थ– अलौकिक संपूर्ण श्रृंगार के द्वारा संशोधित जिनका हास्य, मन्द मुस्कान सहज है। त्रैलोक्य में भूषणरूप, पृथ्वी के भाग्य रूप एवं सहज सुन्दर श्रीमहाप्रभुजी हैं।।३२।।

अशेषभक्तसंप्राथ्र्यचरणाब्जरजोधनः।

इत्यानन्दनिधेः प्रोक्तं नाम्नामष्टोत्तरं शतम्।।३३।।

अर्थ– जिनके चरण कमल के रजरूपी धन समस्त भक्तों के द्वारा संप्रार्थनीय है ऐसे आचार्य श्रीमहाप्रभुजी हैं। (यहां पर १०८ नाम संपूर्ण हो गये हैं) इस प्रकार आनन्द के समुद्ररूप श्रीमहाप्रभुजी के १०८ नाम भलि भांति कहे गये हैं।।३३।।

श्रद्धाविशुद्धबुद्धिर्यः पठत्यनुदिनं जनः।
स तदेकमनाः सिद्धिमुक्तां प्राप्नोत्यसंशयम्।।३४।।

अर्थ– श्रद्धाद्वारा जिनकी बुद्धि विशुद्ध है ऐसा जन अर्थात् आपका सेवक स्थिर मन से इस स्तोत्र का पाठ करता है वह कही हुई परम सिद्धि को प्राप्त करता है यह निश्चित है।।३४।।

तदप्राप्तौ वृथा मोक्षस्तदाप्तौतद्गतार्थता।
अतः सर्वोत्तमं स्तोत्रं जप्यं कृष्णरसार्थिभिः।।३५।।

अर्थ– आप श्री आचार्यजी की प्राप्ति के बिना मोक्ष भी वृथा है और स्वमार्ग सम्बन्धी फल प्राप्त हो जाने पर सायुज्यादि मोक्ष भी निरर्थक है। अत एव श्रीगुसांईजी आज्ञा करते हैं कि श्रीकृष्ण चन्द्ररूप परम रस की अभिलाषा रखने वाले पुरुषों को यह सर्वोत्तम स्तोत्र सर्वथा जप करने योग्य है।।३५।।

इतिश्रीमदग्निकुमारप्रोक्तं श्रीसर्वोतमस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

(इति श्रीविट्ठलेश विरचितं श्रीसर्वोत्तम स्तोत्रं सम्पूर्णम्।)

(2) श्रीवल्लभाष्टक

श्रीमद्वृन्दावनेन्दुप्रकटितरसिकानन्दसन्दोहरूप

स्फूर्जद्रासादिलीलामृतजलधिभराक्रान्तसर्वोऽपिशश्वत्।

तस्यैवात्मानुभावप्रकटनहृदयस्याज्ञयाप्रादुरासी

द्भूमौ यः सन्मनुष्याकृतिरतिकरूणस्तंप्रपद्येहुताशम्।।१।।

भावार्थ–निरन्तर श्रीवृन्दावन चन्द्र (हरि) ने जिसे प्रकट किया है ऐसा जो रसिकों के लिये आनन्द का समूह रूप सुन्दररास आदि लीलाओं का अमृत समुद्र उसके प्रवाह से सबको जिनने आप्लावित (मग्न) कर दिया है। उन्हीं भगवान् को जब अपने प्रभावकों को प्रकट करने की मन में आयी तब उनकी ही आज्ञा से भूमि के उपर जो अच्छे मनुष्य की आकृति में प्रकट हुए अत्यन्त दयालु अग्निरूप (श्रीवल्लभाचार्य चरण) की शरण ग्रहण करता हूँ।

नाऽऽविर्भूयाद्भवांश्चेदधिधरणितलं भूतनाथोदिताऽस

न्मार्गध्वान्तान्धतुल्या निगमपथगतौ दैवसर्गेऽपिजाताः।

घोषाधीशं तदेमे कथमपि मनुजाः प्राप्नुयुर्नैव दैवी

सृष्टिर्व्यर्था च भूयान्निजफलरहिता देव वैश्वानरैषा।।२।।

भावार्थ–हे देव अग्निस्वरूप आप यदि पृथ्वी तल पर प्रकट नहीं होते तो वेदोक्तमार्ग की गति में दैव सृष्टि में उत्पन्न होने वाले मनुष्य भी महादेवजी के कहे हुए असत् मार्ग के अंधकार में अंधे की तरह किसी तरह घोषाधीश (श्रीकृष्ण) को प्राप्त नहीं कर सकते जिससे अपना जो साक्षात् प्रभु प्राप्ति रूप फल से वंचित रह जाते और यह दैव सृष्टि भी व्यर्थ हो जाती।

नह्यन्यो वागधीशाच्छ्रुतिगणवचसां भावमाज्ञातुमीष्टे
यस्मात्साध्वी स्वभावं प्रकटतिव धूरग्रतः पत्युरेव।
तस्माच्छ्रीवल्लभाख्यत्वदुदितवचनादन्यथा रूपयन्ति
भ्रान्ता ये ते निसर्ग त्रिदशरिपुतया केवलान्धंतमोगाः।।३।।

भावार्थ– वाणी के पति के अलावा दूसरा कोई भी श्रुतिगणों के वचन के भाव को जानने में समर्थ नहीं होता है, कारण यह है कि पतिव्रता स्त्री अपने पति के संमुख ही अपने अभिप्राय को प्रकट करती है अतः हे श्री वल्लभाचार्य जो लोग आपके वचनों के विरूद्ध जो वेदार्थ का निरूपण करते हैं वे स्वभाव से ही आसुर प्रकृति के होने से भ्रांत है उनके लिये तो अंधतम की प्राप्ति ही फल है।

प्रादुर्भूतेन भूमौ व्रजपतिचरणांभोजसेवाख्यवर्त्म
प्राकट्यं यत्कृतं ते तदुत निजकृते श्रीहुताशेति मन्ये।
यस्मादस्मिन्स्थितो यत्किमपि कथमपिक्काप्युपाहर्तुमिच्छ
त्याद्धातद्गोपीकेशः स्ववदनकमले चारूहासे करोति।।४।।

भावार्थ–भूतल पर प्रकट होकर आपने श्रीहरि के चरण कमल की सेवा करने का मार्ग जो प्रकट किया है वह निश्चय ही अपने भक्तों के लिये ही प्रकट किया है, हे अग्नि स्वरूप यह मैं मानता हूँ कारण कि इस मार्ग स्थित भक्तको कोई भी वस्तु किसी भी तरह से कहीं भी रहकर अर्पण करना चाहे तो उस वस्तु को श्रीगोपीजन वल्लभ अपने सुन्दर हास वाले मुख कमल में धारण करते हैं।

उष्णत्वैकस्वभावोऽप्यतिशिशिरवचःपुंजपीयूषवृष्टी
रार्तेष्वत्युग्रमोहासुरनृषु युगपत्तापमप्यत्र कुर्वन्।
स्वस्मिन्कृष्णास्यतां त्वं प्रकटयसि च नो भूतदेवत्वमेत
द्यस्मादानददं श्रीव्रजजननिचये नाशकं चासुराग्नेः।।५।।

भावार्थ–उष्णत्व का स्वभाव है, ऐसे भी जिनका दीनों पर शीतलवचन रूप अमृत वृष्टि को और बड़े मोह वाले असुरों पर एक साथ ही ताप भी आप करते हैं, अपने में श्रीकृष्णास्यपने को प्रकट करते हों, किंतु अग्निपन प्रकट नहीं करते हो, कारण कि यह आपका स्वरुप व्रजजन समूह में तो आनंद देता है और आसुराग्नि का नाश करता है।

आम्नायोक्तंयदंभोभवनमनलतस्तच्च सत्यं विभो य
त्सर्गादौ भूतरूपादभवदनलतः पुष्करं भूतरूपम्।
आनंदैकस्वरूपात्त्वदधिभु यदभूत्कृष्णसेवारसाब्धि
श्चानंदैकस्वरूपस्तदखिलमुचितं हेतुसाम्यं हि कार्ये।।६।।

भावार्थ–वेद में कहा कि जो अग्नि से जल का होना सत्य है, हे प्रभो सृष्टि के आदि में जैसे भूतस्वरूप अग्नि भूतस्वरूप जल हुआ वैसे इस भूतलपर आनंद स्वरूप आप से यह श्रीकृष्ण से उस रुप रस समुद्र भी आनंद स्वरूप ही हुआ है, और यह उचित भी है, कारण कि कार्य में कारण का सादृश्य आता है।

स्वामिन्छ्रीवल्लभाग्ने! क्षणमपि भवतः सन्निधाने कृपातः
प्राणप्रेष्ठव्रजाधीश्वरवदनदिदृक्षार्तितापो जनेषु।

यत्प्रादुर्भावमाप्नोत्युचिततरमिदं यत्तु पश्चादपीत्थं
दृष्टेऽप्यस्मिन्मुखेन्दौ प्रचुरतरमुदेत्येव तच्चित्रमेतत्।।७।।

भावार्थ–स्वामिन् अग्निस्वरुप आचार्यवर्य! आपके क्षणभर सन्निधान से, कृपा करके भक्तों के प्राणों से प्रिय श्रीहरि के मुखकमल को देखने की इच्छा का ताप होता है वह उचित है परन्तु पीछे श्रीहरि के मुखकमल को देखकर भी विशेष ताप होता है, यह अति आश्चर्य है। प्रथम औत्सुक्य का ताप और पीछे विरह से ताप, इस तरह विरोध का परिहार समझना।

अज्ञानाद्यंधकारप्रशमनपटुताख्यापनाय त्रिलोक्या
मग्नित्वं वर्णितं ते कविभिरपि सदा वस्तुतः कृष्ण एव।
प्रादुर्भूतो भवानित्यनुभव निगमाद्युक्तमानैरवेत्य
त्वां श्रीश्रीवल्लभ मे निखिलबुधजना गोकुलेशं भजन्ते।।८।।

भावार्थ–इस भूतलपर पंडितो ने आपकी अग्निपना केवल अज्ञान रूप अंधकार के दूर करने का चातुर्य प्रकट करने के लिये ही कहा है, वास्तव में तो आप श्रीकृष्ण ही प्रकट हुए हो ऐसे अनुभव और शास्त्रादि के प्रमाण से जानकर, हे श्रीवल्लभाचार्य!सर्व विद्वान् आपको गोकुलेश जानकर ही भजते हैं।

।।श्रीवल्लभाष्टक संपूर्ण।।

(3) यमुनाष्टक

जयन्ती वल्लभाचार्यनखचन्द्रमरीचयः।

यानन्तरा मादृशानां विस्पष्टार्था न तद्गिरः।।१।।

इस श्रीयमुनाष्टक के अर्थ ज्ञान पूर्वक पाठ करने से भजनानंद की सिद्धि होगी इस आशय से श्रीमद्वल्लभाचार्य आठ श्लोकों के द्वारा श्री यमुना जी के स्वरूप का वर्णन करते हैं।

नमामि यमुनामहं सकल सिद्धि हेतुं मुदा

मुरारिपदपंकजस्फुरदमन्दरेणूत्कटाम्।

तटस्थनवकाननप्रकटमोदपुष्पाम्बुना

सुरासुरसुपूजितस्मरपितुः श्रियं बिभ्रतीम्।।२।।

भावार्थ : समस्त अलौकिक सिद्धियों को देने वाली मुरदैत्य के शत्रु भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र के चरण कमल की तेजस्वी और अधिक अर्थात् जल से विशेष रेणु को धारण करने वाली अपने तट पर स्थित नवीन वन के विकसित सुगन्धित पुष्प मिश्रित जल द्वारा सुरअर्थात् दैत्य भाव वाले व्रजभक्तों के द्वारा असुर अर्थात् मानभाव वाले व्रजभक्तों द्वारा अच्छी प्रकार से पूजित तथा श्री कृष्णचन्द्र की शोभा को धारण करने वाली श्रीयमुना महाराणीजी को मैं (श्रीवल्लभाचार्य) सहर्ष नमस्कार करता हूँ।

कलिन्दगिरिमस्तकके पतदमन्दपूरोज्जवला

विलासगमनोल्लसत्प्रकटगण्डशैलोन्नता।

सघोषगतिदन्तुरासमधिरूढदोलोत्तमा

मुकुन्दरतिवर्द्धिनी जयति पद्मबन्धोः सुता।।२।।

भावार्थ : सूर्य मंडल में स्थित प्रभु के हृदय से रसरुप प्रकट होकर फिर कलिन्द पर्वत के शिखर पर गिरते हुए उत्पन्न प्रवाहों से उज्जवल, विलास सहित चलने से सुन्दर और उत्तम शिलाओं से उन्नत तथा ध्वनिसहित गमन से ऊँची नीची होती अर्थात् उत्तम झूले में विराजित हुई सी, दीखती एवं श्रीकृष्णचन्द्र में प्रीति बढ़ानेवाली सूर्य पुत्री श्रीयमुना महारानीजी श्रेष्ठता से विराजमान है। श्री यमुनाजी की जय हो।

भुवं भुवनपावनीमधिगतामनेकरस्वनैः

प्रियाभिरिव सेवितांशुकमयूरहंसादिभिः।

तरंगभुजकंकणप्रकटमुक्तिकावालुका

नितम्बतटसुन्दरीं नमत कृष्णतुर्यप्रियाम्।।३।।

भावार्थ : संपूर्ण लोगों को पवित्र करने वाली भूमण्डल में पधारने पर जैसे प्रिय सखियों द्वारा सेवित होती हो वैसे ही अनेक शब्द बोलते हुए शुक, मयूर और हंसादि मीठे शब्द बोलने वाले पक्षियों के द्वारा सुसेवित हुई और तरंगरूपी भुजाओं के कंकणों में स्पष्ट दिखाई पड़ने वाली मोतियों के समान चमकने वाली बालुका युक्त एवं नितम्ब भाग रूप उभय तटों से सुन्दर दिखने वाली श्रीकृष्ण की चतुर्थ प्रिया श्रीयमुनाजी को तुम नमन करो

अनंतगुणभूषिते शिवविरंचिदेवस्तुते

घनाघननिभे सदा ध्रुवपराशराभीष्टदे।

विशुद्धमथुरातटे सकलगोपगोपीवृते

कृपाजलधिसंश्रिते मम मनः सुखं भावय।।४।।

भावार्थ : अनंत गुणों से भूषित और शिवब्रह्मा आदि देवताओं से स्तुति की गई और सघन मेघ सदृश कांतिवाली और ध्रुवपराशर आदि ऋषियों को सकल मनोरथ को देनेवाली और भगवल्लीलाधाम मथुराजी जिसके तट पर है और समग्र गोप गोपांगनाओं से शोभित और अनुग्रह के समुद्र श्रीकृष्ण के आश्रय में रहने वाली है, श्रीयमुनाजी आप मेरे मन के आनंद का विचार करो, अर्थात् जैसे मेरे मन को सुख हो वैसे करो। यह श्लोक श्री यमुना जी और श्रीकृष्ण में समानता बताने वाला है। इसलिये यह सब विशेषण श्रीकृष्ण में भी लगते हैं। उस पक्ष में यह अर्थ करना कि हे श्री यमुनाजी! ऐसे श्रीकृष्ण भगवान् में मेरे मन की प्रीति को कराओ।

यया चरणपद्मजा मुररिपोः प्रियंभावुका

समागमनतोऽ भवत्सकलसिद्धिदा सेवताम्।

तया सदृशतामियात्कमलजा सपत्नीव यत्

हरिप्रियकलिन्दया मनसि मे सदा स्थीयताम्।।५।।

भावार्थ- जिन श्री यमुनाजी के संग मिलने से गंगाजी भगवान् के प्रिय करने वाली हुई और अपने सेवकों को समग्र सिद्धि देने वाली हुई उन श्रीयमुनाजी के सौत की तरह समान भाव को कौन प्राप्त हो, यदि हो तो श्री लक्ष्मीजी ही प्राप्त हो ऐसे भगवान् को अतिप्रिय श्रीयमुनाजी मेरे हृदय में सदा निवास करो।

नमोऽस्तु यमुने सदा तव चरित्रमत्यद्भुतं

न जातु यमयातना भवति ते पयःपानतः।
यमोपि भगिनीसुतान्कथमुहंति दुष्टानपि
प्रियो भवति सेवनात्तव हरेर्यथा गोपिकाः।।६।।

भावार्थ–हे श्री यमुनाजी आपको सदा नमस्कार हो, आपके चरित्र बहुत आश्चर्य करने वाले हैं, आपके जल के पान करने से कभी यम संबंधी पीड़ा नहीं होती है, यमराज भी दुष्ट ऐसे भी अपनी बहिन के पुत्र को कैसे मारें, आपकी सेवा करने से श्री गोपीजनों की तरह (जीव भी) श्री हरि को प्रिय होते हैं।

ममाऽस्तु तव सन्निधौ तनुनवत्वमेतावता
न दुर्लभतमा रतिर्मुररिपौ मुकुन्दप्रिये।
अतोऽस्तु तव लालना सुरधुनी परं संगमा
त्तवैव भुवि कीर्तिता न तु कदापि पुष्टिस्थितैः।।७।।

भावार्थ – हे हरिप्रिय यमुनाजी आपके निकट में मेरा शरीर दिव्य नवीन हो जाय, अर्थात् लीला में प्रवेश करने योग्य अलौकिक हो जाय, इतने से ही मुर दैत्य के मारने वाले श्रीकृष्ण में प्रीतिहोना अति दुर्लभ नहीं है, उस कारण से आपकी (स्तुति रूप) स्तुति रूप लालना हो, श्री गंगाजी आपके ही समागम से भूतल में स्तुति की गई है, किन्तु पुष्टि स्थित जीवों ने इस विषय में आपके अलावा उनकी स्तुति नहीं की है, क्योंकि उनसे मुक्ति मिलती है परन्तु लीलोपयोगी देह नहीं मिलता है।

स्तुतिं तव करोति कः कमलजासपत्नि! प्रिये!
हरेर्यदनु सेवया भवति सौख्यमामोक्षतः।

इयं तव कथाऽधिका सकलगोपिकासंगम

स्मरश्रमजलाणुभिः सकलगात्रजैः संगमः।।८।।

भावार्थ–लक्ष्मी की सपत्नि (सौत) और हरि को प्रिय हे श्री यमुनाजी! आपकी स्तुति कौन कर सकता है, कारण कि जो श्रीहरि को पीछे लक्ष्मी की भी सेवा करे, तब उसको मोक्ष पर्यन्त का सुख प्राप्त होता है, परन्तु आपकी कथा तो इतनी अधिक है कि सर्व अंग से उत्पन्न हुए जो सकल गोपीजन से श्री प्रभु की लीला, उनके संबन्धी जो प्रस्वेद जल उनके बिन्दुओं से आपका संगम होता है।

तवाष्टकमिद मुदा पठति सूरसूते सदा

समस्तदुरतिक्षयो भवति वै मुकुन्दे रतिः।

तथा सकल सिद्धयो मुररिपुश्च संतुष्यति

स्वभावविजयो भवेद्वदति वल्लभः श्रीहरेः।।९।।

भावार्थ–हे सूर्य की पुत्री श्रीयमुनाजी आपके यमुनाष्टक का जो कोई सदा हर्ष से पाठ करेगा उसके समग्र पापों का नाश होगा और निश्चय ही श्री हरि में प्रीति होगी तथा श्री हरि प्रसन्न होंगे और यदि स्वभाव दुष्ट हो तो भगवद्भक्तिकरने योग्य स्वभाव हो जाता है, ऐसे श्री हरि के प्रिय श्री वल्लभाचार्य कहते हैं।

।।श्री यमुनाष्टक संपूर्ण।।

(4) सिद्धान्त रहस्य

श्रावणस्याऽमले पक्षे एकादश्यांमहानिशि।

साक्षाद्भगवता प्रोक्तं तदक्षरश उच्यते।।१।।

भावार्थ-श्रावण के शुक्लपक्ष में और एकादशी की अर्धरात्रि में श्री पुरुषोत्तम भगवान् ने जो प्रत्यक्ष कहा वह अक्षर अक्षर मैं कहता हूं।

ब्रह्मसंबन्धकरणात् सर्वेषां देहजीवयोः।

सर्वदोषनिवृत्तिर्हि दोषाः पंचविधाः स्मृताः।।२।।

भावार्थ-आत्मा सहित निज सर्व पदार्थों को भगवान् के लिये निवेदन करने से सब जीवों के देह और लिंग शरीर युक्तजीव संबंधी सब दोषों की निवृत्ति होती है, अर्थात् वे स्वरुप से रहते भी हैं तब भी सेवा में प्रतिबंध नहीं करते हैं, वे दोष पांच प्रकार के हैं।

सहजा देशकालोत्था लोकवेदनिरूपिताः।

संयोगजाः स्पर्शजाश्च न मंतव्याः कथंचन।।३।।

भावार्थ-लोक और वेद में कहे, अहंता ममतादिरूप सहज, अंग बंगादि दुर्देश में जन्मादि होने से देशोत्थ कलियुग दुर्मुहूर्तादि में जन्म होने से कालोत्थ, मन के संयोग से हुए मानसिक दुष्क्रिया रुप संयोगज तथा स्पर्शजदोष, निवेदन के अनंतर सेवा में प्रतिबंधक कभी नहीं मानने चाहिये।

अन्यथा सर्वदोषाणां न निवृत्तिः कथंचन।

असमर्पितवस्तूनां तस्माद्वर्जनमाचरेत्।।४।।

भावार्थ–भगवन्निवेदन किये बिना पूर्वोक्त दोषों की निवृत्ति किसी तरह से भी नहीं होती है, इसलिये दोष निवृत्ति होने के लिए भगवान् के अनिवेदित पदार्थों को अपने उपयोग में नहीं लें।

निवेदिभिः समर्प्यैवसर्वं कुर्यादिति स्थितिः।

न मतं देवदेवस्य सामिभुक्तं समर्पणम्।।५।।

तस्मादादो सर्वकार्ये सर्ववस्तु समर्पणम्

भावार्थ–भगवद् भक्त समर्पण करके निवेदित पदार्थ से ही सब कार्य करे, यह पुष्टिमार्ग की मर्यादा है, देव देव श्रीभगवान् को अर्धभुक्त समर्पण संमत नहीं है, इसलिये सर्वकार्य आदि में समग्र वस्तु को ही श्री हरि को अर्पण करे। (अर्द्धभुक्त का नहीं)

दत्ताऽपहारवचनं तथा च सकलं हरेः।।६।।

न ग्राह्यमिति वाक्यं हि भिन्नमार्गपरं मतम्।

और वैसे ही भगवान् की निवेदित वस्तु अपने उपयोग में नहीं लानी चाहिये, इत्यादि जो 'अपि दीपावलोकं मेनोपयुंज्यं निवेदितं' एकादश के वाक्य हैं वे वाक्य भक्ति मार्ग से पृथक् मार्ग के लिये है।

सेवकानां यथा लोके व्यवहारः प्रसिद्धयति।।७।।

तथा कार्ये समर्प्यैव सर्वेषां ब्रह्मता ततः।

गंगात्वं सर्वदोषाणां गुणदोषादिवर्णना।।८।।

गंगात्वेन निरूप्या स्यात्तद्वदत्रापि चैव हि।

भावार्थ–जैसे लोक में सब कार्य स्वामी को निवेदन करके ही करना चाहिये। यह सेवकों का व्यवहार प्रसिद्ध है वैसे ही हरिभक्तों को भी लौकिक वैदिक सभी कार्य श्री हरि को निवेदन करके ही करना

चाहिये। ऐसे ही करने से कितनेक काल में सभी का निर्दोषपना और समभाव प्राप्त होता है, जैसे अन्यत्र बहते जल की मलिनता अपवित्रता आदि दोषों को गंगा में मिलने से गंगापना प्राप्त होता है और उनकी गुण दोषादि की कथा, जैसे गंगा रूप से वर्णन की जाती है ऐसे ही आत्मनिवेदन रूप शरणागति के अनन्तर जीव के गुण दोषादि ब्रह्म में मिलने से ब्रह्मरूप हो जाते हैं।

।।श्री वल्लभाचार्य विरचित सिद्धान्त रहस्य संपूर्ण।।

(5) नवरत्न

चिन्ता काऽपि न कार्या निवेदितात्मभिःकदाऽपीति।
भगवानपि पुष्टिस्थो न करिष्यति लौकिकीं च गतिम्।।१।।

भावार्थ–जिनने आत्मा सहित सर्व आत्मीय वस्तुओं को भगवान् के अर्पण किया है, उन्हें कभी भी किसी तरह की चिन्ता नहीं करनी चाहिये, क्योंकि भगवान् भी अनुग्रह में स्थित है इसलिये अन्य प्रवाहादि लोक की सी गति नहीं करेंगे।

निवेदनं तु स्मर्तव्यं सर्वथा तादृशैर्जनैः।
सर्वेश्वरश्च सर्वात्मा निजेच्छातः करिष्यति।।२।।

भावार्थ–उत्तम सेवा तत्पर भक्तों के साथ निवेदन का स्मरण तो अवश्य करना, सर्वेश्वर और सभी के आत्मा स्वरूप भगवान् अपनी इच्छा से अथवा अपने स्वीकृत भक्तों की इच्छा से अपने भक्तों के लौकिक वैदिक सब कार्यों को सिद्ध करेंगे।

सर्वेषां प्रभु संबंधो न प्रत्येकमिति स्थितिः।

अतोऽन्यविनियोगेऽपि चिन्ता का स्वस्य सोऽपिचेत्।।३।।

भावार्थ–आत्मा सहित आत्मीय समग्र पदार्थों का संबंध तथा श्री हरि का संबंध समान ही है। पृथक्–पृथक् नहीं है, इसलिये आत्मीय वस्तुओं का अपने और अपना आत्मीय वस्तुओं में विनियोग हो तब भी क्या चिन्ता करना अर्थात् किसी तरह की चिन्ता नहीं है।

अज्ञानादथवा ज्ञानात्कृतमात्मनिवेदनम्।

यैः कृष्णसात्कृतप्राणैस्तेषां का परिदेवना।।४।।

भावार्थ–श्रीहरि के अधीन किये हैं प्राण जिन्होंने ऐसे जिन भक्तों ने आत्मनिवेदन किया है उनको कौनसी चिंता है अर्थात् उन्हें किसी तरह की चिन्ता नहीं है।

तथा निवेदने चिन्ता त्याज्या श्रीपुरुषोत्तमे।

विनियोगेऽपि सा त्याज्या समर्थोहि हरिः स्वतः ।।५।।

भावार्थ–मेरा निवेदन श्री हरि ने स्वीकार किया है अथवा नहीं, ऐसे श्री पुरुषोत्तम में भी चिंता का परित्याग करना तथा कदाचित् लौकिक कार्यादिक में दूसरे का आश्रय ले तो अन्य का विनियोग हो, तब भी चिंता का त्याग करना क्यों कि श्री हरि जीव के साधन की अपेक्षा नहीं रखकर स्वयं समर्थ है।

लोके स्वास्थ्यं तथा वेदे हरिस्तु न करिष्यति।

पुष्टिमार्गस्थितो यस्मात्साक्षिणोभवताऽखिलाः।।६।।

भावार्थ–पुष्टिमार्ग अर्थात् अनुग्रह मार्ग में स्थित है इस कारण श्री हरि लोक और वेद में आसक्ति नहीं करायेंगे, इसलिये लोक वेद के कार्य साक्षिमान रहकर करने चाहिये।

सेवाकृतिर्गुरोराज्ञाऽबाधनं वा हरीच्छया।

अतः सेवापरं चित्तं विधाय स्थीयतां सुखम्।।७।।

भावार्थ–गुरु की आज्ञानुसार सेवा करना अथवा सामग्री आदि के विषय में जो प्रभु की विशेष में इच्छा हो तो प्रभु इच्छानुसार ही करना, ऐसे गुरु की आज्ञा के अबाध मे वा बाध में प्रभु सेवा में चित्त को तत्पर करके सुख से रहना।

चित्तोद्वेगं विधायाऽपि हरिर्यद्यत्करिष्यति।

तथैव तस्य लीलेतिमत्वा चिन्तां द्रुतं त्यजेत्।।८।।

भावार्थ–मन में उद्वेग करके भी श्री हरि जो जो करते हैं वह वह सभी उनकी वैसी ही लीला (क्रीड़ा) है। यह मान कर चिन्ता का शीघ्र परित्याग करना।

तस्मात्सर्वात्मना नित्यं श्रीकृष्णः शरणं मम।

वदद्भिरेव सततं स्थेयमित्येव मे मतिः।।९।।

भावार्थ–इसलिये सब तरह से सर्वदा मेरे श्रीकृष्ण ही रक्षा करने वालें हैं ऐसे सदा कहते ही रहना यही मेरी मति है।

।।श्री नवरत्न संपूर्ण।।

(6) विवेक धैर्याश्रय

विवेकधैर्ये सततं रक्षणीये तथाश्रयः।

विवेकस्तु 'हरिः सर्वं निजेच्छातः करिष्यति'।।१।।

भावार्थ–विवेक और धैर्य सदा रखना तथा आश्रय भी रखना और श्रीहरि अपनी इच्छा से ही अथवा अपने भक्तों की इच्छा से ही सर्व करेंगे। इसका नाम विवेक है।

प्रार्थिते वा ततः किं स्यात् स्वाम्यभिप्रायसंशयात्।

सर्वत्र तस्य सर्वं हि सर्वसामर्थ्यमेव च।।२।।

भावार्थ–प्रभु को हमारी इच्छित वस्तु देने की इच्छा है या नहीं। ऐसा संदेह होने से जो प्रार्थना भी की जाय तो क्या हो, अर्थात् कुछ फल नहीं होता है, इसलिये श्रीहरि को सर्वत्र सर्ववस्तु लभ्य है और सर्व वस्तु देने की सामर्थ्य भी है ही। इस प्रकार मन में दृढता रखकर सेवा करना

अभिमानश्च संत्याज्यः स्वाम्यधीनत्व भावनात्।

विशेषतश्चेदाज्ञा स्यादंतःकरणगोचरः।।३।।

तदा विशेषगत्यादि भाव्यं भिन्नं तु दैहिकात्।

भावार्थ–मैं स्वामी के अधीन हूँ। ऐसी भावना से अभिमान का भी वासना सहित परित्याग करना श्री हरि सब भक्तों के अंतकरण में विराजते हैं, इसलिये यदि सेवा के विषय में स्वप्नादि द्वारा कुछ विशेष आज्ञा हो तो लौकिक कार्य के अलावा सेवा सामग्री आदि प्रभु की आज्ञा के अनुसार करनी चाहिये।

आपद्गत्यादिकार्येषु हठस्त्याज्यश्च सर्वथा।।४।।

अनाग्रहश्च सर्वत्र धर्माधर्माग्रदर्शनम्।।

विवेकोऽयं समाख्यातो धैर्यं तु विनिरूप्पते।।५।।

भावार्थ–और धन के संकोच की अवस्था में जो सेवा के बड़े कार्य आये उनमें कर्ज करके भी यह करूंगा। ऐसा हठ नहीं करना और सेवाका परित्याग करके भी हवनादि कार्य करूंगा ऐसा भी आग्रह नहीं करना किन्तु सेवा के अनवसर में वे कार्य करने तथा श्रुत्युक्त स्मृत्युक्त और भगवद धर्म के बलाबल का विचार अपने अधिकानुसार कार्य करना चाहिये।

त्रिदुःखसहनं धैर्यमामृतेः सर्वतः सदा।

तक्रवद्देहवद्भाव्यं जडवद्गोपभार्यवत्।।६।।

भावार्थ– 'मरण पर्यन्त सब तरह से और सब समय में आधिभौतिक आध्यात्मिक आधिदैविक (परीक्षा के लिये भगवद्दत्त) तीनों तरह के दुःखों को सहन करना। धैर्य कहा जाता है। देहाध्यास का परित्याग करने के लिये छाछ की तरह विचार करना अर्थात् जैसे घी निकालने के पीछे कोई भी छाछ में मोह नही रखते हैं ऐसे देह में मोह नहीं करना आध्यात्मिक दुःख सहन करते समय जड भरत के धैर्य का विचार करना और भगवान् ने परीक्षार्थ दिये हुए दुःखों को भोग समय में गोपस्त्री की तरह दुःख सहन करना। अथवा अंतर्गृहगत गोपियों की तरह भगवद् विरह सहन करना।

प्रतीकारो यदृच्छातः सिद्धश्चेन्नाग्रही भवेत्।

भार्यादीनां तथाऽन्येषामसतश्चाक्रमं सहेत्।।७।।

भावार्थ–भगवदिच्छा से जो दुःखों का उपाय हो जाय तो दुःख सहन करने में आग्रह नहीं करना और स्त्री पुत्रादि, बन्धुवर्ग तथा और सेवकादिकों से किये अपमान को भी सेवा निर्वाह के लिये सहन करे।

स्वयमिन्द्रियकार्याणि कायवांगनसा त्यजेत्।

अशूरेणाऽपि कर्त्तव्यं स्वस्यासामर्थ्यभावनात्।।८।।

भावार्थ–अपने भोगने के लिये सर्व विषयों का शरीर वाणी मन से परित्याग करे और इन्द्रियों का दमन करे मेरी शक्तिसे बाहर है ऐसे विचार से असमर्थ हुए पुरुष को भी इन्द्रियों का दमन करना चाहिये।

अशक्ये हरिरेवास्ति सर्वमाश्रयतो भवेत्।

एतत्सहनमत्रोक्तमाश्रयोऽतो निरूप्यते।।९।।

भावार्थ–अपने से नहीं बन सके ऐसे कार्य में श्री हरि ही रक्षक हैं, क्योंकि प्रभु के दृढ आश्रय से सर्वकार्य की सिद्धि होती है, यहां यह त्रिदुःख सहन रूप धैर्य का निरूपण किया है, अब आगे आश्रय का निरूपण करते हैं।

ऐहिके पारलोके च सर्वथा शरणं हरिः।

दुःखहानौ तथा पापे भये कामाद्यपूरणे।।१०।।

भक्तद्रोहे भक्त्यभावे भक्तैश्चापि क्रमे कृते।

अशक्ये वा सुशक्ये वा सर्वत्र शरणं हरिः।।११।।

भावार्थ–इस लोक संबंधी और परलोक संबंधी कार्य में तीन प्रकार के दुःखों की निवृत्ति होने से अज्ञान से बनते पापों के विषय

में और राज चौर नरकादि के भय में तथा मनोरथ की अप्राप्ति में सब तरह से भक्त के दुःख दूर करने वाले श्री हरि ही रक्षा करने वाले हैं तथा भक्तों के द्रोह होने में, भक्तिके अभाव में और भक्तों ने अपना तिरस्कार (अपमान) किया हो उस समय में भी किंवा अपने से न बनते कार्य में अथवा भली प्रकार बन सकते हों ऐसे कार्य में सर्वसमय में श्री हरि ही रक्षा करने वाले हैं।

अहंकारकृते चैव पोष्यपोषणरक्षणे।

पोष्यातिक्रमणे चैव तथांऽतेवास्यतिक्रमे।।१२।।

अलौकिकमनः सिद्धौ सर्वार्थ शरणं हरिः।

एवं चित्ते सदा भाव्यं वाचा च परिकीर्तयेत्।।१३।।

भावार्थ–स्वभाव के वश होकर किसी समय यदि अहंकार किया हो उसमें और भी पालन करने योग्य अपने सभी पुत्रादि की रक्षा करने में और स्त्री पुत्रादिकों ने अपना अपराध किया हो, उस समय में तथा शिष्यादिकों से कुछ भूल हो गई हो उस समय में और अलौकिक देहेन्द्रियादिक की प्राप्ति में विशेष कहा गया मनोरथ मात्र की सिद्धि में श्रीहरि मेरे रक्षक हैं। ऐसे सदा हृदय में विचारते रहना और मुख से भी कहते रहना चाहिये।

अन्यस्य भजनं तत्र स्वतोगमनमेव च।

प्रार्थना कार्यमात्रेऽपिततोऽन्यत्र विवर्जयेत्।।१४।।

भावार्थ–अन्यदेवों का भजन, वैसे ही अपने आप अथवा कहने से उनके शरण जाना और किसी भी कार्य में प्रभु से अथवा अन्य देवों से प्रार्थना करना इन सब बातों का परित्याग करना।

अविश्वासो न कर्त्तव्यः सर्वथा बाधकरस्तु सः।

ब्रह्मास्त्रचातकौ भाव्यौ प्राप्तं सेवेत निर्मम।।१५।।

भावार्थ–प्रभु में अथवा शरण जाने में अविश्वास तो कभी नहीं करना, क्योंकि अविश्वास (अन्वय व्यतिरेक से)हानिकारक ही है। ब्रह्मास्त्र और पपीहा पक्षी का विचार करना अर्थात् जो अविश्वास करे तो जैसे राक्षस ने हनुमानजी को प्रथम ब्रह्मास्त्र से बांधा फिर उसके ऊपर अविश्वास करके और रस्सी आदि से बांधा तब ब्रह्मास्त्र ने हनुमानजी को छोड़ दिया और राक्षसों को लंका दहनादि अनेक दुःख उठाने पड़े अथवा जैसे चातक मेघ पर विश्वास रखता है तो उसके अविश्वास नहीं करने से स्वातिभी वर्षा द्वारा उसको सुख देते हैं। ऐसे ही प्रभु में अविश्वास सब प्रकार से हानिकारक है। इसलिये थोड़ा या अधिक प्राप्त हो उसमें सेवा करे।

यथाकथंचित्कार्याणि कुर्यादुच्चावचान्यपि।

किं वा प्रोक्तेन बहुना शरणं भावयेद्धरिम्।।१६।।

भावार्थ–लौकिक वैदिक सभी प्रकार के कार्यों को भी जैसे बने वैसे करें, बहुत क्या कहें केवल 'श्रीहरि मेरे रक्षक हैं ऐसा विचार करें।

एवमाश्रयणं प्रोक्तं सर्वेषां सर्वदा हितम्।

कलौ भक्त्यादिमार्गा हि दुस्साध्या इति मे मतिः।।१७।।

भावार्थ–इस प्रकार सदा सभी का हित करने वाले भगवान् का आश्रय कहा है, कारण कि कलियुग में चार भेद वाले भक्तिमार्ग कठिनाई से सिद्ध होते हैं, यह मेरी बुद्धि है।

।।विवेक धैर्याश्रय संपूर्ण।।

(7) कृष्णाश्रय

सर्वमार्गेषु नष्टेषु कलौ च खलधर्मिणि।

पाषंडप्रचुरे लोके कृष्ण एव गतिर्मम।।१।।

भावार्थ–दुष्ट धर्म वाले या कलियुग में वेदाक्त सबमार्ग लुप्त हो गये हैं, और लोक भी अति पाखंडी हो गये हैं, इसलिये अब मेरे श्रीहरि ही रक्षा करने वाले हैं।

म्लेच्छाक्रान्तेषु देशेषु पापैकनिलयेषु च।

सत्पीड़ाव्यग्रलोकेषु कृष्ण एव गतिर्मम।।२।।

भावार्थ–पापमात्र के रहने के प्रधान घर और सत्पुरुषों की पीड़ा से दुःखित हुए हैं लोक जिनके ऐसे देश, म्लेच्छों ने दबा लिये है इस कारण श्री कृष्ण ही मेरी रक्षा करने वाले हैं।

गंगादितीर्थवर्येषु दुष्टैरेवावृतेष्विह।

तिरोहिताधि दैवेषु कृष्ण एव गतिर्मम।।३।।

भावार्थ–इस कलिकाल में दुष्टजनों से आक्रान्त, गंगादि मुख्य तीर्थों के अधिष्ठाता देवता तिरोहित हो छिप गये हैं, अतएव उनसे यथार्थ फल की प्राप्ति नहीं होती है, इसलिये श्रीकृष्ण ही मेरे रक्षक हैं।

अहंकारविमुढेषु सत्सु पापानुवर्तिषु।

लाभपूजार्थयत्नेषु कृष्ण एव गतिर्मम।।४।।

भावार्थ–अहंकार करके भ्रांत और लाभ तथा मान के लिये

विशेष यत्न करने वाले सत्पुरुष भी जब पाप का आचरण करने लग गये तो मेरे श्रीकृष्ण रक्षक हैं।

अपरिज्ञाननष्टेषु मंत्रेष्वव्रतयोगिषु।

तिरोहिताधिदैवेषु कृष्ण एव गतिर्मम।।५।।

भावार्थ–स्वरुप ज्ञान नहीं होने से और ब्रह्मचर्यादि तपरहित पुरुषों के पास आने से मंत्र भी जब आधिदैविक शक्ति से रहित हो गये हैं इसी स्थिति में मेरे रक्षक श्रीकृष्ण ही है।

नानावादविनष्टेषु सर्वकर्मव्रतादिषु।

पाषंडैकप्रयत्नेषु कृष्ण एव गतिर्मम।।६।।

भावार्थ–शास्त्र विरुद्ध अनेक प्रकार के विवादों से संपूर्ण वेदोक्त कर्म व्रत आदि का नाश हो गया है और लोग केवल पाखंड दिखाने के लिये ही प्रयत्न करते हैं, इसलिये श्रीकृष्ण ही मेरे रक्षक हैं।

अजामिलादिदोषाणां नाशकोऽनुभवे स्थितः।

ज्ञापिताऽखिल माहात्म्यः कृष्ण एव गतिर्मम।।७।।

भावार्थ–अजामिल आदि जीवों के भी दोषों को दूर करने वाले और उसी से सर्व निज माहात्म्य को प्रकट किया जिनने ऐसे और अनुभव में आते श्रीकृष्ण ही मेरे रक्षक हैं।

प्राकृताः सकला देवा गणितानंदकं बृहत्।

पूर्णानंदो हरिस्तस्मात्कृष्ण एव गतिर्मम।।८।।

भावार्थ–सभी देवता भगवच्छक्तिके वशीभूत हैं और अक्षर ब्रह्म भी गिने हुए आनंद वाला है और श्री हरि तो पूर्णआनंद वाले हैं, इस कारण श्रीकृष्ण मेरे प्राप्त करने योग्य हैं।

विवेकधैर्यभक्त्यादि सहितस्य विशेषतः।
पापासक्तस्य दीनस्य कृष्ण एव गतिर्मम।।९।।

भावार्थ–विवेक, धैर्य और भक्ति से रहित और बहुत प्रकार से पाप में ही आसक्त और दीन, मेरे (अन्य अधिकारी के) श्रीकृष्ण ही रक्षक हैं।

सर्वसामर्थ्यसहितः सर्वत्रैवाखिलार्थकृत्।
शरणस्थसमुद्धारं कृष्णं विज्ञापयाम्यहम्।।१०।।

भावार्थ–जो सर्व शक्तियों से युक्त और देश काल वर्ण आश्रमादि सर्व अवस्था में भक्तों के मनोरथ को पूर्ण करने वाले हैं, शरण में आये का उद्धार करने वाले उन श्रीकृष्ण की मैं प्रार्थना करता हूँ।

कृष्णाश्रयमिदं स्तोत्रं यः पठेत्कृष्णसन्निधौ।
तस्याश्रयो भवेत्कृष्ण इतिश्री वल्लभोऽब्रवीत्।।११।।

भावार्थ–जो भक्त इस कृष्णाश्रय स्तोत्र का, भगवत्संनिधान में पाठ करता है उसके श्रीकृष्ण आश्रय रूप होते हैं, यह बात श्री वल्लभाचार्यजी ने कही है।

।।श्री कृष्णाश्रय संपूर्ण।।

(४) चतुः श्लोकी

[१]सर्वदा सर्वभावेन भजनीयो व्रजाधिपः।
स्वस्याऽयमेव धर्मो हि नान्यः क्वापि कदाचन।।१।।

भावार्थ–सर्वसमय में पति, पुत्र, धन, गृह सब श्री कृष्ण ही है इस भाव से श्री व्रजेश्वर श्री कृष्ण की सेवा करनी चाहिये भक्तों का तो यही धर्म है, देश, वर्ण, आश्रम आदि किसी अवस्था में और किसी समय में भी अन्य धर्म नहीं है।

एवं सदा[२] स्वकर्तव्यं स्वयमेव करिष्यति।
प्रभुः सर्वसमर्थो हि ततो निश्चिन्ततां व्रजेत्।।२।।

भावार्थ–सदा भगवदियों का कर्तव्य पूर्वोक्त प्रकार का है, फल दानादि श्री हरिका कर्तव्य है, इसलिये वे स्वयं करेंगे, कारण कि प्रभु कर्तुमन्यथा कर्तुं सर्वसमर्थ हैं, इस कारण ऐहिक, पार लौकिक मनोरथों के विषय में निचिंत होकर रहना।

यदि श्रीगोकुलाधीशो धृतः सर्वात्मना हृदि।
ततः किमपरं ब्रूहि लौकिकैर्वैदिकैरपि।।३।।

भावार्थ–हे अधिकारी वर्ग? यदि प्रभु श्री कृष्ण को सब तरह से हृदय में धारण किये, तब फिर उससे अधिक लौकिक श्रेय आदि और वैदिक श्रेय आदि फलों से भी क्या प्रयोजन है, यह कहो।

१– भक्तिमार्गे हरेर्दास्यं धर्मोऽर्थो हरिरेवहि – कामो हरेर्दिदृक्षैवमोक्षः कृष्णस्व सेवनम्’ इस कथन से श्री हरिभक्तों को तो हरि सेवा, श्रीहरि, हरिदर्शन और श्री हरि का प्रेम ही क्रम से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष है। २– स्व कर्त्तव्य स्व फल है।

अतः सर्वात्मना शश्वद्गोकुलेश्वरपादयोः।
स्मरणं भजनं चाऽपि न त्याज्यमिति मे मतिः।।४।।

भावार्थ–अन्य अवतारों के बजाय श्रीकृष्ण ने अपने भक्तों को स्वरूपानंद का दान विशेष दिया है, इसलिये हमेशा श्रीगोकुल पति श्रीहरि के चरणों में सर्वात्म भाव से स्मरण तथा सेवन तथा चरणरज, कभी नहीं छोड़नी चाहिये यह मेरी बुद्धि है।

श्री चतुःश्लोकी संपूर्ण

(9) मधुराष्टकम्

अधरं मधुरं वदनं मधुरं नयनं मधुरं हसितं मधुरम्।
हृदयं मधुरं गमनं मधुरं मधुराधिपतेरखिल मधुरम्।।१।।

श्रीकृष्ण का अधर (ओष्ठ) मधुर है, श्रीकृष्ण का मुख मधुर है, श्रीकृष्ण के नेत्र मधुर है, श्रीकृष्ण का हास्य मधुर है, श्रीकृष्ण का हृदय मधुर है, श्रीकृष्ण का गमन (चलना) मधुर है तथा मधुर मात्र के अधिपति किंवा श्रीमधुरा जो राधाजी हैं उनके अधिपति भगवान् श्रीकृष्ण चन्द्र का सभी कुछ मधुर है।

वचनं मधुरं चरितं मधुरं वसनं मधुरं वलितं मधुरम्।
चलितं मधुरं भ्रमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।२।।

श्रीकृष्ण का वचन मधुर है, श्रीकृष्ण का चरित्र मधुर है, श्रीकृष्ण का वसन (वस्त्र) मधुर है, श्रीकृष्ण की चेष्टा मधुर है, श्रीकृष्ण का चलना मधुर है, श्रीकृष्ण का भ्रमण (घूमना) मधुर है, मधुराधिपति प्रभु श्रीकृष्ण का सब कुछ मधुर है।

वेणुर्मधुरो रेणुर्मधुरः पाणिर्मधुरः पादौ मधुरौ।
नृत्यं मधुरं सख्यं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।३।।

श्रीकृष्ण की वेणु (बंसी) मधुर हे, रेणु मधुर है, हाथ मधुर है, चरणारविंद मधुर है, आपका नृत्य मधुर है। सख्य मधुर है, मधुराधिपति प्रभु श्रीकृष्ण का सब कुछ मधुर है।

गीतं मधुरं पीतं मधुरं भुक्तं मधुरं सुप्तं मधुरम्।
रूपं मधुरं तिलकं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।४।।

श्रीकृष्ण का गीत मधुर है, पान मधुर है, भोजन मधुर है, शयन करना मधुर है, स्वरूप मधुर है, तिलक मधुर है मधुराधिपति प्रभु श्रीकृष्ण का सबकुछ मधुर है।

करणं मधुरं तरणं मधुरं हरणं मधुरं रमणं मधुरम्।
वमितं मधुरं शमितं मधुरं मधुराधिपेतरखिलं मधुरम्।।५।।

श्रीकृष्ण का कार्य मधुर है, तरण मधुर है, हरण मधुर है, रमण मधुर है, प्रभुकी वक्रता मधुर है, शांति मधुर है, मधुराधिपति प्रभु श्रीकृष्ण का सब कुछ मधुर है।

गुंजा मधुरा माला मधुरा यमुना मधुरा वीची मधुरा।
सलिलं मधुरं कमलं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।६।।

प्रभु की धारण की गई गुंजा की माला मधुर है, कमल माला मधुर है, जल विहार के समय श्री यमुना जी मधुर है, उसकी तरंगे मधुर है, जल मधुर है, कमल मधुर है, प्रभु श्रीकृष्ण का सब कुछ मधुर है।

गोपी मधुरा लीला मधुरा युक्तं मधुरं भुक्तं मधुरम्।

दृष्टं मधुरं शिष्टं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।७।।

प्रभु के प्रियभक्त श्री गोपीजन मधुर हैं, उनके साथ की गई विविध लीला मधुर है संयोग मधुर है, भोग मधुर है, देखना मधुर है, शासन करना मधुर है, प्रभु श्रीकृष्ण का सर्वकार्य मधुर है।

गोपा मधुरा गावो मधुरा यष्टिर्मधुरा सृष्टिर्मधुरा।
दलितं मधुरं फलितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।८।।

श्रीकृष्ण के सखा गोप मधुर है, आपकी गायें मधुर हैं, आपकी यष्टि (लकड़ी) मधुर है, आपकी दैवी सृष्टि मधुर है, आपका दलन (अर्थात् ताडण) मधुर है आपका फलात्मक आनंद मधुर है, मधुराधिपतिभगवान् श्रीकृष्ण का सबकुछ मधुर है।

।।श्री मधुराष्टक संपूर्ण।।

(10) नन्द कुमाराष्टक :-

सुन्दरगोपालं उरवनमालं नयनविशालं दुःखहरं,
वृन्दावनचन्द्रं आनन्दकंदं परमानन्दं धरणिधरम्।
वल्लभघनश्यामं पूरणकामं अत्यभिरामं प्रीतिकरं,
भज नन्दकुमारं सर्वसुखसारं तत्वविचारं ब्रह्मपरम्।।१।।

सुन्दर गोपाल अर्थात् गौओं के पालन करने वाले, गले में वनमाला धारण करने वाले, विशाल नेत्रवाले, दुःख का हरण करने वाले, वृन्दावन के चन्द्रस्वरुप, आनन्द समूह रूप, उत्कृष्ट आनंद वाले, धरा को धारण करने वाले, मेघ के समान श्याम कांति वाले, पूर्णमनोरथवाले, अत्यन्त आह्लादक प्रीतिकारक सभी सुखों के साररुप तत्व द्वारा विचारित, परब्रह्मनंद कुमार श्रीकृष्णचन्द्र की भक्ति करो।

सुन्दरवारिजवदनं निर्जितमदनं आनंदसदनं मुकुटघरं,
गुंजाकृतिहारं विपिनविहारं परमोदारं चीरहरम्।
वल्लभपटपीतं कृतउपवीतं करनवनीतं विबुधवरं,
भज नंदकुमारं सर्वसुखसारं तत्वविचारं ब्रह्मपरम्।।२।।

सुन्दर कमल के समान जिनका श्रीमुख है, कामको विजय करने वाले, आनंद के स्थानरूप, मुकुट धारण करने वाले, गुंजाकी माला को धारण करने वाले वृन्दावन बिहारी, परम उदार, पीताम्बर प्रिय, उपवीतधारी, श्री हस्त में नवनीत धारण करने वाले, देवों में उत्तम, सर्व सुखों के साररुप, तत्वद्वारा विचारित परब्रह्म नंदकुमार श्रीकृष्ण चन्द्र की भक्ति करो।

शोभितमुखधूलं यमुनाकूलं निपट अतुलं सुखदतरं,
मुखमंडितरेणुं चारितधेनुं वादितवेणुं मधुरसुरम्।
वल्लभअतिविमलं शुभपदकमलं नखरूचिअमलं तिमिरहरं,
भज नंदकुमारं सर्वसुखसारं तत्वविचारं ब्रह्मपरम्।।३।।

सुशोभित सुखों के मूलरूप, यमुना तट स्थित, अनुपमेय स्वभाव वाले, सुखदाताओं में श्रेष्ठ, जिनके मुखारविंद गोधूलि से वेष्टित है, गायों को चराने वाले नखों की निर्मल कांति वाले, अंधकार को भगाने वाले, सर्व सुखों के साररुप, तत्व द्वारा विचारित, पर ब्रह्म नंदकुमार श्री कृष्णचन्द्र की भक्ति करो।

शिरमुकुटसुदेशं कुंचितकेशं नटवरवेशं कामवरं,
मायाकृतमनुजं हलधर अनुजंप्रतिहतदनुजं भारहरम्।
वल्लभव्रजपालं सुभगसुचालं हितअनुकालं भाववरं
भज नंदकुमारं सर्वसुखसारं तत्वविचारं ब्रह्मपरम्।।४।।

शिर पर जिनके मुकुट सुशोभित है, कुंचित केशवाले नटवर वेषधारी, कोटि कंदर्प लावण्य, निजमाया शक्ति द्वारा मनुजाकृति दर्शाने वाले, श्री बलदेवजी के अनुज, दानवों के संहारक, पृथ्वी के भार को उतारने वाले, नन्दरायजी जिन्हें प्रिय हैं, सुभगसुन्दर गतिवाले प्रतिक्षण हितकर्ता, भाविकों में श्रेष्ठ सर्वसुखों के साररूप, तत्वद्वारा विचारित पर ब्रह्मनन्दकुमार श्री कृष्णचन्द्र की भक्तिकरो।

इन्दीवरभासं प्रकटसरासं कुसुमविकासं वंशीधरं
हितमन्मथमानं रूपनिधानं कृत कलगानं चित्तहरम्।
वल्लभ मृदुहासं कुंजनिवासं विविधविलासं केलिकरं
भज नन्दकुमारं सर्वसुखसारं तत्वविचारः ब्रह्मपरम्।।५।।

कमल सदृश द्युतिवाले, प्रकट सुन्दर रासक्रीड़ा करने वाले जिनके दर्शनकर पुष्प प्रफुल्लित होते हैं वंशीधर महादेव के मान को नाश करने वाले, रूपनिधान कलि में जिनका नाम संकीर्तन किया जाता है, चित्त का हरण करने वाले, प्रिय कोमल हास्ययुक्त, कुंज में निवास करने वाले, विविध विलासकर्ता, क्रीडाकारी सर्वसुखों के साररूप तत्व द्वारा विचारित पर ब्रह्म नन्दकुमार श्रीमुखचन्द्र की भक्तिकरो।

अतिपरमप्रवीणं पालितदीनं भक्ताधीनं कर्मकरं,
मोहनमतिधीरं फणिबलवीरं हतपरवीरं तरलतरम्।
वल्लभव्रजरमणं वारिजवदनं हलधरशमनं शैलधरं,
भज नंदकुमारं सर्वसुखसारं तत्वविचारं ब्रह्मपरम्।।६।।

अति परम प्रवीण, दीनता वाले जीवों के पालनकर्ता मायाधीन, गोवर्धन पूजारूपी यज्ञकर्ता, भक्तों को मोह कराने वाले, अतिधीर, बलवान कलि के निवारण करने वाले शत्रुवीरों के संहारकर्ता, अतिचपल व्रजरमण जिन्हें प्रिय है, कमल नयन, मेघ को शांत

करने वाले गिरिराज को धारण करने वाले, सब सुख के साररूप तत्व द्वारा विचारित पर ब्रह्म नन्दकुमार श्रीकृष्ण चन्द्र की भक्तिकरो।

जलधर द्युतिअंगं ललित त्रिभगं बहुकृतिरंगं रसिकवरं,
गोकुलपरिवारं मदनाकारं कुंजविहारं गूढनरं।
वल्लभ व्रजचन्द्रं सुभगसुछन्दं कृतआनन्दं भ्रांतिहरं,
भज नंदकुमारं सर्वसुखसारं तत्वविचारं ब्रह्मपरम्।।७।।

मेघ की कांति के समान शरीर धारण करने वाले, ललित त्रिभंगी, विविध स्वरूप रंग से विदित होने वाले, रसिक शिरोमणि गोसमूह जिनका परिवार है, कामदेव के समान आकार वाले कुंजविहारी गुण मनुष्याकृति प्रिय व्रज चन्द्र सुन्दर भाग्य एवं दिव्य लीलामय परमानंद स्वरूप भ्रांति हरण करने वाले, सर्वसुखके साररुप तत्व द्वारा विचारित पर ब्रह्मानंद कुमार श्री कृष्ण चन्द्र की भक्तिकरो।

वंदितयुगचरणं पावनकरणं जगदुद्धरणं विमलधरं,
कालियशिरगमनं कृतफणिनमनं घातियमनं मृदुलतरम्
वल्लभदुःखहरणं निर्मलचरणं अशरणशरणं मुक्तिकरं,
भज नंदकुमारं सर्वसुखसारं तत्वविचारं ब्रह्मपरम्।।८।।

वन्दनीय जिनके चरण कमल है, पवित्र करने वाले, उद्धारक निर्मल हाथवाले, कालिय नाग के मस्तक पर चढ़कर नृत्य करने वाले, कालिय नाग के फणों को नमाने वाले यमलार्जुन का भंग करने वाले, अत्यन्त कोमल प्रियजनों के दुःख हरण करने वाले निर्मल चरण वाले अरक्षकों के संरक्षक मुक्तिदाता सर्वसुख के साररूप तत्व द्वारा परब्रह्म नन्दकुमार श्रीकृष्णचन्द्र की भक्तिकरो।

।।श्री वल्लभाचार्य विरचित नन्दकुमाराष्टक संपूर्ण।।

।। श्रीहरिः ।।

।। श्रीगोपीजनवल्लभायनमः ।।

(11)।। श्रीपुरूषोत्तम सहस्त्रनाम स्तोत्रम् ।।

।। मंगलाचरणम् ।।

बर्हापीडं नटवर वपुः कर्णयोः कर्णिकारं, बिभ्रद्वासः कनक कपिशं वैजयन्तीं च मालाम्। रन्ध्रान् वेणोरधरसुधया पूरयन् गोपवृन्दैर्वन्दारण्यं स्वपद रमणं प्राविशद् गीत कीर्तिः।।

अर्थ– सिर पर मयूर पिच्छ है और कानों पर कनेर के पीले पीले पुष्प, शरीर पर सुनहला पीताम्बर और गले में पांच प्रकार के सुगन्धित पुष्पों की बनी वैजयन्ती माला है। रंगमंच पर अभिनय करते हुए श्रेष्ट नट का सा क्या ही सुन्दर वेष है। बांसुरी के छिद्रों को वे अपने अधरामृत से भर रहे हैं। उनके पीछे पीछे ग्वाल बाल उनकी लोक पावन कीर्ति का गान कर रहे हैं। इस प्रकार वैकुण्ठ से भी श्रेष्ठ वह वृन्दावन धाम उनके चरण चिन्हों से और भी रमणीय बन गया है।

(एतन्माहात्म्यम्)

पुराणपुरुषो विष्णुः पुरुषोत्तम उच्यते।
नाम्नांसहस्त्रं वक्ष्यामि तस्य भागवतोद्धृतम्।।१।।

पुराणपुरुष भगवान् विष्णु जो श्रीपुरुषोत्तम कहलाते हैं, उनके श्रीमदभागवत से उद्धृत, एक हजार नाम कहता हूँ ।।१।।

यस्य प्रसादाद्वागीशाः प्रजेशा विभवोन्नताः।
क्षुद्रा अपि भवंत्याशु श्रीकृष्णं तं नतोऽस्म्यहम्।।२।।

जिनकी कृपा से क्षुद्र जीव भी तत्काल बृहस्पति के समान विद्वान्, ब्रह्मा के समान तथा राजा के समान संपत्ति एवं सत्तायुक्त हो जाता है, उन श्रीकृष्ण चंद्र भगवान् को मैं प्रणाम करता हूँ।।२।।

अनन्ता एव कृष्णस्य लीला नामप्रवर्तिकाः।
उक्ता भागवते गूढाः प्रकटा अपि कुत्रचित्।।३।।

भगवान् श्रीकृष्ण के नाम को प्रतिपादित करने वाली लीलाएं अनंत हैं। वे सब श्रीभागवत में गूढ़ रूप से वर्णित हैं। किन्तु कहीं–कहीं पर प्रकट रूप से भी निरुपित हैं।।३।।

अतस्तानि प्रवक्ष्यामि नामानि मुरवैरिणः।
सहस्रं यैस्तु पठितं पठितं स्याच्छुकामृतम्।।४।।

इसलिए मैं मुरारी श्रीकृष्ण की प्रकट लीलाओं के वे एक हजार नाम प्रकट करता हूँ, जिन नामों का पाठ श्री शुकदेवजी के मुख से निसृत सुधास्वरूप श्रीमद्भागवत के पाठ के तुल्य होगा।।४।।

कृष्णनामसहस्रस्य ऋष्यादयंःअग्निर्निरूपितः।
गायत्री च तथा छंदो देवता पुरुषोत्तमः।।५।।

श्रीकृष्ण नाम सहस्र मंत्रों के प्रथम दृष्टा ऋषि अग्नि है, छंद गायत्री है और देवता श्रीपुरुषोत्तम है।।५।।

विनियोगः समस्तेषु पुरुषार्थेषु वै मतः।
बीजं भक्तप्रियः शक्तिः सत्यवागुच्यते हरिः।।६।।

श्रीपुरुषोत्तम सहस्रनाम का धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष इन चारों पुरुषार्थों की सिद्धि में विनियोग मान्य है, भक्तप्रिय भगवान् बीज रूप में है और सत्यवाणी शक्ति स्वरूप हैं।

विशेष– अनन्य प्रेम से निष्काम सेवा करना यही धर्म है। भगवत्सेवा निमित्त (के लिए) वस्तुओं का संचय अर्थ है। पदार्थों की इच्छा प्रभु सेवा के लिए करना काम है और सुखदुःखादि द्वन्द्वों से विमुक्त होकर भगवल्लीलाओं का रसानुभव करना मोक्ष है।।६।।

भक्तोद्धरणयत्नस्तु मंत्रोऽत्र परमो मतः।
अवतारितभक्तांशः कीलकं परिकीर्तितम्।।७।।

निज भक्तों के उद्धारार्थ प्रयत्न यही श्री पुरुषोत्तम सहस्त्रनाम् स्तोत्र का मुख्य मंत्र माना गया है। अपने अंश रूपी भक्तों के लिए जो प्रभु अवतरित हुए है, वे प्रभु "कीलक" स्वरूप है।।७।।

अस्त्रं सर्वसमर्थश्च गोविन्दः कवचं मतम्।
पुरुषो ध्यानमंत्रोक्तं सिद्धिः शरणसंस्मृतिः।।८।।

सर्व समर्थ भगवान् इस नाम स्तोत्र के अस्त्र रूप हैं। श्री गोविन्द भगवान् कवच हैं। इस स्तोत्र में वर्णित श्रीपुरुषोत्तम भगवान् ध्यान स्वरूप हैं और "मैं प्रभु के चरणारविंद का दास हूँ" यह स्मृति सदा सर्वदा बनी रहे यही स्तोत्र की सिद्धि है।।८।।

(श्रीसहस्त्रनामस्तोत्रम्) (तत्रादौ प्रथम स्कन्धीय नामानि)

श्रीकृष्णः सच्चिदानंदो नित्यलीलाविनोदकृत्।
सर्वागमविनोदी च लक्ष्मीशः पुरुषोत्तमः।।६।।

१. श्रीकृष्ण २.सच्चिदानंद ३.सदैव नित्यलीलाओं का आनंद देने वाले ४. सर्ववेदविनोदी ५.लक्ष्मीकांत ६. श्री पुरुषोत्तम।।६।।

आदिकालः सर्वकालः कालात्मा माययावृतः।
भक्तोद्धारप्रयत्नात्मा जगत्कर्ता जगन्मयः।।१०।।

७.आदिकालस्वरूप ८. सर्वकालस्वरूप ६. कालात्मा १०. माया से आवृत्त ११. भक्त के उद्धारार्थ प्रयत्न में अन्तः करण वाले १२. दृष्यमान जगत के कर्ता १३. जगद्रूप।।१०।।

नामलीलापरो विष्णुर्व्यासात्मा शुकमोक्षदः।
व्यापिवैकुंठदाता च श्रीमद्भागवतागमः।।११।।

१४. श्रेष्ठ नाम तथा लीला में तत्पर १५. सर्वव्यापक विष्णु १६. व्यास स्वरूप १७. शुकदेवजी को मुक्ति देने वाले १८. व्यापि वैकुंठदाता १६. श्रीमद् भागवत स्वरूप।।११।।

शुकवागमृताब्धीन्दुः शौनकाद्यखिलेष्टदः।
भक्तिप्रवर्तकस्त्राता व्यासचिन्ताविनाशकः।।१२।।

२०. श्रीशुकदेवजी के वचनामृत रूपी सागर के चन्द्रमा २१. शौनकादि को समस्त इष्ट स्वरूप मुक्तिं प्रदान करने वाले २२. भक्ति के प्रवर्तक २३. भक्तिके संरक्षक २४. श्री व्यासजी की चिंता को दूर करने वाले।।१२।।

सर्वसिद्धांतवागात्मा नारदाद्यखिलेष्टदः।
अंतरात्मा ध्यानगम्यो भक्तिरत्नप्रदायकः।।१३।।

२५. सर्व प्रकार की वाणी में सिद्धान्त स्वरूप २६. नारदजी को सर्वोत्तम भक्ति प्रदान करने वाले २७. अन्तर्यामी २८. ध्यान गम्य २६. भक्ति रत्न स्वरूप श्रीमद्भागवत के दाता।।१३।।

मुक्तोपसृप्यः पूर्णात्मा मुक्तानां रतिवर्धनः।
भक्तकार्यैकनिरतो द्रौण्यस्त्रविनिवारकः ।।१४।।

३०. मुक्ति चाहने वाले भक्तों को अपने सान्निध्य योग्य बनाने वाले ३१. पूर्णात्मा ३२. मुक्त भक्तों को आनंद देने वाले ३३. एकमात्र भक्तों के ही कार्य में तत्पर ३४. अश्वत्थामा द्वारा चलाए ब्रह्मास्त्र का निवारण करने वाले।।१४।।

भक्तस्मयप्रणेता च भक्तवाक्परिपालकः।
ब्रह्मण्यदेवो धर्मात्मा भक्तानां च परीक्षकः ।।१५।।

३५. भक्तों में उत्पन्न गर्व को दूर करने वाले ३६. भक्तों की वाणी का पालन करने वाले ३७. ब्रह्मा में तल्लीन भक्तों में रमण करने वाले ३८. धर्म के हेतु अवतार ग्रहण करने वाले ३६. भक्तों की परीक्षा लेने वाले।।१६।।

आसन्नहितकर्ता च मायाहितकरः प्रभुः।
उत्तराप्राणदाता च ब्रह्मास्त्रविनिवारकः ।।१६।।

४०. भक्तों के हितकर्ता ४१. अपनी माया शक्ति से सबका हित करने वाले ४२. सर्व समर्थ ४३. उत्तरा के गर्भ की रक्षा करते हुए प्राणदाता तथा ४४. अमोघ ब्रह्मास्त्र को रोकने वाले।।१६।।

सर्वतः पांडवपतिः परीक्षिच्छुद्धिकारणम्।।

गूढात्मा सर्ववेदेषु भक्तैकहृदयंगमः ।।१७।।

४५. सारी विपत्तियों से पांडवों को बचाने वाले ४६. राजा परीक्षित की शुद्धि में कारणभूत ४७. समस्त वेदों में गूढ रूप से रहने वाले ४८. भक्तों द्वारा हृदयस्थ हो जाने वाले ।।१७।।

कुंतीस्तुत्यः प्रसन्नात्मा परमाद्‌भुतकार्यकृत् ।।
भीष्ममुक्तिप्रदः स्वामी भक्तमोहनिवारकः ।।१८।।

४९. कुंती द्वारा स्तुति किए जाने वाले ५०. प्रसन्न अंतःकरण वाले ५१. परमाद्‌भुत कार्य करने वाले ५२. भीष्म पितामह को मुक्ति देने वाले ५३. भक्तों के स्वामी ५४. भक्तों के मोह को निवारण करने वाले।।१८।।

सर्वावस्थासु संसेव्यः समः सुखहितप्रदः।
कृतकृत्यःसर्वसाक्षी भक्तस्त्रीरतिवर्धनः।।१९।।

५५. प्रत्येक प्रकार की अवस्था में सेवा योग्य ५६. समस्वरूप ५७. सुख एवं कल्याण देने वाले ५८. सर्व कार्य सिद्ध करने वाले ५९. सभी कार्यों के साक्षी ६०. भक्त स्त्रियों की प्रीति बढ़ाने वाले।।१९।।

सर्वसौभाग्यनिलयः परमाश्चर्यरूपधृक्।
अनन्यपुरूष स्वामी द्वारकाभाग्य भाजनम्।।२०।।

६१. सर्वसौभाग्य के भण्डार ६२. अत्यन्त आश्चर्यजनक स्वरूप धारण करने वाले ६३. अनन्य पुरूष स्वामी ६४. द्वारका नगरी के भाग्य स्वरूप।।२०।।

बीजसंस्कारकर्ता च परीक्षिज्ज्ञानपोषकः।
सर्वत्र पूर्णगुणकः सर्वभूषणभूषितः।।२१।।

६५. बीज संस्कार करने वाले ६६. परीक्षित के ज्ञान का पोषण करने वाले ६७. सर्वत्र षट् ऐश्वर्यादि से पूर्ण ६८. सब अलंकारों से सुशोभित।।२१।।

सर्वलक्षणदाता च धृतराष्ट्रविमुक्तिदः।

सन्मार्गरक्षको नित्यं विदुरप्रीतिपूरकः।।२२।।

६९. समस्त शुभ लक्षणों के दाता ७०. धृतराष्ट्र को मुक्ति देने वाले ७१. सदैव सन्मार्ग रक्षक ७२. विदुरजी की प्रेम लक्षणा भक्ति को पूर्ण करने वाले।।२२।।

लीलाव्यामोहकर्ता च कालधर्मप्रवर्तकः।।
पाण्डवानां मोक्षदाता परीक्षिद् भाग्यवर्धनः।।२३।।

७३. लीलाओं द्वारा व्यामोहकर्ता ७४. कालधर्म के प्रवर्तक ७५. पांडवों को मोक्ष देने वाले ७६. परीक्षित राजा के भाग्य वर्धक।।२३।।

कलिनिग्रहकर्ता च धर्मादीनां च पोषकः।।
सत्संगज्ञानहेतुश्च श्रीमद्भागवतकारणम्।।२४।।

७७. कलिकाल के निग्रहकर्ता ७८. धर्मादिकों के पोषक ७९. सत्संग ज्ञान के हेतु ८०. श्रीमद्भागवत की उत्पति के कारण भूत।।२४।।

प्राकृतादृष्टमार्गश्च--

८१. प्रकृति के कार्यों एवं अदृष्ट को दूर करने वाले पूर्ण पुरूषोत्तम।।२४।।

।। प्रथम स्कंध नामावलि संपूर्णम् ।।

।। अतःपरं द्वितीयस्कंधीयनामानि।।

—श्रोतव्यःसकलागमैः।
कीर्तितव्यः शुद्धभावैः स्मर्तव्यश्चात्मवित्तमैः।।२५।।

८२. सकल शास्त्रानुसार श्रवण करने योग्य ८३. शुद्ध भाव से भक्तों के द्वारा कीर्तन करने योग्य ८४. तथा आत्मज्ञ भगवदीयों से स्मरणीय ऐसे।।२५।।

अनेकमार्गकर्ता च नानाविधगतिप्रदः।।
पुरुषः सकलाधारः सत्त्वैकनिलयात्मभूः।।२६।।

८५. अनेक मार्गों (सांख्य योगादि) के रचने वाले ८६. अलग–अलग प्रकाश की गति को देने वाले ८७. पुरुषोत्तम पुरुष ८८. सकल विश्व के आधार ८९. केवल सत्वगुणी भक्त के हृदय में विराजमान।।२६।।

सर्वध्येयो योगगम्यो भक्त्या ग्राह्यः सुरप्रियः।।
जन्मादिसार्थककृतिर्लीलाकर्ता पतिः सताम्।।२७।।

६०. सब भक्तों के ध्यान करने योग्य ६१. योग से जानने योग्य ६२. भक्ति के द्वारा ही ग्रहण करने योग्य ६३. दैवीजीवों के प्रिय ६४. जन्मादि को सार्थक करने वाले ६५. लीलाकर्ता ६६. सत्पुरुषों के पालनकर्तापति।।२७।।

आदिकर्ता तत्वकर्ता सर्वकर्ता विशारदः।
नानावतारकर्ता च ब्रह्माविर्भावकारणम्।।२८।।

६७. आदिकर्ता ६८. तत्वकर्ता ६६. सर्वकर्ता १००. अति निपुण १०१. नानावतारकर्ता १०२. ब्रह्मा के प्रादुर्भाव के कारण स्वरूप।।२८।।

दशलीलाविनोदी च नानासृष्टिप्रवर्तकः।
अनेककल्पकर्ता च सर्वदोषविवर्जितः।।२६।।

१०३. दशलीलाओं द्वारा विनोद करने वाले १०४. अलग–अलग सृष्टि के कर्ता १०५. अनेक कल्पों के रचयिता १०६. सब दोषों से रहित।।२६।।

।। द्वितीय स्कंध नामावली संपूर्णम्।।

।। अतः परं तृतीय स्कंधीय नामानि ।।

वैराग्यहेतुस्तीर्थात्मा सर्वतीर्थफलप्रदः।
तीर्थशुद्धैकनिलयः स्वमार्गपरिपोषकः।।३०।।

१०७. वैराग्य के कारण रूप १०८. तीर्थात्मा १०६. सब तीर्थों के फल देने वाले ११०. तीर्थ करने से शुद्ध हो जाने वाले भक्तों के हृदयस्थ रहने वाले १११. अपने मार्ग के अर्थात् भक्ति मार्ग के पोषक।।३०।।

तीर्थ कीर्तिर्भक्तगम्यो भक्तानुशयकार्यकृत्।
भक्ततुल्यः सर्वतुल्यः स्वेच्छासर्वप्रवर्तकः।।२२।।

११२. तीर्थो के द्वारा कीर्तिमान ११३. भक्त गम्य ११४. भक्त के पक्ष के लिए कार्य करने वाले ११५. भक्त को अपने समान करने में समर्थ ११६. सबको समान फल देने वाले ११७. अपनी इच्छा से सब कुछ करने वाले।।३१।।

गुणातीतोऽनवद्यात्मा सर्गलीलाप्रवर्तकः।
साक्षात्सर्वजगत्कर्ता महदादिप्रवर्तकः।।३२।।

११८. गुणातीत ११६. किसी से न जानने योग्य आत्मावतार १२०. सर्गलीला करने वाले १२१. साक्षात्सर्वजगत् के कर्ता १२२ महदादि तत्वों को प्रकट करने वाले।।३२।।

मायाप्रवर्तकः साक्षी मायारतिविवर्धनः।
आकाशात्मा चतुर्मूर्तिश्चतुर्धा भूतभावनः।।३३।।

१२३. माया को प्रकट करने वाले १२४. साक्षी स्वरूप १२५. माया द्वारा प्रेम बढ़ाने वाले १२६. आकाशवत् १२७. वासुदेवादि चार विग्रह करने वाले अथवा चतुरवर्णात्मक १२८. चार प्रकार के पुरुषार्थो को धारण करने वाले १२६. पंच भूतादि को प्रकट करने वाले।।३३।।

रजःप्रवर्तको ब्रह्मा मरीच्यादिपितामहः।
वेदकर्ता यज्ञकर्ता सर्वकर्ताऽमितात्मकः।।३४।।

१३०. रजोगुण को प्रेरित करने वाले १३१. सर्व व्यापक ब्रह्मा स्वरूप १३२. मरीचि आदि ऋषियों के पितामह रूप

१३३. वेदकर्ता १३४. यज्ञकर्ता १३५. सर्वकर्ता १३६. असंख्य रूप धारण कर्ता।।३४।।

अनेक सृष्टिकर्ता च दशधासृष्टिकारकः।
यज्ञाङ्गो यज्ञवाराहो भूधरो भूमिपालकः।।३५।।

१३७. अनेक सृष्टिकर्ता १३८. दस प्रकार की सृष्टि को प्रकट करने वाले १३९. यज्ञ स्वरूप १४०. यज्ञ रूप वराह अवतार धारणकर्ता १४१. भूमि को धारण करने वाले १४२. भूमि पालक।।३५।।

सेतुर्विधरणो जैत्रो हिरण्याक्षान्तकः सुरः।
दितिकश्यपकामैकहेतु सृष्टिप्रवर्तकः।।३६।।

१४३. सेतु स्वरूप १४४. विशेष रूप से धारण करने में समर्थ १४५. विजयी १४६. हिरण्याक्ष दैत्य का अंत करने वाले १४७. दिति और कश्यप की काम युक्त सृष्टि को बढ़ाने वाले १४८. सृष्टि के प्रवर्तक।।३६।।

देवाभयप्रदाता च वैकुंठाधिपतिर्महान्।
सर्वगर्वप्रहारी च सनकाद्यखिलार्थदः।।३७।।

१४९. देवताओं को अभय दान देने वाले १५०. वैकुंठाधिपति १५१. महान् १५२. सर्वगर्वहर्ता १५३. सनकादि मुनिकुमारों के मनोरथ को पूर्ण करने वाले।।३७।।

सर्वाश्वासनकर्ता च भक्ततुल्याहवप्रदः।
काललक्षणहेतुश्च सर्वार्थज्ञापकः परः।।३८।।

१५४. सब भक्तों को आश्वासन देने वाले १५५. भक्त को योग देने वाले १५६. काल लक्षणों के कारण रूप १५७. सब अर्थ का ज्ञान देने वाले १५८. सभी से परे।।३८।।

भक्तोन्नतिकरः सर्वप्रकारसुखदायकः।
नानासुदुःखहरणो ब्रह्मशापविमोचकः।।३९।।

१५६. भक्त की उन्नति करने वाले १६०. सब प्रकार के सुख देने वाले १६१. अलग–अलग प्रकार के युद्ध – शस्त्रों के प्रहार करने में निपुण १६२. ब्राह्मण द्वारा दिए गए शाप से भी मुक्त कर देने वाले।।३६।।

पुष्टिसर्गप्रणेता च गुणसृष्टिप्रवर्तकः।
कर्दमेष्टप्रदाता च देवहूत्यखिलार्थदः।।४०।।

१६३. पुष्टि अर्थात् अनुग्रह रूप सर्गलीला के करने वाले १६४. गुणरूपी सृष्टि को प्रकट करने वाले १६५. कर्दम ऋषि को इष्ट वस्तु देने वाले १६६. देवहूति को सर्ववैभव देने वाले।।४०।।

शुक्लोनारायणः सत्यकालधर्मप्रवर्तकः।
ज्ञानावतारः शांतात्मा कपिलः कालनाशकः।।४१।।

१६७. शुद्ध सत्वगुणमय नारायण स्वरूप १६८. वास्तविक काल धर्म के प्रवर्तक १६६. ज्ञानावतार १७०. शांत स्वरूप १७१. कपिल भगवान् १७२. काल (मृत्यु) का नाश करने वाले।।४१।

त्रिगुणाधिपतिः सांख्यशास्त्रकर्ता विशारदः।
सर्गदूषणहारी च पुष्टिमोक्षप्रवर्तकः।।४२।।

१७३. सत्वादि तीन गुणों के नियामक १७४. सांख्य शास्त्र के प्रवर्तक १७५. शास्त्रों में निपुण १७६. सृष्टि के दोषों को दूर करने वाले १७७. पुष्टिस्थ जीवों को मोक्ष देने वाले अर्थात् कृपा बल से उनका उद्धार करने वाले।।४२।।

लौकिकानंददाता च ब्रह्मानंदप्रवर्तकः।
भक्तिसिद्धांतवक्ता च सगुणज्ञानदीपकः।।४३।।

१७८. लौकिक आनंद देने वाले १७६. ब्रह्म संबंधी आनंद को बढ़ाने वाले १८०. भक्ति मार्ग के सिद्धान्तों की विवेचना करने वाले १८१. सत्वादि गुण तत्वों के प्रकाशक।।४३।।

आत्मप्रदः पूर्णकामो योगात्मा योगभावितः।
जीवन्मुक्तिप्रदः श्रीमानन्यभक्तिप्रवर्तकः।।४४।।

१८२. अपने स्वरूप को प्रकाशित करने वाले १८३. सब कामनाओं को निरपेक्ष भाव से पूर्ण करने वाले १८४. योगात्मक १८५. अष्टांग योग द्वारा चिंतन के योग्य १८६. जीवन्मुक्तिदाता १८७. शोभा संपन्न १८८. विशिष्ट प्रकार की भक्ति को प्रकट करने वाले।।४४।।

कालसामर्थ्यदाता च कालदोषनिवारकः।।
गर्भोत्तमज्ञानदाता कर्ममार्गनियामकः।।४५।।

१८९. काल को समर्थ बनाने वाले १९०. कालदोष का निवारण करने वाले १९१. गर्भ में भी जीव को उत्तम ज्ञान देने वाले १९२. मार्ग के नियामक अर्थात् कर्मानुसार जन्म–मरण के फलदाता।।४५।।

सर्वमार्गनिराकर्ता भक्तिमार्गैकपोषकः।
सिद्धिहेतुः सर्वहेतुः सर्वाश्चर्यैककारणम्।।४६।।

193. भक्तिरहित मार्गों को दूर करने वाले (सर्वमार्ग का निराकरण करने वाले) 194. केवल भक्ति मार्ग के पोषक 195. सिद्धि प्राप्त करा देने वाले 196. संपूर्ण सिद्धि के कारण रूप 197. समस्त विस्मयकारक वस्तुओं के हेतु।।46।।

चेतनाचेतनपतिः समुद्रपरिपूजितः।
सांख्याचार्यस्तुतः सिद्धपूजितः सर्वपूजितः।।४७।।

१९८. जड़ तथा चेतन के पालनकर्ता १९९. समुद्र से पूजित २००. सांख्याचार्यो से स्तुति किए जाने वाले २०१. सिद्धजनों से पूजन किए जाने वाले भगवान् २०२. सभी के द्वारा पूजित पूर्ण पुरुषोत्तम हैं। कहा है– "सिद्धचारण गंधर्वोमुनिभिरित्यादिना।।"

।। तृतीय स्कंध नामावली संपूर्णम् ।।

।। अतः परं चतुर्थ स्कन्धीय नामानि ।।

विसर्गकर्ता सर्वेशः कोटिसूर्यसमप्रभः।
अनंतगुणगंभीरो महापुरुषपूजितः।।४८।।

२०३. विलक्षण सृष्टिकर्ता २०४. सर्वप्राणियों के ईश २०५. करोड़ों सूर्य के समान कांतिमान २०६. अनंत गुण युक्त गंभीर स्वभाव वाले २०७. महापुरुषों द्वारा वंदनीय।।४८।।

अनंतसुखदाता च ब्रह्मकोटिप्रजापतिः।
सुधाकोटिस्वास्थ्यहेतुः कामधुक्कोटिकामदः।।४६।।

२०८. अनंत सुखों के दाता २०६. अनंत कोटि ब्रह्माओं को प्रकट करने वाले २१०. अनंत अमृत के समान स्वस्थता देने वाले २११. करोड़ों कामधेनुओं के समान कामनाओं को पूर्ण करने वाले।।४६।।

समुद्रकोटिगंभीरस्तीर्थकोटिसमाह्वयः।
सुमेरुकोटिनिष्कंपः कोटिब्रह्मांड विग्रहः।।५०।।

२१२. करोड़ों समुद्रों की सी गंभीरता धारण करने वाले २१३. करोडों तीर्थों के समान स्मरण करने योग्य २१४. करोड़ों सुमेरुओं के समान अचल २१५. करोड़ों ब्रह्मांडस्वरूप।।५०।।

कोट्यश्वमेधपापघ्नो वायुकोटिमहाबलः।
कोटीन्दुजगदानंदी शिवकोटिप्रसादकृत।।५१।।

२१६. करोड़ों अश्वमेध यज्ञ के समान पाप का नाश करने वाले २१७. अनंत वायु के समान महाबली २१८. करोड़ों चंद्रमाओं के समान जगत् को आनंद देने वाले २१६. अनंत शिव के समान कृपा करने वाले।।५१।।

सर्वसद्गुणमाहात्म्यः सर्वसद्गुणभाजनम्।
मन्वादिप्रेरको धर्मो यज्ञनारायणः परः।।५२।।

२२०. सब सद्गुणों के कारण महिमावाले २२१. सर्व सद्गुणों के पात्र २२२. स्वायंभुवमनु आदि को प्रेरणा देने वाले २२३. धर्म स्वरूप २२४. यज्ञनारायण भगवान् २२५. सर्वश्रेष्ठ।।५२।।

आकूतिसूनुर्देवेन्द्रो रुचिजन्माऽभयप्रदः।
दक्षिणापतिरोजस्वी क्रियाशक्तिः परायणः।।५३।।

२२६. आकूतिपुत्र २२७. देवेन्द्र २२८. रूचिमुनि से जन्म प्राप्त २२९. अभय देने वाले २३०. दक्षिणा स्त्री के पति २३१. ओजस्वी २३२. क्रिया शक्ति स्वरूप २३३. उत्तम ज्ञानी।।५३।।

दत्तात्रेयो योगपतिर्योगमार्गप्रवर्तकः।
अनसूयागर्भरत्नमृषिवंशविवर्धनः।।५४।।

२३४. दत्तात्रेय स्वरूप २३५. योगपति २३६. योगमार्ग प्रवर्तक २३७. अनुसूया के गर्भ के रत्न दत्तात्रेय भगवान २३८. ऋषियों के वंश की वृद्धि करने वाले।।५४।।

गुणत्रयविभागज्ञश्चतुर्वर्गविशारदः।
नारायणो धर्मसुनुःपुण्यमूर्तिर्यशस्करः।।५५।।

२३९. सत्वादि तीनों गुणों के विभाग को जानने वाले २४०. धर्मादि चतुवर्ग में निपुण २४१. नारायण भगवान् २४२. धर्मपुत्र २४३. धर्मपत्नी मूर्ति के यश को फैलाने वाले।।५५।।

सहस्त्रकवचच्छेदी तपःसारो नरप्रियः।
विश्वानंदप्रदः कर्मसाक्षी भारतपूजितः।।५६।।

२४४. हजारों कवचों का भेदन करने वाले २४५. तप के सारवाले २४६. नरप्रिय २४७. विश्व को आनंद प्रदान करने वाले २४८. समस्त कर्मों के साक्षी स्वरुप २४९. महाभारत युद्ध में पूजनीय।।५६।।

अनंताद्भुतमाहात्म्यो बदरीस्थानभूषणम्।
जितकामो जितक्रोधो जितसंगो जितेन्द्रियः।।५७।।

२५०. अनंत एवं अद्भुत माहात्म्य वाले २५१. बदरिकाश्रम के भूषणरूप २५२. कामदेव के विजेता २५३. क्रोध को जीतने वाले २५४. विषयों के संग को जीतने वाले २५५. इन्द्रियों को जीतने वाले।।५७।।

उर्वशीप्रभवः स्वर्गसुखदायी स्थितिप्रदः।
अमानी मानदो गोप्ता भगवच्छास्त्रबोधकः।।५८।।

२५६. उर्वशी अप्सरा को उत्पन्न करने वाले २५७. स्वर्ग में रहने वालों को आनंद देने वाले २५८. उर्वशी को स्वर्ग में पद देने वाले २५९. निरभिमानी २६०. सबको मान देने वाले २६१. दुष्टों से रक्षा करने वाले २६२. भगवद् शास्त्र का बोध कराने वाले।।५८।।

ब्रह्मादिवन्द्यो हंसः श्रीर्मायावैभवकारणम्।
विविधानंतसर्गात्मा विश्वपूरणतत्परः।।५९।।

२६३. ब्रह्मादि द्वारा वंदनीय २६४. हंसरूप २६५. लक्ष्मीरूप २६६. माया का वैभव करने वाले २६७. विविध प्रकार की अनंत सृष्टि में गमनीय २६८. विश्वंभर।।५९।।

यज्ञजीवनहेतुश्च यज्ञस्वामीष्टबोधकः।
नानासिद्धांतगम्यश्च सप्ततंतुश्च षड्गुणः।।६०।।

२६९. यज्ञ–जीवन के कारण रूप २७०. यज्ञ के स्वामी २७१. इष्ट (रूद्र) की प्रसन्नता के उपाय का बोध कराने वाले २७२. अलग–अलग सिद्धांतों से बोध गम्य २७३. सात प्रकार के यज्ञादि का विस्तार करने वाले २७४. षड्गुणों से युक्त।।६०।।

प्रतिसर्गजगत्कर्ता नानालीलाविशारदः।
ध्रुवप्रियो ध्रुवस्वामी चिंतिताधिकदायकः।।६१।।

२७५. हर एक सर्ग सृष्टि को प्रकट करने वाले २७६. विविध प्रकार की लीलाओं में चतुर २७७. ध्रुवभक्त को प्रिय २७८. ध्रुवभक्त

के परमात्मा २७९. मंन में कल्पित से भी अधिक फल देने वाले।।६१।।

दुर्लभानंतफलदो दयानिधिरमित्रहा।

अङ्ग.स्वामी कृपासारो वैन्यो भूमिनियामकः।।६२।।

२८०. दुर्लभ ऐसा अनंत फल देने वाले (जैसा कि ध्रुव को दिया) २८१. दया के सागर २८२. शत्रुओं का विनाश करने वाले २८३. अंगस्वामी २८४. कृपा करने वाले २८५. राजा वेन के पुत्र पृथुरूप २८६. भूमि को नियम में रखने वाले।।६२।।

भूमिदोग्धा प्रजाप्राणपालनैकपरायणः।

यशोदाता ज्ञानदाता सर्वधर्मप्रदर्शकः।।६३।।

२८७. भूमि (पृथ्वी) रूपी गाय का दोहन करने वाले २८८. प्रजा के प्राणों का पालन करने वाले २८९. यश देने वाले २९० ज्ञान देने वाले २९१. समस्त धर्मो को प्रदर्शित करने वाले।।६३।।

पुरंजनो जगन्मित्रं विसर्गान्तप्रदर्शकः।

प्रचेतसां ·पतिश्चित्रभक्तिहेतुर्जनार्दनः।।६४।।

२९२. शरीर को उत्पन्न करने वाले २९३. जगत् के मित्र रूप २९४. विशेष सृष्टि के अंत को बतलाने वाले २९५. प्रचेताओं के स्वामी २९६. विचित्र प्रकार की भक्ति के कारण रूप २९७. जनार्दन।।६४।।

स्मृतिहेतुब्रह्मभावसायुज्यादिप्रदः शुभः।

२९८. स्मृति द्वारा उत्पन्न ब्रह्मभाव से प्रचेताओं को सायुज्यादि मोक्ष देने वाले २९९. कल्याण रूप ३००. विजयी।

।। चतुर्थ स्कंध नामावली संपूर्णम् ।।

।। अतः परं पंचम स्कंधीयं नामानि ।।

विजयी स्थितिलीलाब्धिरच्युतो विजयप्रदः।।६५।।

३०१. स्थिति लीला के सागर ३०२. अच्युत ३०३. विजय देने वाले।।६५।।

स्वसामर्थ्यप्रदो भक्तकीर्तिहेतुरधोक्षजः।

प्रियव्रतप्रियस्वामी स्वेच्छावादविशारदः।।६६।।

३०४. प्रियव्रत राजा को स्वबल प्रदानकर्ता ३०५. भक्तों की कीर्ति के कारण रूप ३०६. अधोक्षज ३०७. प्रियव्रत राजा प्रिय स्वामी ३०८. स्वयं इच्छा के किए ब्रह्मवाद में निपुण।।६६।।

संग्यगम्यः स्वप्रकाशः सर्वसंगविवर्जितः।

इच्छायां च समर्यादस्त्यागमात्रोपलंभनः।।६७।।

३०९. संगी से भी अगम्य ३१०. स्वप्रकाशस्वरूप ३११. संसार के समस्त दुःसंगों से छुड़ाने वाले ३१२. भक्तों को मर्यादा में रखने वाले ३१३. समस्त दुःसंगों से रहित हो जाने पर प्राप्त होने वाले।।६७।।

अचिन्त्यकार्यकर्ता च तर्कागोचरकार्यकृत।

शृङ्गाररसमर्यादा आग्निध्ररसभाजनम्।।६८।।

३१४. अचिन्त्य कार्यकर्ता ३१५. तर्क से भी न जानने योग्य कार्य करने वाले ३१६. श्रृंगार रस के मर्यादा रूप ३१७. आग्नीध्र राजा के रस के पात्र स्वरूप।।६८।।

नाभीष्टपूरकः कर्ममर्यादादर्शनोत्सुकः।

सर्वरूपोऽदभुततमो मर्यादापुरुषोत्तमः।।६९।।

३१८. नाभिराज की इच्छा पूर्ण करने वाले ३१९. कर्म मार्ग की मर्यादा दिखाने में उत्सुक ३२०. सर्व स्वरूप ३२१. अत्यन्त अदभुत ३२२. वेद मार्ग रक्षक मर्यादा पुरुषोत्तम।।६९।।

सर्वरूपेषु सत्यात्मा कालसाक्षी शशिप्रभः।
मेरुदेवीव्रतफलमृषभो भगलक्षणः।।७०।।

३२३. ब्राह्मणादि सर्व रूपों में सत्य स्वरूप ३२४. काल के साक्षी ३२५. चन्द्रमा के समान कांतिमान ३२६. नाभिराज की पत्नी मेरुदेवी के व्रतों के फलस्वरूप ऋषभदेव स्वरूप ३२७. सर्वश्रेष्ठ ऋषभदेव ३२८. छः प्रकार के ऐश्वर्यो के लक्षणों से युक्त।।७०।।

निम्नलिखित छः ऐश्वर्यादि कहे जाते हैं–

{ ऐश्वर्यस्य समग्रस्य वीर्यस्य यशसः श्रियः।
ज्ञानवैराग्ययोश्चैव षण्णां भग इति स्मृतिः।। }

जगत्सन्तर्पको मेघरूपी देवेन्द्रदर्पहा।
जयन्तीपतिरत्यन्तप्रमाणाशेषलौकिकः।।७१।।

३२९. जगत को तृप्त करने वाले ३३०. घनश्याम ३३१. मेघराज इन्द्र का गर्व हरण करने वाले ३३२. जयंती के पति ३३३. लौकिक प्रमाणों को सर्वथा अमान्य करने वाले।।७१।।

शतधान्यस्तभूतात्मा शतानन्दो गुणप्रसूः।
वैष्णवोत्पादनपरः सर्वधर्मोपदेशकः।।७२।।

३३४. सौ प्रकार से शरीर में आत्मा को स्थापना करने वाले ३३५. सौ पुत्रों से आनन्द प्राप्त करने वाले ३३६. गुण को जन्म देने वाले ३३७. वैष्णवों के लिये जन्म देने वाले ३३८. सर्वधर्म का उपदेश देने वाले।।७२।।

परहंसक्रियागोप्ता योगचर्याप्रदर्शकः।
चतुर्थाश्रमनिर्णेता सदानन्दशरीरवान्।।७३।।

३३९. परमहंस की क्रियाओं के संरक्षक ३४०. भक्ति योग के आचरण को बतलाने वाले ३४१. चतुर्थाश्रम संन्यास के निर्णायक ३४२. सदैव आनन्द रूप शरीर धारी।।७३।।

प्रदर्शितान्यधर्मश्च भरतस्वाम्यपारकृत्।
यथावत्कर्मकर्ता च सङ्गानिष्टप्रदर्शकः।।७४।।

३४३. दूसरों को धर्म दिखाने वाले अर्थात् उनकी धर्म में प्रवृत्ति करने वाले ३४४. भरत के स्वामी ३४५. संसार रूपी अपार समुद्र में से पार कराने वाले ३४६. श्रौत स्मार्त वेदोक्त कर्म कराने वाले ३४७. दु:संगति से बचाने वाले।।७४।।

आवश्यकपुनर्जन्मकर्ममार्गप्रदर्शकः।
यज्ञरूपमृगः शान्तः सहिष्णुः सत्पराक्रमः।।७५।।

३४८. कर्म फल के लिए आवश्यक पुर्नजन्म द्वारा कर्म मार्ग बतलाने वाले ३४९. यज्ञ रूप मृग जड़ भरत स्वरूप ३५०. शांताकार ३५१. सहिष्णु ३५२. अलौकिक पराक्रम करने वाले।।७५।।

रहूगणगतिज्ञश्च रहूगणविमोचकः।
भवाटवीतत्ववक्ता बहिर्मुखहिते रतः।।७६।।

३५३. रहूगण राजा की गति जानने वाले ३५४. रहूगण राजा को मुक्ति देने वाले ३५५. संसार रूपी वन के तत्व को कहने वाले ३५६. बहिर्मुख वृत्ति वालों के भी कल्याण में रत रहने वाले।।७६।

गयस्वामी स्थानवंशकर्ता स्थानविभेदकृत्।
पुरुषावयवो भूमिविशेषविनिरूपकः।।७७।।

३५७. गयराजा के स्वामी ३५८. स्थान (धर्म) के लिए गयराजा के वंश को उत्पन्न करने वाले ३५९. स्थान के अलग–अलग भेद करने वाले ३६०. पुरुष विराट रूप अर्थात् ब्रह्माण्डमय स्वरूप के अवयव रूप ३६१. भूमि का विशेष प्रकार से निरूपण करने वाले।।७७।।

जंबूद्वीपपतिर्मेरुनाभिपद्मरुहाश्रयः।
नानाविभूतिलीलाढ्यो गंगोत्पत्तिनिदानकृत्।।७८।।

३६२. जम्बूद्वीप पति ३६३. इला वर्ष के मध्य भाग में कमल की तरह उत्पन्न मेरू स्वरूप .३६४. विविध लीलाओं से परिपूर्ण ३६५. गंगाजी की उत्पत्ति करने वाले।।७८।।

गङ्गामाहात्म्यहेतुश्च गङ्गारूपोऽतिगूढकृत्।
वैकुण्ठदेहहेत्वम्बुजन्मकृत् सर्वपावनः।।७६।।

३६६. गंगाजी के माहात्म्य के कारण ३६७. गंगाजी के स्वरूप ३६८. गुप्त पापों का नाश करने वाले ३६६. वैकुण्ठ धाम की प्राप्ति योग्य देह के लिए गंगाजल को उत्पन्न करने वाले ३७०. सबको पवित्र कर देने वाले।।७६।।

शिवस्वामी शिवोपास्यो गूढ़ः संकर्षणात्मकः।
स्थानरक्षार्थमत्स्यादिरूपः सर्वैकपूजितः।।८०।।

३७१. शिवजी के स्वामी ३७२. शिवजी के उपास्य प्रभु ३७३. गुप्त स्वरूप प्रभु ३७४. संकर्षण भगवान् ३७५. स्थान् द्वीपादि के रक्षक मत्स्यावतार ग्रहण करने वाले .३७६. सब भक्तों द्वारा एक समान पूजनीय (सेवनीय)।।८०।।

उपास्यनानारूपात्मा ज्योतिरूपो गतिप्रदः
सूर्यनारायणो वेदकांतिरुज्ज्वलवेषधृक्।।८१।।

३७७. उपासना के योग्य नाना रूपावतारादि धारण करने वाले ३७८. ज्योति रूप ३७६. उत्तरायण तथा दक्षिणायन की गति की तरह फल देने वाले ३८०. सूर्यनारायण ३८१. चारों वेद ऋक्, यजुः, साम, तथा अथर्व की कांतिवाले ३८२. उज्ज्वल स्वरूप धारण करने वाले।।८१।।

हंसोऽन्तरिक्षगमनः सर्वप्रसवकारणम्।
आनंदकर्ता वसुदो बुधो वाक्पतिरुज्ज्वलः।।८२।।

३८३. हंसावतार ३८४. अंतरिक्ष में गमन करने वाले ३८५. समस्त प्राणीमात्र को उत्पन्न करने वाले ३८६. आनन्द करने

वाले ३८७. धान्य देने वाले, मंगल ३८८. बुध ३८६. गुरु ३६०. शुक्र ।।८२।।

कालात्मा कालकालश्च कालच्छेदकृदुत्तमः।
शिशुमारः सर्वमूर्तिराधिदैविकरूपधृक्।।८३।।

३६१. काल स्वरूप शनि ३६२. काल के काल ३६३. काल का छेदन कर राहु एवं केतु ग्रहों को प्रकट करने वाले ३६४. उत्तम शिशुमार चक्र (राहु) ३६५. शिशुमार ३६६. सर्वमूर्ति ३६७. आधिदैविक रूप को धारण करने वाले।।८३।।

अनंतसुखभोगाढ्यो विवरैश्वर्यभाजनम्।
सङ्क.र्षणो दैत्यपतिः सर्वाधारो बृहद्वपुः।।८४।।

३६८. अनन्त सुख के भोग में समृद्ध ३६६. अतलादि विविध के ऐश्वर्य के आश्रय ४००. संकर्षण ४०१. दैत्यपति ४०२. सर्वाधार ४०३. विशाल शरीर वाले।।८४।।

अनन्तनरकच्छेदी स्मृतिमात्रार्तिनाशनः।
सर्वानुग्रहकर्ता च.....................

४०४. असंख्यनरक की यातनाओं के विनाशक ४०५. स्मरण करने मात्र से पीड़ाओं को हरने वाले ४०६. सबके ऊपर अनुग्रह करने वाले।

॥ पंचम स्कंध नामावली सम्पूर्णम् ॥

॥ अतः परं षष्ठ स्कन्धीय नामानि ॥

सर्वानुग्रह कर्ताच मर्यादाभिन्नशास्त्रकृत।।८५।।

४०७. मर्यादा से अलग शास्त्रों के रचयिता।।८५।।

कालान्तकभयच्छेदी नामसामर्थ्यरूपधृक्।
उद्धारानर्हगोप्त्रात्मा नामादिप्रेरकोत्तमः।।८६।।

४०८. जन्म तथा मृत्यु (कालान्तक) के भय को दूर करने वाले ४०६. नामानुसार समर्थ रूप धारण करने वाले ४१०. अयोग्य जीवों का भी उद्धार करने वाले ४११. नाम स्मरण साधनों के उत्तम प्रेरक।।८६।।

अजामिलमहादुष्टमोचकोऽघविमोचकः।
धर्मवक्ताऽक्लिष्टवक्ता विष्णुधर्मस्वरूपधृक्।।८७।।

४१२. महादुष्ट अजामिल को पापों से बचाने वाले ४१३. स्त्रीसंग रूपी पाप से अजामिल को छुड़ाने वाले ४१४. धर्म के मर्म को प्रकट करने वाले ४१५. शास्त्रानुसार तत्व को बतलाने वाले ४१६. वैष्णव धर्म के स्वरूप को धारण करने वाले।।८७।।

सन्मार्गप्रेरको धर्ता त्यागहेतुरधोक्षजः।
वैकुण्ठपुरनेता च दाससंवृद्धिकारकः।।८८।।

४१७. सन्मार्ग के प्रेरक ४१८. भक्तों को अपनाने वाले ४१६. विषय को छुड़ाने वाले ४२०. स्वतंत्र ज्ञानवान ४२१. वैकुण्ठ के अधिष्ठाता ४२२. निजभक्तों (दासों) की संवृद्धि करने वाले।।८८।।

दक्षप्रसादकृद्धंसगुह्यस्तुतिविभावनः।
स्वाभिप्रायप्रवक्ता च मुक्तजीवप्रसूतिकृत्।।८६।।

४२३. दक्ष पर कृपा करने वाले ४२४. 'हंस–परमात्मा के संबंध में गुप्त स्तुति प्रेरक ४२५. अपने अभिप्राय को स्पष्ट कहने वाले ४२६. मुक्त जीवों को उत्पन्न करने वाले।।८६।।

नारदप्रेरणात्मा च हर्यश्वब्रह्म भावनः।
शबलाश्वहितो गूढवाक्यार्थज्ञापनक्षमः।।६०।।

४२७. श्रीनारदजी को प्रेरणा देने वाले ४२८. हर्यश्वों में ब्रह्मभाव उत्पन्न करने वाले ४२६. सुबलाश्वों के हितकर्ता

४३०. श्रीनारदजी के गूढ़ वाक्यार्थों को स्पष्ट करने में सक्षम।।६०।।

गूढार्थज्ञापकः सर्वमोक्षानन्दप्रतिष्ठितः।
पुष्टिप्ररोहहेतुश्च दासैकज्ञातहृद्‌गतः।।६१।।

४३१. गूढ़ार्थ को बतलाने वाले ४३२. सब हर्यश्वादि के मोक्ष से नारदजी को आनंद देने वाले ४३३. पुष्टिमार्गीय सृष्टि के कारण रूप ४३४. केवल भक्त (दास) के द्वारा ही ज्ञानपूर्वक हृदय में रहने वाले।।६१।।

शांतिकर्ता सुहितकृत स्त्रीप्रसूः सर्वकामधुक्।
पुष्टिवंशप्रणेता च विश्वरूपेष्टदेवता।।६२।।

४३५. शांतिकर्ता ४३६. सबका कल्याण करने वाले ४३७. स्त्रियों को उत्पन्न करने वाले ४३८. सबकी कामनाओं की पूर्ति करने वाले ४३९. अनुग्रह द्वारा वंश का विस्तार करने वाले ४४०. विश्वरूप के इष्ट देवता, भगवान् नारायण।।६२।।

कवचात्मा पालनात्मा वर्मोपचितिकारणम्।
विश्वरूपशिरश्छेदी त्वाष्ट्रयज्ञविनाशकः।।६३।।

४४१. कवचरूपी भगवान् नारायण ४४२. पालक ४४३. कवच की वृद्धि करने वाले प्रभु ४४४. विश्वरूप के शिर को छेदने वाले ४४५. त्वष्टा के यज्ञ को भंग करने वाले।।६३।।

वृत्रस्वामी वृत्रगम्यो वृत्रव्रतपरायणः।
वृत्रकीर्तिर्वृत्रमोक्षो मघवत्प्राणरक्षकः।।६४।।

४४६. वृत्रासुर के स्वामी ४४७. वृत्रासुर को शरण देने वाले ४४८. वृत्रासुर के व्रत को पूर्ण करने वाले ४४९. वृत्रासुर की कीर्ति स्वरूप ४५०. वृत्रासुर को मोक्ष देने वाले ४५१. इन्द्र के प्राण रक्षक।।६४।।

अश्वमेधहविर्भोक्ता देवेन्द्रामीवनाशकः।
संसारमोचकश्चित्रकेतुबोधनतत्परः।।६५।।

४५२. अश्वमेध यज्ञ की हविकेभोक्ता ४५३. इन्द्र को लगी ब्रह्महत्या के विनाशक ४५४. संसार से मुक्ति दिलाने वाले ४५५. चित्रकेतु राजा को उद्‌बोध करने वाले।।६५।।

मंत्रसिद्धिःसिद्धिहेतुः सुसिद्धिफलदायकः।
महादेवतिरस्कर्ता भक्त्यै पूर्वार्थनाशकः।।६६।।

४५६. मंत्र की सिद्धि देने वाले ४५७. सिद्धि के कारण रूप ४५८. योग्य सिद्धि का फल देने वाले ४५६. महादेव का भी तिरस्कार करने वाले ४६०. भक्ति की प्राप्ति के हेतु पूर्व संपत्ति का नाश करने वाले।।६६।।

देवब्राह्मणविद्वेषवैमुख्यज्ञापकः शिवः।
आदित्यो दैत्यराजश्च मरुत्पतिरचिन्त्यकृत्।।६७।।

४६१. देव, ब्राह्मणों का अपमान करने वाले को अपने से अलग करने वाले ४६२. परम मंगलस्वरूप ४६३. आदित्य ४६४. दितिपुत्र प्रहलाद के समान शोभायमान ४६५. वायु (मरुत्) के स्वामी ४६६. आश्चर्यजनक कार्य करने वाले।।६७।।

मरुतां भेदकस्त्राता व्रतात्मा पुंप्रसूतिकृत्।

४६७. वायु के ४६ भेद करने वाले ४६८. रक्षणकर्ता ४६६. पुंसवन व्रतस्वरूप ४७०. पुं (पुरुष) पुत्र को जन्म देने वाले।

।। षष्ठ स्कंध नामावली सम्पूर्णम् ।।

।। अतः परं सप्तमस्कन्धीय नामानि ।।

कर्मात्मा वासनात्मा च ऊतिलीलापरायणः।।६८।।

४७१. कर्मात्मा ४७२. वासनात्मा ४७३. ऊति लीला परायण अर्थात् कर्मवासनारूपी लीला में निपुण (द्वि.स्कंध अ.२) में कहा गया है।। ऊतयः कर्मवासनाः।।६८।।

समदैत्यसुर स्वात्मा वैषम्यज्ञानसंशयः।
देहाद्युपाधिरहितः सर्वज्ञः सर्वहेतुवित्।।६६।।

४७४. देवता और दैत्यों के लिये समान रूप ४७५. स्वात्मा ४७६. सम तथा विषम ज्ञान के आश्रयरूप ४७७. देहादि उपाधि (अहं) से रहित प्रभु ४७८. सर्वज्ञ ४७६. सबके हितों (हेतु को) को जानने वाले।।६६।।

ब्रह्मवाक्स्थापनपरः स्वजन्मावधिकार्यकृत्।
सदसद्वासनाहेतुस्त्रिसत्यो भक्तमोचकः।।१००।।

४८०. ब्राह्मणों की वाणी की स्थापना में तत्पर ४८१. स्वयं के जन्मादि (अवतारादिं) के कार्य को करने वाले ४८२. सद् तथा असत् (अच्छी और बुरी) वासनाओं के कारण ४८३. तीन अवतारों से ब्राह्मणों के वचन को सत्य करने वाले ४८४. भक्तों (जय विजय) को मुक्त करने वाले।।१००।।

हिरण्यकशिपुद्वेषी प्रविष्टात्माऽतिभीषणः।
शांतिज्ञानादिहेतुश्च प्रह्लादोत्पत्तिकारणम्।।१०१।।

४८५. हिरण्यकशिपु के द्वेषी ४८६. स्वयं को सर्वत्र प्रविष्ट करने वाले ४८७. हिरण्यकशिपु को डराने वाले ४८८. शांति एवं ज्ञान के रूप ४८६. प्रहलादजी के उत्पति के कारण।।१०१।।

दैत्यसिद्धांतसद्वक्ता तपः सार उदारधीः।
दैत्यहेतुप्रकटनो भक्तिचिन्हप्रकाशकः।।१०२।।

४६०. द्वैतवादी दैत्यों को शुद्ध–सिद्धांत को बतलाने वाले ४६१. तप के सार रूप ४६२. उदार ४६३. दैत्य हेतु को प्रकट करने वाले ४६४.. भक्ति लक्षणों के प्रकाशक।।१०२।।

सद्द्वेषहेतुः सद्द्वेषवासनात्मा निरन्तरः।
नैष्ठुर्यसीमा प्रह्लादवत्सलः सङ्गदोषहा।।१०३।।

४६५. सद्दैत्य प्रहलादजी में सद्द्वैष उत्पन्न करने वाले ४६६. सद्द्वेषवासनात्मा ४६७. दैत्यों से सर्वथा भिन्न ४६८. निष्ठुरता की सीमा ४६६. प्रहलादजी को पुत्रवत् प्रीति प्रदान करने वाले ५००. संगदोष को हरने वाले।।१०३।।

महानुभावः साकारः सर्वाकारः प्रमाणभूः।
स्तम्भप्रसूतिर्नृहरिर्नृसिंहो भीमविक्रमः।।१०४।।

५०१. महानुभाव ५०२. साकार ५०३. सर्वाकार ५०४. प्रमाणभूत ५०५. स्तंभ से प्रकट होने वाले ५०६. नरहरि ५०७. नरसिंह अवतार धारण करने वाले ५०८. भयंकर पराक्रम करने वाले।।१०४।।

विकटास्यो ललज्जिह्वो नखशस्त्रो जवोत्कटः।
हिरण्यकशिपुच्छेदी क्रूरदैत्यनिवारकः।।१०५।।

५०६. विकट मुखवाले ५१०. लंबी जिह्वा वाले ५११. नखायुधवान ५१२. उत्कट वेग वाले ५१३. हिरण्यकशिपु के मस्तक को विदीर्ण करने वाले ५१४. क्रूर दैत्यों का विनाश करने वाले।।१०५।।

सिंहासनस्थः क्रोधात्मा लक्ष्मीभयविवर्धनः।
ब्रह्माद्यत्यन्तभयभूरपूर्वाचिन्त्यरूपधृक्।।१०६।।

५१५. सिंहासन पर विराजमान ५१६. क्रोध से परिपूर्ण ५१७. लक्ष्मीजी के भय को बढ़ाने वाले ५१८. ब्रह्मादि को अत्यंत भीति उत्पन्न करने वाले ५१६. पूर्व में न सोचे गए—आश्चर्यजनक रूपों को धारण करने वाले।।१०६।।

भक्तैकशांतहृदयोभक्तस्तुत्यः स्तुतिप्रियः।
भक्ताङ्गलेहनोद्भूतक्रोधपुञ्जः प्रशांतधीः।।१०७।।

५२०. केवल भक्त के लिए ही शांत हृदय वाले ५२१. भक्त के द्वारा स्तुत्य ५२२. स्तुति प्रिय ५२३. भक्त के अंगलेहन से

संपूर्ण क्रोध दूर कर देने वाले ५२४. प्रशांत बुद्धि वाले।।१०७।।

स्मृतिमात्रभयत्राता ब्रह्मबुद्धिप्रदायकः।
गोरूपधार्यमृतपाः शिवकीर्तिविवर्धनः।।१०८।।

५२५. स्मरण मात्र से भय को दूर करने वाले ५२६. ब्रह्म की बुद्धि प्रदान करने वाले ५२७. गोरूप धारण करने वाले ५२८. अमृत पान करने वाले ५२९ शिव–कीर्ति को बढ़ाने वाले।।१०८।।

धर्मात्मा सर्वकर्मात्मा विशेषात्माश्रमप्रभुः।
संसारमग्नस्वोद्धर्ता सन्मार्गाखिलतत्त्ववाक्।।१०९।।

५३०. धर्मात्मा ५३१. सर्वकर्मात्मा ५३२. विशिष्ट धर्म स्वरूप ५३३. आश्रमों के स्वामी ५३४. संसारमग्न स्वभक्तों के उद्धारक ५३५. सन्मार्ग की अखिल तत्ववाणी स्वरूप।।१०९।।

।।सप्तम स्कंध नामावली सम्पूर्णम्।।

आचारात्मा सदाचारो--------

५३६. आचार ज्ञान स्वरूप आत्मा ५३७. सदाचार स्वरूप

।। अतः परं अष्टम स्कन्धीय नामानि ।।

---------मन्वन्तरविभावनः।।
स्मृत्याशेषाशुभहरो गजेन्द्रस्मृतिकारणम्।।११०।।

५३८. मन्वन्तरों के कर्ता ५३९. स्मरण मात्र से सब अशुभों के हर्ता ५४०. गजेन्द्र को भगवत्स्मृति कराने वाले।।११०।।

जातिस्मरणहेत्वेकपूजा भक्तिस्वरूपदः।
यज्ञो भयान्मनुत्राता विभुर्ब्रह्मव्रताश्रयः।।१११।।

५४१. पूर्व जाति स्मरण में कारण रूप ५४२. पूजा (सेवा) भक्ति द्वारा स्वरूप का दान देने वाले ५४३. यज्ञस्वरूप ५४४. भय से मनु का संरक्षण करने वाले ५४५. सर्वसमर्थ ५४६. ब्रह्मचारियों के व्रत के आश्रय रूप।।१११।।

सत्यसेनो दुष्टघाती हरिर्गजविमोचकः।
वैकुण्ठो लोककर्ता च, अजितोऽमृतकारणम्।।११२।।

५४७. सत्यवादियों की सेना ५४८. दुष्टों का दमन करने वाले ५४९. हरि स्मरण से क्लेश को दूर करने वाले ५५०. गजेन्द्र को मोक्ष देने वाले ५५१. विकुंठा के पुत्र ५५२. वैकुण्ठलोक के कर्ता ५५३. अजेय ५५४. अमृत को उत्पन्न करनें वाले।।११२।।

उरुक्रमो भूमिहर्ता सार्वभौमो बलिप्रियः।
विभुः सर्वहितैकात्मा विष्वक्सेनः शिवप्रिय।।११३।।

५५५. विस्तार वाले पद को धारण करने वाले अर्थात् वामनावतार को धारण करने वाले ५५६. भूमि को हरण करने वाले ५५७. बलि राजा से पृथ्वी को लेने वाले ५५८. बलि के प्रिय ५५९. सब प्राणियों के हित में चित्त देने वाले ५६०. विभु रूप अर्थात् व्यापक ५६१. संर्वत्र विशाल सेना वाले ५६२. शिव को प्रिय।।११३।।

धर्म सेतुर्लोकधृतिः सुधामान्तरपालकः।
उपहर्ता योगपतिर्बृहद्भानुः क्रियापतिः।।११४।।

५६३. धर्म सेतु ५६४. त्रिभुवन को धारण करने वाले ५६५. सुधामा नामक बारहवें मनु के पालक ५६६. सबंको सुख देने वाले योगपति ५६७. बृहद् भानु ५६८. यज्ञ क्रिया के स्वामी।।११४।।

चतुर्दशप्रमाणात्मा धर्मो मन्वादिबोधकः।
लक्ष्मीभोगैकनिलयो देवमन्त्रप्रदायकः।।११५।।

५६९. चौदह प्रमाणों के स्वरूप वाले ५७०. धर्म स्वरूप ५७१. मन्वादिकों को बोध देने वाले ५७२. लक्ष्मीज़ी के भोग के स्थान पर ५७३. देवमंत्र देने वाले।।११५।।

दैत्यव्यामोहकःसाक्षाद्गरुडस्कन्धसंश्रयः।
लीलामन्दरधारी च दैत्यवासुकिपूजितः।।११६।।

५७४. दैत्यों को व्यामोह उत्पन्न करने वाले ५७५. साक्षात्गरुड–जी के स्कंध पर विराजमान ५७६. लीला से मंदराचल धारण करने वाले (भगवान् समुद्र मंथन के समय इस पर्वत को क्षीर सागर के पार ले गये थे) ५७७. दैत्यों के सामर्थ्य को दूर करने हेतु वासुकी सर्प द्वारा पूजित।।११६।।

समुद्रोन्मथनायतोऽविघ्नकर्ता स्ववाक्यकृत्।
आदिकूर्मः पवित्रात्मा मन्दराघर्षणोत्सुकः।।११७।।

५७८. समुद्र–मंथन करने में तत्पर ५७६. अविघ्नकर्ता ५८०. स्वयं की वाणी को यथार्थ करने वाले ५८१. पवित्र कूर्म (कच्छप) रूप धारण करने वाले अर्थात् कूर्मावतार लेने वाले आदि वाले ५८२. मंदराचल के घर्षण को उत्साह पूर्वक सहन करने वाले।।११७।।

श्वासैजदब्धिवार्वीचिः कल्पान्तावधिकार्यकृत्।
चतुर्दशमहारत्नो लक्ष्मीसौभाग्यवर्धनः।।११८।।

५८३. श्वासों के द्वारा समुद्र में तरगें उत्पन्न करने वाले ५८४. कलपांत तक कार्य करने वाले ५८५. चौदह रत्नों (१–लक्ष्मी २–कौस्तुभ मणि ३–पारिजात वृक्ष ४–सुरा ५–धन्वन्तरी वैद्य ६–चन्द्रमा ७–कामधेनु गाय ८–ऐरावत हाथी ९–रंभा १०–उच्चैश्रवा नामक घोड़ा ११–अमृत १२–सारंग धनुष १३–पांचजन्य शंख तथा १४–हलाहल (कालकूट विष) को प्रकट करने वाले ५८६. लक्ष्मी से सौभाग्य को बढ़ाने वाले।।११८।।

धन्वन्तरिः सुधाहस्तो यज्ञभोक्तार्तिनाशनः।
आयुर्वेदप्रणेता च देवदैत्याखिलार्चितः।।११९।।

५८७. धन्वन्तरि रूप ५८८. हस्त में अमृत कलशधारण करने वाले ५८९. यज्ञ के भोक्ता ५९०. मन की आर्त भावना को दूर करने वाले ५९१. आयुर्वेद के रचयिता ५९२. सर्व देव–दैत्यों से पूजित।।११९।।

बुद्धिव्यामोहको देवकार्यसाधनतत्परः।
स्त्रीरूपो मायया वक्ता दैत्यांतः करणप्रियः।।१२०।।

५९३. दैत्यों की बुद्धि में मोह उत्पन्न करने वाले ५९४. देवों को अमृत पान करवाने में तत्पर ५९५. मोहिनी रूप धारण करने वाले ५९६. माया से बोलने वाले ५९७. दैत्यों के अन्तःकरण को प्रिय लगने वाले।।१२०।।

पायितामृतदेवांशो युद्धहेतु स्मृतिप्रदः।
सुमालिमालिवधकृन्माल्यवत्प्राणहारकः।।१२१।।

५९८. अमृत रूप देवांश का देवताओं को पान कराने वाले ५९९. मोहिनी रूप द्वारा युद्ध की स्मृति करने वाले ६००. सुमाली और माली दैत्यों का वध करने वाले ६०१. माल्यवान के प्राणहारक।।१२१।।

कालनेमिशिरश्छेदी दैत्ययज्ञविनाशकः।
इन्द्रसामर्थ्यदाता च दैत्यशेषस्थितिप्रियः।।१२२।।

६०२. कालनेमी का शिरच्छेद कराने वाले ६०३. दैत्यराज बलि के यज्ञ को विनष्ट करने वाले ६०४. इन्द्र को दैत्यविनाश के लिए शक्ति देने वाले ६०५. युद्ध में शेष दैत्यों की स्थिति के प्रिय।।१२२।।

शिवव्यामोहको मायी भृगुमंत्रस्वशक्तिदः।
बलिजीवनकर्ता च स्वर्गहेतुर्व्रतार्चितः।।१२३।।

६०६. शिवजी को व्यामोह उत्पन्न कराने वाले ६०७. मायावी ६०८. भृगु को मंत्र में स्वयं की शक्ति देने वाले ६०९.

बलि राजा को जीवन दान देने वाले ६१०. स्वर्ग के कारण रूप ६११. व्रत द्वारा अर्चित।।१२३।।

आदित्यानंदकर्ता च कश्यपादितिसंभवः।
उपेन्द्रइन्द्रावरजो वामनोब्रह्मरूपधृक्।।१२४।।

६१२. अदिति माता को आनंद देने वाले ६१३. कश्यप तथा अदिति के निमित्त प्रकट होने वाले ६१४. इन्द्र के छोटे भाई उपेन्द्र ६१५. इन्द्र के बाद उत्पन्न ६१६. वामन रूप धारी।।१२४।।

ब्रह्मादिसेवितवपुर्यज्ञपावनतत्परः।
याञ्चोपदेशकर्ता च ज्ञापिता शेषसंस्थितिः।।१२५।।

६१७. ब्रह्मादि द्वारा पूजित शरीर धारण करने वाले ६१८. यज्ञ को पवित्र करने में तत्पर ६१६. याचना के बहाने उपदेश देने वाले ६२०. स्वयं के प्रादुर्भाव से सम्पूर्ण कर्मों की स्थिति को बतलाने वाले।।१२५।।

सत्यार्थप्रेरकः सर्वहर्ता गर्वविनाशकः।
त्रिविक्रमस्त्रिलोकात्मा विश्वमूर्तिः पृथुश्रवाः।।१२६।।

६२१. सत्य संकल्प रूप अर्थ प्रेरणा देने वाले ६२२. तीन पद में राजा बलि से सब हरने वाले ६२३. गर्व का विनाश करने वाले ६२४. त्रिविक्रम रूप वामनजी ६२५. त्रिलोकी ६२६. विश्वमूर्ति ६२७. विस्तीर्ण यश वाले।।१२६।।

पाशवद्धबलिः सर्वदैत्यपक्षोपमर्दकः।
सुतलस्थापितबलिः स्वर्गाधिकसुखप्रदः।।१२७।।

६२८. राजा बलि को वरुण पाश में बांधने वाले ६२६. सारे दैत्यों के समूह का मर्दन करने वाले ६३०. सुतल में बलि को स्थापित करने वाले ६३१. और वहां स्वर्ग से भी अधिक सुख देने वाले।।१२७।।

कर्मसम्पूर्तिकर्ता च स्वर्गसंस्थापितामरः।
ज्ञातत्रिविधधर्मात्मा महामीनोऽब्धिसंश्रयः।।१२८।।

६३२. कर्म की पूर्ति करने वाले ६३३. स्वर्ग में पुनः देवताओं की स्थापना करने वाले ६३४. त्रिविध धर्म अर्थात् सात्विक, राजस तथा तामस रूप द्वारा स्वयं का बोध करने वाले ६३५. मत्स्य रूप धारी ६३६. प्रलय के समय समुद्र में स्थान ग्रहण करने वाले।।१२८।।

सत्यव्रतप्रियो गोप्ता मत्स्यमूर्तिधृतश्रुतिः।
शृंङ्गबद्ध धृतक्षोणीः सर्वार्थज्ञापको गुरुः।।१२६।।

६३७. सत्यदेव के प्रिय ६३८. सप्तर्षियों के रक्षक ६३६. मत्स्यावतार द्वारा श्रुतियों को धारण करने वाले ६४०. सींग द्वारा डूबती पृथ्वी को बचाने वाले ६४१. धर्मार्थादि को स्पष्ट करने वाले ६४२. सबके गुणरूप ।।१२६।।

।। अष्टम स्कंध नामावली सम्पूर्णम् ।।

।। अतः परं नवम स्कंधीय नामानि ।।

ईशसेवकलीलात्मा सूर्यवंशप्रवर्तकः।
सोमवंशोद्भवकरो मनुपुत्रगतिप्रदः।।१३०।।

६४३. स्वामी तथा सेवक रूप लीलात्मा प्रभु ६४४. सूर्य वंश के प्रवर्तक ६४५. चन्द्रवंश की उत्पत्ति करने वाले ६४६. मनुपुत्र पृषध्र को सद्गति देने वाले।।१३०।।

अंबरीषप्रियः साधुर्दुर्वासागर्वनाशकः।
ब्रह्मशापोपसंहर्ता भक्तकीर्तिविवर्धनः।।१३१।।

६४७. अंबरीष राजा के प्रिय ६४८. साधु अर्थात् सब तरह से भक्तों के कार्य साधने वाले ६४६. दुर्वासा ऋषि के गर्व का नाश करने वाले ६५०. ब्राह्मण (दुर्वासा) के शाप का शमन

करने वाले ६५१. भक्त राज अंबरीष की कीर्ति को बढ़ाने वाले।।१३१।।

इक्ष्वाकुवंशजनकः सगराद्यखिलार्थदः।
भगीरथमहायत्नो गंगाधौताङ्घ्रिपङ्कजः।।१३२।।

६५२. इक्ष्वाकुवंश के जनक ६५३. सगरादि राजाओं के मनोरथ को सिद्ध करने वाले ६५४. भगीरथ राजा के महाप्रयत्न स्वरूप ६५५. गंगाजी के जल से प्रक्षालित चरण कमल वाले।।१३२।।

ब्रह्मस्वामी शिवस्वामी सगरात्मजमुक्तिदः।
खट्वांगमोक्षहेतुश्च रघुवंशविवर्धनः।।१३३।।

६५६. ब्रह्मनिष्ठ मुनियों के स्वामी ६५७. शिवजी के स्वामी ६५८. सगर राजा के साठ हजार (६००००) पुत्रों को मुक्ति देने वाले ६५९. खट्वांग को मोक्ष देने वाले ६६०. रघुवंश को बढ़ाने वाले।।१३३।।

रघुनाथो रामचन्द्रो रामभद्रो रघुप्रियः।
अनंतकीर्तिः पुण्यात्मा पुण्यश्लोकैकभास्करः।।१३४।।

६६१. रघुकुल के सर्वश्रेष्ठ नायक ६६२. श्रीरामचन्द्रजी ६६३. राम ही मंगल स्वरूप ६६४. रघुवंश के प्रिय ६६५. अखंड कीर्तिमान ६६६. पुण्यात्मा ६६७. पुण्यश्लोक स्वरूप प्रकाश मान सूर्य।।१३४।।

कोशलेन्द्रः प्रमाणात्मा सेव्यो दशरथात्मजः।
लक्ष्मणो भरतश्चैव शत्रुघ्नो व्यूहविग्रहः।।१३५।।

६६८. कौशल देश के राजा ६६९. वेदों के आत्मस्वरूप ६७०. सेव्य स्वरूप ६७१. दशरथ राजा के पुत्र ६७२. लक्ष्मणजी (पापों को दूर करने वाले) ६७३. भरतजी (भरण करने वाले) ६७४. शत्रुघ्नजी (शत्रुओं का वध करने वाले) ६७५. व्यूहसहित शरीर धारण करने वाले।।१३५।।

विश्वामित्रप्रियो दांतस्ताडकावधमोक्षदः।
वायव्यास्त्राब्धिनिक्षिप्तमारीचश्च सुबाहुहा।।१३६।।

६७६. विश्वामित्रजी के प्रिय ६७७. रावणादि राक्षसों का दमन करने वाले ६७८. ताड़का का वध कर उसे मोक्ष देने वाले ६७६. वायव्यास्त्र से मारीच को समुद्र में फेंकने वाले ६८०. सुबाहु का हनन करने वाले।।१३६।।

वृषध्वजधनुर्भङ्गप्राप्तसीतामहोत्सवः।
सीतापतिर्भुगुपतिगर्वपर्वतनाशकः।।१३७।।

६८१. शिवधनुष को तोड़कर सीताजी की प्राप्ति का महोत्सव मनाने वाले ६८२. सीताजी के पति राम ६८३. भृगुकुल नायक परशुरामजी के पर्वत तुल्य अभिमान का दर्प करने वाले।।१३७

अयोध्यास्थमहाभोगयुक्तलक्ष्मीविनोदवान्।
कैकयीवाक्यकर्ता च पितृवाक्परिपालकः।।१३८।।

६८४. अयोध्या नगरी के महान राज–वैभव से युक्त लक्ष्मीजी के साथ विनोद करने वाले ६८५. कैकयी के वचनों का पालन करने वाले ६८६. पिताजी के वचनों का भी पालन करने वाले।।१३८।।

वैराग्यबोधकोनन्यसात्विकस्थानबोधकः।
अहल्यादुःखहारी च गुहस्वामी सलक्ष्मणः।।१३६।।

६८७. वैराग्य का बोध देने वाले ६८८. निर्जन सात्विक वन स्थान के बोधक ६८६. अहिल्या के शाप दुःख को दूर करने वाले ६६०. गुहराज के ईश ६६१. लक्ष्मणजी के साथ वनवास करने वाले।।१३६।।

चित्रकूटप्रियस्थानो दण्डकारण्यपावनः।
शरभङ्गसुतीक्ष्णादिपूजितोऽगस्त्यभाग्यभूः।।१४०।।

६९२. चित्रकूट को प्रिय स्थान देने वाले ६९३. दण्डकारण्य को पवित्र करने वाले ६९४. शरभंग सुतीक्ष्णादि मुनियों से पूजित ६९५. अगस्त्य मुनि के भाग्यस्वरूप।।१४०।।

ऋषिसम्प्रार्थितकृतिर्विराधवधपण्डितः।
छिन्नशूर्पणखानासः खरदूषणघातकः।।१४१।।

६९६. राक्षसों के संहारार्थ ऋषि–मुनियों द्वारा प्रार्थना किये हुए ६९७. विराध राक्षस के वध में पंडित ६९८. शूर्पनखा की नाक काटने वाले ६९९. खर तथा दूषण को मारने वाले।।१४१।।

एकबाणहतानेकसहस्रबलराक्षसः।
मारीचघाती नियतसीतासंबंधशोभनः।।१४२।।

७००. एक बाण से अपरिमित बलशाली अनेक राक्षसों को मारने वाले ७०१. मारीच के संहारकर्ता ७०२. सदैव सीताजी के संबंध से शोभायमान्।।१४२।।

सीतावियोगनाट्यश्च जटायुर्वधमोक्षदः।
शबरीपूजितो भक्तहनुमत्प्रमुखावृतः।।१४३।।

७०३. सीताजी के वियोग में नट के समान अनुकृति करने वाले ७०४. जटायु गिद्ध को मारकर मोक्ष देने वाले ७०५. शबरी भीलनी द्वारा सत्कार किये हुए ७०६. हनुमान विभीषणादि द्वारा स्नेहालिंगन द्वारा शोभित।।१४३।।

दुंदुभ्यस्थिप्रहरणः सप्ततालविभेदनः।
सुग्रीवराज्यदो वालीघाती सागरशोषणः।।१४४।।

७०७. दुंदुभि राक्षस की अस्थि को अंगूठे से फेंक देने वाले ७०८. सात ताड़ों का एक बाण से भेदन करने वाले ७०९. सुग्रीव को राज्य देने वाले ७१०. बलि वानर को मारने वाले ७११. सागर का शोषण करने वाले।।१४४।।

सेतुबन्धनकर्ता च विभीषणहितप्रदः।
रावणादिशिरश्छेदी राक्षसाघौघनाशकः।।१४५।।

७१२. सेतु बंधनकर्ता ७१३. विभीषण का कल्याण करने वाले ७१४. रावण, कुम्भकर्णादि के शिरच्छेद करने वाले ७१५. राक्षसरूपी पाप समुदाय का नाश करने वाले।।१४५।।

सीताऽभयप्रदाता च पुष्पकागमनोत्सुकः।
अयोध्यापतिरत्यन्त सर्वलोक सुखप्रदः।।१४६।।

७१६. सीताजी को अभयदान देने वाले ७१७. पुष्पक विमान द्वारा अयोध्या में आने हेतु उत्सुक ७१८. अयोध्यापति ७१६. सब लोगों को अतिशय सुख देने वाले।।१४६।।

मथुरापुरनिर्माता सुकृतज्ञस्वरूपदः।
जनकज्ञानगम्यश्च ऐलांतप्रकटश्रुतिः।।१४७।।

७२०. बाणासुर को मार कर मथुरापुरी का निर्माण करने वाले ७२१. पुण्यात्माओं को स्वरुप दान देने वाले ७२२. प्रजा के पालक पिता के समान ज्ञान देने वाले ७२३. पाताल तक कीर्ति वाले अर्थात् "रामराज्य" को यर्थार्थ करने वाले।।१४७।।

हैहयान्तकरो रामो दुष्टक्षत्रविनाशकः।
सौमवंशहितैकात्मा यदुवंशविवर्धनः।।१४८।।

७२४. हैहया–कातवीर्य का विनाश करने वाले ७२५. श्रीराम ७२६. दुष्ट क्षत्रियों को नष्ट करने वाले ७२७. सोमवंश के हितकर्ता ७२८. यदुवंश की वृद्धि करने वाले प्रभु।।१४८।।

।। नवम स्कंध नामावली सम्पूर्णम् ।।

॥ अतः परं दशम स्कन्धीय नामानि ॥

परब्रह्मावतरणः केशवः क्लेशनाशनः।
भूमिभारावतरणो भक्तार्थाखिलमानसः॥१४६॥

(श्रीकृष्णावतार नामावली)

७२६. परब्रह्म स्वरूप अवतार ग्रहण करने वाले ७३०. केशव ७३१. क्लेश के नाशक ७३२. भूमि के भार को दूर करने हेतु अवतरित ७३३. भक्तों के लिए सम्पूर्ण चित्त वाले॥१४६॥

सर्वभक्तनिरोधात्मा लीलानंत निरोधकृत्।
भूमिष्ठपरमानन्दो देवकीशुद्धिकारणम्॥१५०॥

७३४. सब भक्तों के चित्त का निरोध (प्रभु का स्मरण तथा प्रपंच की विस्मृति) करने वाले ७३५. अनन्त लीलाओं द्वारा निरोध करने वाले १३६. भूतल पर भक्तजनों को अति आनन्द देने वाले १३७. देवकीजी की शुद्धि के कारण रूप भगवान् श्रीकृष्ण॥१५०॥

वसुदवज्ञाननिष्ठसमजीवनिवारकः।
सर्ववैराग्यकरणस्वलीलाधारशोधकः॥१५१॥

७३८. वसुदेवजी में ज्ञानरूप स्थित अपने ही समान अन्य छः जीवों के जीवन निवारक ७३६. विषयों में वैराग्य उत्पन्न करने वाले तथा स्वलीला के आधार देवकीजी की शुद्धि करने वाले॥१५१॥

मायाज्ञापनकर्ता च शेषसम्भारसम्भृतिः।
भक्तक्लेशपरिज्ञाता तन्निवारणतत्परः॥१५२॥

७४०. योगमाया को आज्ञा प्रदान करने वाले

७४१. देवकीजी के गर्भ को योग माया द्वारा रोहिणीजी में स्थापन

करने वाले ७४२. भक्तों के दुःख को यथार्थ रूप से जानने वाले ७४३. भक्तजनों के दुःखों को दूर करने में तत्पर ।।१५२।।

आविष्टवसुदेवांसो देवकीगर्भभूषणम्।
पूर्णतेजोमयः पूर्णः कंसाधृष्यप्रतापवान्।।१५३।।

७४४. अपना वंश वसुदेवजी में प्रविष्ट किये हुए ७४५. देवकीजी के गर्भ के भूषण ७४६. पूर्ण तेज स्वरूप ७४७. पूर्ण स्वरूप ७४८. कंस से भी ग्रहण करने में कठिन ऐसे प्रभाव वाले।।१५३।।

विवेकज्ञानदाता च ब्रह्माद्यखिलसंस्तुतः।
सत्यो जगत्कल्पतरूर्नानारूपविमोहनः।।१५४।।

७४९. कंस को विवेक एवं ज्ञान देने वाले ७५०. ब्रह्मादि समग्र देवताओं द्वारा स्तुत्य ७५१. सत्यस्वरूप ७५२. जड़ चेतन युक्त जगत के कल्पवृक्ष ७५३. विभिन्न स्वरूप से सबको विमोहित करने वाले।।१५४।।

भक्तिमार्गप्रतिष्ठाता विद्वन्मोहप्रवर्तकः।
मूलकालगुणद्रष्टा नयनानन्दभाजनम्।।१५५।।

७५४. भक्ति मार्ग के प्रतिष्ठाता ७५५. विद्वानों को मोहित करने वाले ७५६. आधारभूत मूल काल के गुणों के द्रष्टा ७५७. वसुदेवजी के नयनों को आनन्द देने वाले।।१५५।।

वसुदेवसुखाब्धिश्च देवकीनयनामृतम्।
पितृमातृस्तुतः पूर्वसर्ववृत्तांतबोधकः।।१५६।।

७५८. वसुदेवजी के सुख के सागर रूप ७५९. देवकीजी के नेत्रों को अमृत स्वरूप ७६०. जन्म समय पिता वसुदेवजी एवं माता देवकीजी के द्वारा स्तुति किये गये ७६१. पूर्वजन्म के वृत्तांतों को बोध कराने वाले।।१५६।।

गोकुलागतिलीलाप्तवसुदेवकरस्थितिः।
सर्वेशत्वप्रकटनो मायाव्यत्ययकारकः।।१५७।।

७६२. गोकुल में पधारने के लिए आप्तजन वसुदेवजी के हस्त में विराजमान प्रभु ७६३. सब प्रकार के ऐश्वर्यादि को प्रकट करने वाले ७६४. योग माया के स्थान का परिवर्तन करने वाले।।१५७।।

ज्ञानमोहितदुष्टेशः प्रपञ्चास्मृतिकारणम्।
यशोदानन्दनो नन्दभाग्यभूर्गोकुलोत्सवः।।१५८।।

७६५. देवकीजी के अष्टमपुत्र का काल स्वरूप का ज्ञान दुष्टेश कंस को देकर मोहित करने वाले ७६६. प्रपंच की विस्मृति के कारण स्वरूप ७६७. यशोदा के आनन्ददाता ७६८. नंदजी की भाग्य भूमि गोकुल के उत्सव स्वरूप।।१५८।।

नंदप्रियो नंदसूनुर्यशोदायाः स्तनंधयः।
पूतनासुपयःपाता मुग्धभावातिसुन्दरः।।१५६।।

७६९. नन्दजी के प्रिय प्रभु ७७०. नंदरायजी के पुत्र ७७१. श्रीयशोदाजी के स्तनपान करने वाले ७७२. पूतना राक्षसी के प्राण स्तनपान द्वारा हरने वाले ७७३. मुग्ध बाल स्वरूप अति सुन्दर।।१५६

सुन्दरीहृदयानन्दो गोपीमंत्राभिमंत्रितः।
गोपालाश्चर्यरसकृत् शकटासुरखण्डनः।।१६०।।

, ७७४. ब्रजसुन्दरियों के हृदय को आनंद देने वाले ७७५. गोपियों के मंत्रो से अभिमंत्रित ७७६. सब ग्वाल बालादि में अद्भुत रस उत्पन्न करने वाले ७७७. शकटरूपी मायावी असुर का खण्डन करने वाले।।१६०।।

नंदव्रजजनानन्दी नन्दभाग्यमहोदयः।
तृणावर्तवधोत्साही यशोदाज्ञानविग्रहः।।१६१।।

७७८. नंदरायजी एवं व्रजजनों के आनन्दस्वरूप ७७६. नंदजी के भाग्य को प्रकाशित करने वाले ७८०. तृणावर्त दैत्य का वध करने में उत्साही ७८१. यशोदाजी को ज्ञान उत्पन्न करने वाले स्वरूप को धारण करने वाले।।१६१।।

बलभद्रप्रियः कृष्णः संकर्षणसहायवान्।
रामानुजो वासुदेवो गोष्टाङ्गणगतिप्रियः।।१६२।।

७८२. बलरामजी को प्रिय ७८३. कृष्ण स्वरूप ७८४. बलरामजी (संकर्षणजी) के सहायक ७८५. बलरामजी के अनुज (छोटे भाई) ७८६. वासुदेव प्रभु (सर्व भूताधिवासश्च वासुदेवसुतः स्मृतः) ७८७. गौशाला के प्रांगण में घुटनों के बल चलने वाले प्रियतम प्रभु।।१६२।।

किंकिणीखभावज्ञो वत्सपुच्छावलंबनः।
नवनीतप्रियो गोपीमोहसंसारनाशकः।।१६३।।

७८८. किंकिणी (करधनी) के घूघरों की ध्वनि के भाव जानने वाले ७८६. बछड़ों की पूंछ पकड़कर चलने वाले ७६०. नवनीत (माखन) प्रिय ७६१. गोपीजनों को बाललीला से मोहित कर उनकी संसारात्मक (अंहता ममता) प्रवृत्तियों का नाश करने वाले।।१६३।।

गोपबालकभावज्ञश्चौर्यविद्याविशारदः।
मत्स्नाभक्षंणलीलास्यमाहात्म्यज्ञानदायकः।।१६४।।

७६२. गोप बालकों के भाव को जानने वाले ७६३. चोरी करने की विद्या में निपुण ७६४. मृत्तिका लीला द्वारा ब्रह्माण्ड को बतलाकर माहात्म्य ज्ञान को प्रकट करने वाले।।१६४।।

धराद्रोणप्रीतिकर्ता दधिभांडविभेदनः।
दामोदरो भक्तवश्यो यमलार्जुनभञ्जनः।।१६५।।

७६५. धरारूप यशोदाजी तथा द्रोण रूप नंदरायजी में प्रीति उत्पन्न करने वाले ७६६. दही के मटकों को फोड़ने वाले ७६७. दामोदर स्वरूप (रस्सी से बांधे गये) ७६८. भक्तों के वशीभूत ७६६. पास–पास उत्पन्न अर्जुन वृक्षों को तोड़ गिराने वाले।।१६५।।

बृहद्वनमहाश्चर्यो वृन्दावनगतिप्रियः।
वत्सघाती बालकेलिर्बकासुरनिषूदनः।।१६६।।

८००. महावन में अद्भुत कार्य करने वाले ८०१. वृन्दावन में गमन प्रिय ८०२. वत्सासुर दैत्य के विनाशक ८०३. गोप बालकों के साथ क्रीड़ा करने वाले ८०४. बकासुर को मारने वाले।।१६६।।

अरण्यभोक्ताप्यथवा बाललीलापरायणः।
प्रोत्साहजनकश्चैवअघासुरनिषूदनः।।१६७।।

८०५. वन में भोजन प्रिय ८०६. बालकों के समान लीला (कार्य) करने में कुशल ८०७. प्रोत्साह उत्पन्न करने वाले ८०८. अघासुर (अजगर) को मारने वाले।।१६७।।

व्यालमोक्षप्रदः पुष्टो ब्रह्ममोहप्रवर्धनः।
अनंतमूर्तिः सर्वात्मा जङ्.मस्थावराकृतिः।।१६८।।

८०६. अजगर को मुक्ति देने वाले ८१०. पुष्ट शरीर वाले प्रभु ८११. ब्रह्माजी को व्यामोह उत्पन्न करने वाले ८१२. अनंत गोप बालकों के रूप में उत्पन्न ८१३. सबंसे अंतर्यामी ८१४. जड़ चेतन स्वरूपवत्।।१६८।।

ब्रह्ममोहनकर्ता च स्तुत्य आत्मा सदाप्रियः।
पौगण्डलीलाभिरतिर्गोचारणपरायणः।।१६६।।

८१५. ब्रह्माजी को मोह उत्पन्न करा देने वाले ८१६. ब्रह्मादि देवों द्वारा स्तुति किए गए ८१७ आत्मारूप ८१८. सदा

प्रिय ८१९. पौगंड लीला में (सात वर्ष से ग्यारह वर्ष की अवस्था में) रमण करने वाले ८२०. गोचारण कराने में निपुण।।१६९।।

वृन्दावनलतागुल्मवृक्षरूपनिरूपकः।
नादब्रह्मप्रकटनो वयः प्रतिकृतिस्वनः।।१७०।।

८२१. वृन्दावन की लता गुल्मवृक्षादि का निरूपण करने वाले ८२२. नाद ब्रह्म को प्रकट करने वाले ८२३. पक्षियों की बोली की नकल करने वाले।।१७०।।

बर्हिनृत्यानुकरणो गोपालानुकृतिस्वनः।
सदाचारप्रतिष्ठाता बलश्रमनिराकृतिः।।१७१।।

८२४. मोर को नाचता देख कर नाचने वाले ८२५. गोपाल का रूप धारण करने वाले ८२६. सदाचार की प्रतिष्ठा करने वाले ८२७. बलरामजी की थकान को दूर करने वाले।।१७१।।

तरुमूलकृताशेषतल्पशायी सखिस्तुतः।
गोपालसेवितपदः श्रीलालितपदांबुजः।।१७२।।

८२८. वृक्ष की जड़ के पास (रची हुई शय्या पर) शयन करने वाले ८२९. मित्रों द्वारा स्तुति किए गए ८३०. ग्वाल बालकों से चरणारविन्द दबाए गए ८३१. श्रीलक्ष्मीजी द्वारा चरण कमलों की वंदना की गई ऐसे।।१७२।।

गोपसम्प्रार्थितफलदाननाशितधेनुकः।
कालियफणिमाणिक्यरञ्जितश्रीपदांबुजः।।१७३।।

८३२. गोप बालकों के द्वारा मांगे गए ताड़ के फल को देकर धेनुकासुर को मारने वाले ८३३. कालिय (नाग) की फणि पर मणि से शोभायमान चरणकमलों वाले।।१७३।।

दृष्टिसंजीविताशेषगोपगोगोपिकाप्रियः।
लीलासंपीतदावाग्निः प्रलंबवधपंडितः।।१७४।।

८३४. अमृतमयी दृष्टि के द्वारा संजीवित गोप, गोपिकाओं के प्रिय ८३५. अनायास ही दावाग्नि का पान करने वाले ८३६. प्रलम्बासुर दैत्य के वध हेतु बलरामजी को प्रेरित करने में पटु।।१७४।।

दावाग्न्यावृतगोपालदृष्ट्याच्छादनवह्निपः।
वर्षाशरद्विभूतिश्रीर्गोपीकामप्रबोधकः।।१७५।।

८३७. दावाग्नि से घिरे हुए गोप–बालकों की आंख बंद कराकर उसका पान करने वाले ८३८. वर्षा एवं शरद् ऋतु की विभूति की शोभा के कारण रुप ८३९. गोपिकाओं के काम को जाग्रत करने वाले।।१७५।।

गोपीरत्नस्तुताशेषवेणुवाद्यविशारदः।
कात्यायनीव्रतव्याजसर्वभावाश्रिताङ्गनः।।१७६।।

८४०. गोपीजन रूपी रत्नों द्वारा स्तुतिमान बांसुरी बजाने में चतुर ८४१. कात्यायनी व्रत के बहाने कुमारिकाओं को सब तरह से आश्रय देने वाले।।१७६।।

सत्संगतिस्तुतिव्याजस्तुतवृन्दावनांघ्रिपः।
गोपक्षुच्छांतिसंव्याजविप्रभार्याप्रसादकृत।।१७७।।

८४२. सत्संग की स्तुति के बहाने समस्त वृन्दावन के वृक्षों की स्तुति करने वाले ८४३. गोप बालकों की भूख मिटाने के बहाने ब्राह्मण पत्नियों पर प्रसन्न होने वाले।।१७७।।

हेतुप्राप्तेन्द्रयागस्वकार्यगोसवबोधकः।
शैलरूपकृताशेषरसभोगसुखावहः।।१७८।।

८४४. त्रिवर्ग की प्राप्ति के लिए इन्द्र की सामग्री से गाय, ब्राह्मण तथा गिरिराजजी के पूजन रूप गोत्सव का बोध देने

वाले ८४५. श्रीगोवर्धन स्वरूप धारण कर समग्र रस सामग्री का भोग लेकर सबको सुख देने वाले।।१७८।।

लीलागोवर्धनोद्धारपालितस्वव्रजप्रियः।
गोपस्वच्छंदलीलार्थगर्गवाक्यार्थबोधकः।।१७६।।

८४६. अनायास गिरिराज धारण कर स्वव्रजजनों के पालनकर्ता प्रभु ८४७. गोप बालकों को निर्भय क्रीड़ा करने के लिए गर्ग मुनि के वाक्यों का बोध कराने वाले।।१७६।।

इन्द्रधेनुस्तुतिप्राप्त गोविन्देभिधानवान्।
व्रतादिधर्मसंसक्त नंदक्लेशविनाशकः।।१८०।।

८४८. इन्द्र तथा कामधेनु की स्तुति से गोविन्द नाम धारण करने वाले ८४६. उपवास व्रतादि में आसक्त नंदजी के क्लेश को दूर करने वाले।।१८०।।

नंदादिगोपमात्रेष्टवैकुण्ठ गतिदायकः।
वेणुवादस्मरक्षोभमत्तगोपीविमुक्तिदः।।१८१।।

८५०. नंदरायजी आदि गोपों को इष्ट वैकुंठ की गति प्रदान करने वाले ८५१. वेणुनाद के स्मरण से चित्त में दुःखी गोपियों को मुक्ति देने वाले।।१८१।।

सर्वभावप्राप्तगोपीसुखसंवर्धनक्षमः।
गोपीगर्वप्रणाशार्थतिरोधानसुखप्रदः।।१८२।।

८५२. सर्वात्म भाव से प्राप्त हुई गोपियों के रास सुख के आनंद को द्विगुणित करने में समर्थ ८५३. गोपियों के गर्व को खंडित करने हेतु अंतर्ध्यान होकर अत्यन्त सुख देने वाले।।१८२।।

कृष्णभावव्याप्तविश्वगोपीभावितवेषधृक्।
राधाविशेष सम्भोगप्राप्तदोषनिवारकः।।१८३।।

८५४. समस्त जगत को श्रीकृष्णमय भाव से देखने वाली गोपिकाओं की भावना के अनुसार स्वरूप धारण करने वाले

८५५. श्रीराधाजी के विशेष भोग से प्राप्त हुए दोष का निवारण करने वाले।।१८३।।

परमप्रीतिसंगीत सर्वाद्भुतमहागुणः।
मानापनोदनाक्रन्दगोपीदृष्टिमहोत्सवः।।१८४।।

८५६. अत्यंत प्रेम से गाए हुए तथा सबको आश्चर्य उत्पन्न करने वाले अलौकिक गुण वाले ८५७. मान भंग के पश्चात् आक्रंदित गोपियों की दृष्टि को बढ़ाने वाले।।१८४।।

गोपिकाव्याप्तसर्वाङ्गः स्त्रीसम्भाषाविशारदः।
रासोत्सवमहासौख्यगोपीसम्भोगसागरः।।१८५।।

८५८. गोपीजनों में जिनका सर्वांग व्याप्त है ऐसे प्रभु ८५९. स्त्रीजनों के साथ वार्तालाप करने में कुशल ८६०. रास क्रीड़ा के महासुख को गोपीजनों के स्वरूपानुभव में सागर के समान।।१८५।।

जलस्थलरतिव्याप्तगोपीदृष्ट्यभिपूजितः।
शास्त्रानपेक्षकामैकमुक्तिद्वाराविवर्धनः।।१८६।।

८६१. जल–स्थल क्रीड़ाओं से परिपूर्ण गोपीजनों के नयन कमल से पूजित प्रभु ८६२. शास्त्र की अपेक्षा बिना ही केवल प्रेमलक्षणा भक्ति द्वारा मुक्ति द्वार को खोलने वाले।।१८६।।

सुदर्शनमहासर्पग्रस्तनंदविमोचकः।
गीतमोहितगोपीधृक्शंखचूड़विनाशकः।।१८७।।

८६३. सुदर्शन नामक महासर्प से ग्रसित नंदजी को छुड़ाने वाले ८६४. मुरली की गीत ध्वनि से मोहित गोपिकाओं को पकड़ने वाले शंखचूड़ का नाश करने वाले।।१८७।।

गुणसंगीतसंतुष्टिर्गोपीसंसारविस्मृतिः।
अरिष्टमथनौ दैत्यबुद्धिव्यामोहकारकः।।१८८।।

८६५. गुणों के बखान से संतुष्ट होने वाले ८६६. गोपीजनों को संसार की विस्मृति कराने वाले ८६७. अरिष्टासुर को मारने वाले ८६८. कंस दैत्य की बुद्धि को व्यामोह करने वाले।।१८८।।

केशीघाती नारदेष्टो व्योमासुरविनाशकः।
अक्रूरभक्तिसंराद्धपादरेणुमहानिधिः।।१८६।।

८६६. कैशी दैत्य को मारने वाले ८७०. देवर्षि नारदजी के प्रिय ८७१. व्योमासुर का विनाश करने वाले ८७२. अक्रूरजी की प्रेमभक्ति से जिनके पदकमल की रेणु महानिधि का स्मरण करते हैं ऐसे प्रभु।।१८६।।

रथावरोहशुद्धात्मा गोपीमानसहारकः।
ह्रदसंदर्शिताशेषवैकुण्ठाक्रूरसंस्तुतः।।१६०।।

८७३. रथ में विराजमान होते समय शुद्धात्मा (निर्विकार) ८७४. गोपीजनों के हृदय को जीतने वाले ८७५. सरोवर में संपूर्ण वैकुंठ के दर्शन करने वाले अक्रूरजी द्वारा स्तुति किए गए।।१६०

मथुरागमनोत्साहो मथुराभाग्यभाजनम्।
मथुरानगरीशोभादर्शनोत्सुकमानसः।।१६१।।

८७६. मथुरापुरी में जाने के लिए उत्सुक ८७७. मथुरा वासियों के सौभाग्यरूप ८७८. मथुरापुरी का अवलोकन करने की उत्कंठा वाले।।१६१।।

दुष्टरञ्जकघाती च वायकार्चितविग्रहः।
वस्त्रमालासुशोभाङ्गः कुब्जालेपनभूषितः।।१६२।।

८७६. दुष्ट कंस के धोबी का नाश करने वाले ८८०. दर्जी द्वारा सुंदर वस्त्रों से सुसज्जित ८८१. वस्त्र तथा पुष्पमाला से शोभायमान ८८२. कुब्जा के अंग लेप से सुशोभित।।१६२।।

कुब्जासुरूपकर्ता च कुब्जारतिवरप्रदः।
प्रसादरूपसंतुष्टहरकोदण्डखण्डनः।।१६३।।

८८३. कूबड़ी कुब्जा को सुंदररूप प्रदान करने वाले ८८४. कुब्जा को रति का वरदान देने वाले ८८५. प्रसन्न होकर कृपा से प्राप्त शिवजी के धनुष को भंग करने वाले।।१६३।।

शकलाहतकंसाप्तधनूरक्षकसैनिकः।
जागृत्स्वप्न भयव्याप्तमृत्युलक्षणबोधकः।।१६४।।

८८६. धनुष के टुकड़ों से उनके रक्षक आप्तयोद्धाओं का विनाश करने वाले ८८७. जाग्रत, स्वप्न तथा निद्रावस्था में भयभीत कंस को मृत्यु के लंक्षणों का बोध कराने वाले।।१६४।।

मथुरामल्ल ओजस्वी मल्लयुद्धविशारदः।
सद्यः कुवलयापीडघाती चाणूरमर्दनः।।१६५।।

८८८. मथुरा में अद्वितीय मल्ल ८८९. युद्ध में ओजस्वी ८९०. मल्ल (कुश्ती) में कुशल ८९१. रंगभूमि में कुवलयापीड़ हाथी को मारने वाले ८९२. चाणूर का मर्दन करने वाले।।१६५।।

लीलाहतमहामल्लः शलतोशलघातकः।
कंसान्तको जितामित्रो वसुदेवविमोचकः।।१६६।।

८९३. सहज लीला से पहलवानों को मारने वाले ८९४. शल, तोशल नामक मल्लों के संहारक ८९५. कंसराजा को मारने वाले ८९६. शत्रुओं को जीतने वाले ८९७. वसुदेवजी को छुड़ाने वाले।।१६६।।

ज्ञाततत्वपितृज्ञानमोहनामृतवाड्.मयः।
उग्रसेनप्रतिष्ठाता यादवाधिविनाशकः।।१६७।।

८९८. ज्ञान तत्व को जानने वाले अपने माता–पिता को ज्ञान मोह उत्पन्न कर अमृतमय वाणी बोलने वाले ८९९. उग्रसेन को राज्यासन पर बैठाने वाले ९००. यादवों की पीड़ा को हरने वाले।।१६७।।

नंदादिसान्त्वनकरो ब्रह्मचर्यव्रते स्थितः।
गुरुशुश्रूष्णपरो विद्यापारमितेश्वरः।।१९८।।

६०१. नंदरायजी आदि गोपीजनों को सांत्वना देने वाले ६०२. यज्ञोपवीत धारण कर ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करने वाले ६०३. सांदीपनी गुरु की सेवा करने में सावधान ६०४. सब विद्याओं में पारंगत।।१९८।।

सान्दीपनिमृतापत्यदाता कालान्तकादिजित्।
गोकुलाश्वासनपरो यशोदानन्दपोषकः।।१९९।।

६०५. सांदीपनी मुनि के मृत बालकों को पुनर्जीवित कर देने वाले ६०६. मृत्यु तथा यमराज को जीतने वाले ६०७. गोकुल वासियों को उद्धवजी द्वारा आश्वासन दिलाने वाले ६०८. यशोदाजी तथा नंदजी को संदेश भेजकर उनका संतोष करने वाले।।१९९।।

गोपिकाविरहव्याजमनोगतिरतिप्रदः।
समोद्धवभ्रमरवाक् गोपिकामोहनाशकः।।२००।।

६०९. गोपिकाओं को वियोग के बहाने मन में स्थापित कर प्रीति प्रदान करने वाले ६१०. प्रभु समान उद्धवजी के सामने गोपीजनों को भ्रमर की वाणी सुनाने वाले ६११. गोपिकाओं के मन के भ्रम को दूर करने वाले।।२००।।

कुब्जारतिप्रदोऽक्रूरपवित्रीकृतभूगृहः।
पृथादुःखप्रणेता च पांडवानां सुखप्रदः।।२०१।।

६१२. कुब्जा को प्रीति देने वाले ६१३. अक्रूरजी के गृह को पावन करने वाले ६१४. संदेश से कुंती के दुःख को हरने वाले ६१५. संदेश से ही पांडवों को सुख देने, वाले।।२०१।।

दशम स्कंध पूर्वार्द्ध नामावली सम्पूर्ण

।। अतः परं दशमस्कंधोत्तरार्द्ध नामानि ।।

जरासंधसमानीतसैन्यघाती विचारकः।
यवनव्याप्तमथुराजनदत्तकुशस्थलिः।।२०२।।

६१६. सत्रह बार जरासंध की सेना को पराजित करने वाले ६१७. अठारवीं बार उस संबंध में विचार करने वाले ६१८. कालयवन से घिरी हुई मथुरावासी यादव जनता को कुशस्थली (द्वारका) का स्थान प्रदान करने वाले।।२०२।।

द्वारकाद्भूतनिर्माणविस्मायित सुरासुरः।
मनुष्यमात्रभोगार्थभूम्यानीतेन्द्रवैभवः।।२०३।।

६१९. द्वारकापुरी की अद्भुत रचना से देवदैत्यों को आश्चर्यान्वित करने वाले ६२०. सब प्राणीमात्र के सब समान उपयोग के लिए भूमि में इन्द्र के वैभव को लाने वाले।।२०३।।

यवनव्याप्तमथुरानिर्गमानंदविग्रहः।
मुचुकुन्दमहाबोधयवनप्राणदर्पहा।।२०४।।

६२१. कालयवन द्वारा घिरी हुई मथुरापुरी से निकलते समय सच्चिदानन्द स्वरूप वाले ६२२. दीर्घ निद्रा में सोये हुए राजा मुचुकुंद को जगाकर कालयवन के प्राण तथा गर्व को हरने वाले।।२०४।।

मुचुकंदस्तुताशेषगुणकर्ममहोदयः।
फलप्रदानसंतुष्टिर्जन्मान्तरितमोक्षदः।।२०५।।

६२३. भक्तराज मुचुकुन्द से स्तुतिमान संपूर्ण गुण कर्म ऐश्वर्य के प्रभाव वाले ६२४. भक्तरूपी फल का दान देकर संतुष्ट होने वाले ६२५. दूसरे जन्म में मोक्ष देने वाले।।२०५।।

शिवब्राह्मण वाक्याप्तजयभीतिविभावनः।
प्रवर्षणप्रार्थिताग्निदानपुण्यमहोत्सवः।।२०६।।

६२६. शिवजी तथा ब्राह्मणों के वाक्यों से अठारहवीं बार आए हुए जरासंध की जय हेतु स्वयं में भीति की भावना बतलाने वाले ६२७. प्रवर्षण की प्रार्थना से अग्निदान कर जरासंध को मिथ्या महोत्सव उत्पन्न करने वाले।।२०६।।

रुक्मिणीरमणः कामपिता प्रद्युम्नभावनः।
स्यमन्तकमणिव्याजप्राप्तजाम्बवतीपतिः।।२०७।।

६२८. रुक्मिणी को आनन्द देने वाले ६२९. कामदेव के पिता ६३०. प्रद्युम्न नाम से पुत्र को उत्पन्न करने वाले ६३१. स्यमन्तक मणि के लाने के मिष से हुई जाम्बवती के पति।।२०७।।

सत्यभामाप्राणपतिः कालिन्दीरतिवर्धनः।
मित्रविन्दापतिः सत्यापतिर्वृषनिषूदनः।।२०८।।

६३२. श्रीसत्यभामा के प्राणपति ६३३. श्रीकालिन्दी में प्रीति उत्पन्न करने वाले ६३४. श्रीमित्रवृन्दापति ६३५. श्रीसत्या के स्वामी ६३६. वृष (सात सांड) को नाथने वाले।।२०८।।

भद्रावाञ्छितभर्ता च लक्ष्मणावरणक्षमः।
इन्द्रादिप्रार्थितवधनरकासुरसूदनः।।२०९।।

६३७. श्रीभद्रा के मनोवांछित पति ६३८. लक्ष्मणा को ब्याहने में समर्थ ६३९. इन्द्रादिदेवों द्वारा प्रार्थना करने पर नरकासुर का वध करने वाले।।२०९।।

मुरारिः पीठहन्ता च ताम्रादिप्राणहारकः।
षोडशस्त्रीसहस्रेशः छत्रकुण्डलदानकृत्।।२१०।।

६४०. मुरारि ६४१. पीठ–सेनापति को मारने वाले ६४२. ताम्रादि दानवों के प्राणहर्ता ६४३. सोलह हजार स्त्रियों के स्वामी ६४४. इन्द्र को छत्र एवं अदिति को कुण्डल प्रदान करने वाले।।२१०।।

पारिजातापहरणो देवेन्द्रमदनाशकः।
रुक्मिणीसमसर्वस्त्रीसाध्यभोगरतिप्रदः।।२११।।

६४५. पारिजात वृक्ष को स्वर्ग से ले आने वाले ६४६. देवेंद्र के मद को दूर करने वाले ६४७.रुक्मिणी के समान सब स्त्रियों से प्राप्त भोग वाले ६४८. सबको समान प्रीति देने वाले।।२११।।

रुक्मिणीपरिहासोक्तिवाक्तिरोधानकारकः।
पुत्रपौत्रमहाभाग्यगृहधर्मप्रदर्शकः।।२१२।।

६४६. रुक्मिणीजी के साथ हास–परिहास करते समय उनकी वाणी को रोक देने वाले ६५०. पुत्र–पौत्र से महाभाग्य गृहस्थ धर्म को बढ़ाने वाले।।२१२।।

शम्बरान्तकसत्पुत्रविवाहहतरुक्मिकः।
उषापहृतपौत्रश्रीबाणबाहुनिवारकः।।२१३।।

६५१. शबरान्तक के सत्पुत्र के विवाह में रुक्मी का हनन करने वाले ६५२. ऊषा के लिये खोये पौत्र अनिरूद्ध को सम्पत्ति स्वरूप ६५३. बाणासुर के बाहुओं का छेदन करने वाले।।२१३।।

शीतज्वरभयव्याप्तज्वरसंस्तुतषड्गुणः।
शङ्करप्रतियोद्धा च द्वन्द्वयुद्धविशारदः।।२१४।।

६५४. शीतज्वर के भय से व्याप्त हुए उष्णज्वर स्तुत्य छः गुणों वाले ६५५. शंकरजी के प्रतिपक्ष योद्धा ६५६. द्वन्द्व युद्धों में प्रवीण।।२१४।।

नृगपापप्रभेत्ता च ब्रह्मस्वगुणदोषदृक्।
विष्णुभक्तिविरोधैकब्रह्मस्वविनिवारकः।।२१५।।

६५७. नृगराज के पाप को दूर करने वाले ६५८. ब्रह्मस्व के गुण दोष देखने वाले ६५६. श्रीकृष्ण भक्ति में प्रतिबंधक केवल ब्रह्मस्व के विशेष निवारक।।२१५।।

बलभद्राहितगुणो गोकुलप्रीतिदायकः।
गोपीस्नेहैकनिलयो गोपीप्राणस्थितिप्रदः।।२१६।।

६६०. बलरामजी के गुणों की स्थापना करने वाले ६६१. गोकुलवासियों को प्रेमदान करने वाले ६६२. गोपीजनों के एकमेव आधार ६६३. गोपीजनों के प्राणों को शांति देने वाले।।२१६।।

वाक्यातिगामियमुनाहलाकर्षणवैभवः।
पौण्ड्रकत्याजितस्पर्धः काशीराजविभेदनः।।२१७।।

६६४. वाक्य का उल्लंघन करने पर यमुनाजी को हल से खेंचने में सामर्थ्य देने वाले ६६५. पौंड्रक राजा की स्पर्धा को छुड़ाने वाले ६६६. काशी राजा का नाश करने वाले।।२१७।।

काशीनिदाहकरणः शिवभस्मप्रदायकः।
द्विविदप्राणघाती च कौरवाखर्वगर्वनुत्।।२१८।।

६६७. सुदर्शन चक्र द्वारा काशी को जलाने वाले ६६८. शिवजी को भस्म प्रदान करने वाले ६६९. द्विविद बंदर के प्राणों को हरने वाले ६७०. कौरवों के अतिगर्व को उतारने वाले।।२१८।।

लाङ्ग.लाकृष्टनगरीसंविग्नाखिलनागरः।
प्रपन्नाभयदः साम्बप्राप्तसन्मानभाजनम्।।२१९।।

६७१. हल के अग्रभाग से खेंचने पर सब नागरिकों को विव्हल बनाने वाले ६७२. शरणागतों को अभय देने वाले ६७३. सांब के साथ प्राप्त किए सम्मान के सत्पात्र रूप।।२१९।।

नारदान्विष्टचरणो भक्तविक्षेपनाशकः।
सदाचारैकनिलयः सुधर्माध्यासितासनः।।२२०।।

६७४. नारदजी के संवेषित चरणारविंद वाले ६७५. भक्त नारदजी के चित्त के विक्षेप को हरने वाले ६७६. सत्पुरुषों के आचार के

स्थान रूप ६७७. सुधर्मा की सभा में मध्य आसन पर बिराजमान।।२२०।।

जरासन्धावरुद्धेन विज्ञापितनिजक्लमः।
मंत्र्युद्धवादिवाक्योक्तप्रकारैकपरायणः।।२२१।।

६७८. जरासंध से अवरुद्ध राजाओं द्वारा निवेदित दुःख वाले ६७९. मंत्री उद्धवजी आदि के वाक्यों के अनुसार चलने में सदा तत्पर।।२२१।।

राजसूयादिमखकृत् सम्प्रार्थितसहायकृत्।
इन्द्रप्रस्थप्रयाणार्थ महत्सम्भारसम्भृतिः।।२२२।।

६८०. राजसूयादी यज्ञों को संपादित करने वाले ६८१. प्रार्थना करने पर सहायता करने वाले ६८२. इन्द्रप्रस्थ को प्रयाण करने हेतु सामग्री का संचय करने वाले।।२२२।।

जरासंधवधव्याजमोचिताशेषभूमिपः।
सन्मार्गबोधको यज्ञक्षितिवारणतत्परः।।२२३।।

६८३. जरासंध के बहाने से सारे राजाओं को छुड़ाने वाले ६८४. सन्मार्ग (भक्तिमार्ग) का उपदेश देने वाले ६८५. यज्ञ क्षति को दूर करने वाले।।२२३।।

शिशुपालहतिव्याजजयशापविमोचकः।
दुर्योधनाभिमानाब्धिशोषबाणवृकोदरः।।२२४।।

६८६. शिशुपाल के नाश के बहाने द्वारपाल जय को शाप से छुड़ाने वाले ६८७. दुर्योधन के अभिमान रूपी सागर को शोषण करने हेतु वृकोदर के समान बाण रूप।।२२४।।

महादेववरप्राप्तपुरशाल्वविनाशकः।
दन्तवक्त्रवधव्याजविजयाघौघनाशकः।।२२५।।

६८८. महादेवजी के वरदान से प्राप्त किये हुए सौभ नामक शाल्व के विमान का नाश करने वाले ६८९. दंतवक्र के वध के बहाने से विजय दूत के पाप समुदाय के विनाशक।।२२५।।

विदूरथप्राणहर्ता न्यस्तशस्त्रास्त्रविग्रहः।
उपधर्मविलिप्ताङ्ग-सूतघाती वरप्रदः।।२२६।।

६६०. विदूरथ के प्राण हरने वाले ६६१. शस्त्रास्त्र से रहित देह धारण करने वाले ६६२. गौण धर्म से गुप्त अंग वाले सूतजी को मारने वाले स्वभाव स्वरूप, वरदायक।।२२६।।

बल्वलप्राणहरणपालितर्षिश्रुतिक्रियः।
सर्वतीर्थाघनाशार्थतीर्थयात्राविशारदः।।२२७।।

६६३. बल्वल दैत्य के प्राणों को हर ऋषि-मुनियों की श्रुति क्रिया का पालन करने वाले ६६४. सकल तीर्थों के पाप नाश करने के लिए तीर्थ यात्रा करने में निपुण।।२२७।।

ज्ञानक्रियाविभेदेष्टफलसाधनतत्परः।
सारथ्यादिक्रियाकर्ता भक्तवश्यत्वबोधकः।।२२८।।

६६५. ज्ञान तथा क्रिया के भेद से भिन्न इष्ट फलों के साधन में तत्पर ६६६. अर्जुन के साथी का काम एवं अन्य कार्यादि करने वाले ६६७. भक्त की पराधीनता के बोधक।।२२८।।

सुदामरङ्क.भार्यार्थभूम्यानीतेन्द्रवैभवः।
रविग्रहनिमित्ताप्तकुरुक्षेत्रैकपावनः।।२२६।।

६६८. दरिद्रमित्र सुदामाजी की पत्नी के हेतु इन्द्र के वैभव को देने वाले ६६६. सूर्यग्रहण के निमित्त प्राप्त हुए कुरुक्षेत्र के पवित्रकर्ता।।२२६।।

नृपगोपीसमस्तस्त्रीपावनार्थाखिलक्रियः।
ऋषिमार्गप्रतिष्ठाता वसुदेवमखक्रियः।।२३०।।

१०००. युधिष्ठिर आदि राजाओं तथा अन्य स्त्रियों गोपीजनों तथा अन्य स्त्रियों को पवित्र करने में क्रियावन् १००१. ऋषियों के मार्ग को प्रतिष्ठित करने वाले १००२. वसुदेवजी की यज्ञ की क्रिया सम्पन्न करने वाले।।२३०।।

वसुदेवज्ञानदाता देवकीपुत्रदायकः।
अर्जुनस्त्रीप्रदाता च बहुलाश्वस्वरूपदः।।२३१।।

१००३. मुनियों द्वारा वसुदेवजी को ज्ञान दिलाने वाले १००४. देवकीजी के पुत्रों को पुनः लाने वाले १००५. अर्जुन को सुभद्रा दिलाने वाले १००६. बहुलाश्व को स्वरूप दर्शन कराने वाले।।२३१।।

श्रुतदेवेष्टदाता च सर्वश्रुतिनिरूपितः।
महादेवाद्यति श्रेष्ठो भक्तिलक्षणनिर्णयः।।२३२।।

१००७. परमभक्त श्रुतदेव को इष्ट दर्शन के दाता १००८. सर्वश्रुति में निरूपित स्वरूप वाले १००९. महादेव मुख्य है ऐसे ब्रह्मादि देवों में श्रेष्ठ १०१०. भक्ति के लक्षणों का निर्णय करने वाले।।२३२।।

वृकग्रस्तशिवत्राता नानावाक्य विशारदः।
नरगर्वविनाशार्थहृतब्राह्मणबालकः।।२३३।।

१०११. भस्मासुर से त्रस्त शंकरजी का संरक्षण करने वाले १०१२. नाना प्रकार के वाक्यों में प्रवीण १०१३. अर्जुन के गर्व हरण करने हेतु ब्राह्मण बालकों के हर्ता।।२३३।।

लोकालोकपरस्थानस्थितबालकदायकः।
द्वारकास्थमहाभोगनानास्त्रीरतिवर्धनः।।२३४।।

१०१४. लोकालोकाचल की पर भूमि से बालकों को पुनः लाने वाले १०१५. द्वारका नगरी के महावैभव से स्त्रियों की विभिन्न प्रकार की क्रीड़ा को बढ़ाने वाले।।२३४।।

मनस्तिरोधानकृतिव्यग्रस्त्रीचित्तभावितः।

१०१६. मनोवृत्ति के तिरोधान होने से व्यग्र बनी हुई स्त्रियों के चित्त में भावित प्रभु श्रीकृष्ण।

दशम स्कंध (उत्तरार्द्ध) नामानि सम्पूर्णम्

।। अतः परमेकादशस्कन्धीयनामानि ।।

मुक्तिलीलाविहरणो मौशलव्याजसंहृतिः ।।२३५।।

१०१७. मुक्ति नामक लीला में विहार करने वाले १०१८. मूसल के बहाने यादव कुल का नाश करने वाले।।२३५।।

श्रीभागवतधर्मादिबोधको भक्तिनीतिकृत्।

उद्धवज्ञानदाता च पञ्चविंशतिधा गुरुः।।२३६।।

१०१९. श्रीमद्भागवत शास्त्र में कहे गये धर्मों के उपदेशक १०२०. भक्ति की नीति को प्रकट करने वाले १०२१. उद्धवजी को ज्ञान देने वाले १०२२. पच्चीस प्रकार के गुरु करने वाले दत्तात्रेय स्वरूप।।२३६।।

आचारमुक्तिभक्त्यादिवक्ता शब्दोद्भवस्थितिः।

हंसो धर्मप्रवक्ता च सनकाद्युपदेशकृत्।।२३७।।

१०२३. वर्णाश्रमाचार, भक्ति, मुक्ति आदि के वक्ता १०२४. वाणी के उत्पत्ति स्थान पर स्थित करने वाले १०२५. हंस स्वरूप १०२६. धर्म के प्रवक्ता १०२७. सनकादिकों को उपदेश देने वाले।।२३७।।

भक्तिसाधनवक्ता च योगसिद्धिप्रदायकः।

नानाविभूतिवक्ता च शुद्धधर्मावबोधकः।।२३८।।

१०२८. भक्तिरूप साधन को बताने वाले १०२९. योग से मिलने वाली सिद्धियों के दाता १०३०. अनेक प्रकार की विभूतियों को बतलाने वाले १०३१. शुद्धधर्म के बोधक।।२३८।।

मार्गत्रयविभेदात्मा नानाशङ्कानिवारकः।

भिक्षुगीताप्रवक्ता च शुद्धसांख्यप्रवर्तकः।।२३९।।

१०३२. तीनों (कर्म, ज्ञान तथा भक्ति) मार्गों के विशेष भेद

के आत्म रूप १०३३. विविध शंकाओं को दूर करने वाले १०३४. भिक्षु गीता के प्रवक्ता १०३५. शुद्ध सांख्य के प्रवर्तक।।२३९।।

मनोगुणविशेषात्मा ज्ञापकोक्तपुरूरवाः।
पूजाविधिप्रवक्ता च सर्वसिद्धान्तबोधकः।।२४०।।

१०३७. मन के सात्विक आदि गुणों द्वारा विशेष स्वरूप वाले १०३७. पुरूरवा दृष्टांत से तत्वज्ञान कहने वाले १०३८. पूजाविधि के प्रवक्ता १०३९. सब सिद्धांतों को समझाने वाले।।२४०।।

लघुस्वमार्गवक्ता च स्वस्थानगतिबोधकः।
यादवाङ्गोपसंहर्ता सर्वाश्चर्यगतिक्रियः।।२४१।।

१०४०. सरल भक्ति मार्ग के वक्ता १०४१. अपने वैकुण्ठ स्थान में मोक्ष देने वाले १०४२. यादवों के अंगों का संहार करने वाले १०४३. सबको आश्चर्य हो ऐसे स्वस्थान गमन की क्रिया वाले।।२४१।।

।। एकादश स्कंध नामावली सम्पूर्णम् ।।

।। अतः परं द्वादशस्कंधीय नामानि ।।

कालधर्म विभेदार्थवर्णनाशनतत्परः।
बुद्धो गुप्तार्थवक्ता च नानाशास्त्रविधायकः।।२४२।।

१०४४. काल धर्म के लोप से नष्ट होने वाले वर्ण धर्म के संरक्षक १०४५. बुद्ध स्वरूप १०४६. गुप्तार्थ को कहने वाले १०४७. भिन्न-भिन्न प्रकार के शास्त्रों के रचयिता।।२४२।।

नष्टधर्ममनुष्यादिलक्षणज्ञापनोत्सुकः।
आश्रयैकगतिज्ञाता कल्किः कलिमलापहः।।२४३।।

१०४८. नष्ट हुए धर्म वाले मनुष्य के लक्षणों को जानने में उत्साही १०४९. आश्रय की गति जानने वाले १०५०. कल्कि रूप भगवान् १०५१. कलिमल का हरने वाले।।२४३।।

शास्त्रवैराग्यसम्बोधो नानाप्रलयबोधकः।
विशेषतः शुकव्याजपरीक्षिज्ज्ञानबोधकः।।२४४।।

१०५२. शास्त्रों में वैराग्य को बोध कराने वाले १०५३. भिन्न–भिन्न प्रकार के प्रलयों 'को समझाने वाले १०५४. विशेष कर शुकदेवजी के बहाने परीक्षित राजा को ज्ञान कराने वाले।।२४४।।

शुकेष्टगतिरूपात्मा प्ररीक्षिद्देहमोक्षदः।
शब्दरूपो नादरूपो वेदरूपो विभेदनः।।२४५।।

१०५५. शुकदेवजी के अत्यन्त प्रिय ज्ञान स्वरूपी आत्मा १०५६. परीक्षित को देह से मुक्त करने वाले १०५७. शब्द रूप १०५८. नाद (प्रणव) रूप १०५९. वेद रूप १०६०. सामादि वेद के भाग करने वाले।।२४५।।

व्यासः शाखाप्रवक्ता च पुराणार्थप्रवर्तकः।
मार्कण्डेयप्रसन्नात्मा वटपत्रपुटेशयः।।२४६।।

१०६१. व्यासरूप १०६२. शाखाओं के प्रवक्ता १०६३. पुराणों के अर्थ के प्रवर्तकं १०६४. मार्कण्डेय ऋषि पर प्रसन्न चित्त वाले १०६५. वटपत्र पर शयन करने वाले।।२४६।।

मायाव्याप्तमहामोहदुःखशांतिप्रवर्तकः।
महादेवस्वरूपश्च भक्तिदाता कृपानिधिः।।२४७।।

१०६६. योगमाया से फैले हुए महामोह के दुःख की शांति के प्रवर्तक १०६७. महादेव स्वरूप १०६८. मार्कण्डेय को भक्ति प्रदान करने वाले १०६९. कृपानिधि।।२४७।।

आदित्यान्तर्गतः कालो द्वादशात्मा सुपूजितः।
श्रीभागवतरूपश्च सर्वार्थफलदायकः।।२४८।।

१०७०. सूर्य मंडल में विराजमान १०७१. काल रूप भगवान् १०७२. द्वादश सूर्य स्वरूप १०७३. सुन्दर रीति से पूजित १०७४. श्रीमद्भागवत स्वरूप (द्वादश स्कंधों को प्रभु श्रीकृष्ण के श्रीअंग माने गये हैं) १०७५. सब पुरूषार्थों के फल देने वाले भगवान् श्रीकृष्ण।।२४८।।

इतीदं कीर्तनीयस्य हरेर्नामसहस्त्रकम्।
प‍ञ्चसप्ततिविस्तीर्णं पुराणान्तरभाषितम्।।२४६।।

श्रीमहाप्रभुजी ग्रंथ समाप्ति पर आज्ञा करते हैं कि-

समस्त दुःखों का नाश करने वाले हजार नाम और पुराणों में कहे गये ७५ नामों का विस्तांरपूर्वक सर्वदुःखों का हरण करने वाले. हजार नामों का स्तोत्र संपूर्ण किया। इसमें ७५ नाम पद्मपुराण, वराह पुराण, वाल्मीकि रामायण, अध्यात्म रामायण आदि से संगृहीत किये हैं।

य एतत्प्रातरुत्थाय श्रद्धावान् सुसमाहितः।
जपेदर्थाहितमतिः स गोविन्दपदं व्रजेत्।।२५०।।

जो इस "पुरुषोत्तम सहस्त्रनाम स्तोत्र" का प्रातःकाल उटकर शांतचित से श्रद्धावान् होकर लौकिक पदार्थों में से चित्त को दूर कर पटन करेगा वह प्रभु गोविन्द के चरण कमलों में शरण गति प्राप्त करेगा।।२५०।।

सर्वधर्मविनिर्मुक्तः सर्वसाधनवर्जितः।
एतद्धारणमात्रेण कृष्णस्य पदवीं व्रजेत्।।२५१।।

सर्व धर्म से मुक्त होकर, सर्वसाधनों को छोड़कर जो मनुष्य इस स्तोत्र का पाठ करेगा तो इसके धारण करने से ही उसे प्रभु श्रीकृष्ण के पद कमलों की प्राप्ति हो जाएगी।।२५१।।

हर्यावेशितचित्तेन श्रीभागवतसागरात्।
समुदधृतानि नामानि चिंतामणिनिभानि हि।।२५२।।

भगवान् श्रीकृष्णचंद्र में चित्त रखकर मैंने श्रीमद्भागवत रूपी महासागर से चिंतामणि के समान भगवन्नामों को सुंदर रीति से प्रकट किए हैं।।२५२।।

कण्ठस्थितान्यर्थदीप्त्या बाधन्तेऽज्ञानजं तमः।
भक्तिं श्रीकृष्णदेवस्यसाधयन्ति विनिश्चितम्।।२५३।।

इस पुरुषोत्तम सहस्त्रनाम स्तोत्र को कटस्थ कर पाठ करे तो अर्थ के प्रकाश से अज्ञानांधकार दूर होगा तथा प्रभु श्रीकृष्ण की भक्ति प्राप्त होगी, यह निर्विवाद सत्य है।।२५३।।

किम्बहूक्तेन भगवान् नामभिः स्तुतषड्.गुणः।
आत्मभावं नयत्याशु भक्तिं च कुरुते दृढाम्।।२५४।।

विशेष क्या वर्णन करूं?

इन सहस्त्र नामों से षडगुण ऐश्वर्य संपन्न परम सुंदर भगवांन् श्रीकृष्ण की स्तुति की गई है जिससे इस स्तोत्र के पाठ कर्ता को कुछ समय में ही प्रभु के निजस्वरूप की प्राप्ति होगी तथा निज भक्ति दृढ होगी।।२५४।।

य: कृष्णभक्तिमिह वाञ्छति साधनौघै-
र्नामानि भासुरयशांसि जपेत्स नित्यम्।।
तं वै हरिः स्व पुरुषं कुरुतेऽतिशीघ्र-
मात्मार्पणं समधिगच्छति भावतुष्टः।।२५५।।

अनेक साधनों के समूह से जो श्रीकृष्ण भगवान् की भक्ति की कामना करता हो, उसे उतना श्रम न करते हुए केवल भगवान् श्रीकृष्णचंद्र के यशोवर्णन वाले इन सहस्त्र नामों का निरंतर जप पाठ करने से ही प्रभु श्रीहरि शीघ्र अपना बना लेते हैं तथा भक्ति भाव से प्रसन्न होकर उसे निज स्वरूप का दान देते हैं।।२५५।।

श्रीकृष्ण कृष्णसख वृष्णिवृषावनिध्रुक्-
राजन्यवंशदहनानपवर्गवीर्य।।
गोविन्द गोपवनिताव्रजभृत्यगीत
तीर्थश्रवः श्रवणमङ्गल पाहि भृत्यान्।।२५६।।

इति श्रीभागवतसारसमुच्चये वैश्वानरोक्तं
।। श्रीपुरुषोत्तम सहस्त्रनाम स्तोत्रं संपूर्णम् ।।

हे श्रीकृष्ण! हे श्रीकृष्ण! अर्जुन के मित्र! वसुदेवादि यादवों तथा पृथ्वी का द्रोह करने वाले अन्य राजाओं के वंश को भस्मी भूत करने में अतुल बल संपन्न हे प्रभु! हे गोविन्द! हे गोपीजनों तथा गोपभक्तों के साथ गान करने वाले। हे तीर्थरूप! कीर्तिमान! हे श्रवण करने वालों की रक्षा करने वाले, परम करूणा निधान प्रभु! आप निजभक्तजनों का पालन कीजिए—रक्षण कीजिए।।२५६।।

।। श्रीपुरुषोत्तम सहस्त्रनाम स्तोत्र संपूर्णम् ।।

(12) श्री यमुना कवच

यमुनायाश्च कवचं सर्वरक्षाकरं नृणाम्।
चतुष्पदार्थदं साक्षाच्छृणु राजन् महामते।।१।।

मांधाता बोले – महाभाग! आप मुझे श्रीकृष्ण की पटरानी यमुना के सर्वथा निर्मल कवच का उपदेश दीजिये, मैं सदा उसे धारण करूंगा।।१।।

कृष्णां चतुर्भुजां श्यामां पुण्डरीकदलेक्षणम्।
रथस्थां सुन्दरीं ध्यात्वा धारयेत् कवचं ततः।।२।।
स्नातः पूर्वमुखो मौनीकृत संध्यः कुशासने।
कुशैर्बद्ध शिखो विप्रः पठेद् वै स्वस्तिकासनः।।३।।

सौभरि बोले–महामेत नरेश! यमुना जी का कवच मनुष्यों की सब प्रकार से रक्षा करने वाला तथा साक्षात् चारों पदार्थों को देने वाला है। तुम इसे सुनो – यमुना जी के चार भुजाएं हैं। वे श्यामा (श्याम वर्णा एवं सोलह वर्ष की आयु से युक्तहैं। उनके नेत्र प्रफुल्ल कमल दल के सदृश सुन्दर एवं विशाल हैं।) वे परम सुन्दरी हैं और दिव्य रथ पर विराजमान हैं। इस प्रकार उनका ध्यान करके कवच धारण करे।।२–३।।

यमुना मे शिरःपातु कृष्णा नेत्रद्वयं सदा।
श्यामा भ्रूभंगदेशं च नासिकां नाकवासिनी।।४।।
कपोलौ पातु मे साक्षात् परमानन्दरूपिणी।

कृष्णवामांससंभूता पातु कर्णद्वयं मम।।५।।

अधरौ पातु कालिन्दी चिबुकं सूर्यकन्यका।

यमस्वसा कन्धरां च हृदयं मे महानदी।।६।।

कृष्णप्रिया पातु पृष्ठं तटिनी मे भुजद्वयम्।

श्रोणी तटं च सुश्रोणी कटिं में चारुदर्शना।।७।।

उरुद्वयं तु रम्भोरूर्जानुनी त्वंघ्रिमेदिनी।

गुल्फौ रासेश्वरी पातु पादौ पापापहारिणी।।

अन्तर्बहिरधश्चोर्ध्वं दिशासु विदिशासु च।

समन्तात् पातु जगतः परिपूर्णतमप्रियाः।।

स्नान करके पूर्वाभिमुख हो मौन भाव से कुशासन पर बैठ और कुशों द्वारा शिखा बंधनकर संध्यावंदन करने के पश्चात् ब्राह्मण (अथवा द्विजमात्र) स्वस्तिक आसन से स्थित होकर कवच का पाठ करे। यमुना मेरे मस्तक की रक्षा करे और कृष्ण हमेशा दोनों नेत्रों की। श्यामा भ्रूभंग देश की और नाकवासिनी नासिका की रक्षा करें। साक्षात् परमानंद रूणिनी मेरे दोनों कपोलों की रक्षा करें। श्रीकृष्ण वामांस संभूता श्रीकृष्ण के बांये कंधे से प्रकट हुई व देवी मेरे दोनों कानों का संरक्षण करें। कालिन्दी अधरों की और सूर्यकन्या चिबुक की रक्षा करे। यमस्वसा यमराज की बहिन मेरी ग्रीवा की और महानदी मेरे हृदय की रक्षा करें। कृष्ण प्रिय पृष्ठभाग का और तटिनी मेरी दोनों भुजाओं का रक्षण करें। सुश्रोणी श्रोणी तट (नितम्ब) की और चारुदर्शना मेरे कटि प्रदेश

की रक्षा करें। रम्भोरू दोनों ऊरूओं (जांघों) की और अङ्घ्रिभेदिनी मेरे दोनों घुटनों की रक्षा करें। रासेश्वरी गुल्फों का और पापापहारिणी पाद युगल का त्राण करें। परिपूर्ण समप्रिया भीतर बाहर नीचे ऊपर तथा दिशाओं और विदिशाओं में सब ओर से मेरी रक्षा करें। ।।४–१०।।

इदं श्रीयमुनायाश्च कवचं परमाद्भुतम्।
दशवारं पठेत् भक्त्या निर्धनो धनवान् भवेत्।
त्रिभिर्मासैः पठेत् श्रीमान् ब्रह्मचारी मिताशनः।
सर्वराज्याधिपत्यत्वं प्राप्यते नात्र संशय।।
दशोत्तरशतं नित्यं त्रिमासावधि भक्तितः।
यः पठेत् प्रयतोभूत्वा तस्य किं किं न जायते।।
यः पठेत् प्रातरूत्थाय सर्वतीर्थ फलं लभेत्।
अन्ते व्रजेत् परंधाम गोलोकं योगिदुर्लभम्।।११–१४।।

।।यमुना कवच संपूर्ण।।

यह श्री यमुना का परम अद्भुत कवच है जो भक्ति भाव से दस बार इसका पाठ करता है। वह निर्धन भी धनवान् हो जाता है। जो बुद्धिमान् मनुष्य ब्रह्मचर्य के पालन पूर्वक परिमित आहार का सेवन करते हुए तीन मास तक इसका पाठ करेगा। वह संपूर्ण राज्यों का आधिपत्य प्राप्त कर लेगा। इसमें संदेह नहीं है। जो तीन महिने की अवधि तक प्रतिदिन भक्ति भाव से शुद्ध चित्त होकर इसका एक सौ दस बार पाठ करेगा। उसको क्या क्या नहीं मिल जायगा? जो प्रातः काल उठकर इसका पाठ करेगा उसे

संपूर्ण तीर्थों में स्नान का फल मिल जायगा तथा अन्त में वह योगि दुर्लभ परम धाम गोलोक में चला जायगा।

"यमुना कवच संपूर्ण"

-: श्री सुदर्शन चक्रराज स्तुति :-

दुर्वासाजी की दुःख निवृत्ति

श्रीशुक उवाच

एवं भगवताऽऽदिष्टो दुर्वासाश्चक्रतापितः।
अंबरीषमुपावृत्य तत्पादौ दुःखितोऽग्रहीत्।।१।।
तस्य सोद्यमनं वीक्ष्य पादस्पर्शविलंजितः।
अस्तावीत् तद्धरेरस्त्रंकृपया पीडितो भृशम्।।२।।

श्री शुकरेवजी कहते हैं- परीक्षित्! जब भगवान् ने इस प्रकार आज्ञा दी तब सुदर्शन चक्र की ज्वाला से जलते हुए दुर्वासा लौट कर राजा अंबरीश के पास आये और उन्होंने अत्यन्त दुःखी होकर राजा के पैर पकड़ लिये।।१।। दुर्वासाजी की यह चेष्टा देखकर और उनके चरण पकड़ने से लज्जित होकर राजा अम्बरीष भगवान् के चक्र की स्तुति करने लगे। उस समय उनका हृदय दयावश अत्यन्त पीडित हो रहा था।।२।।

अंबरीष उवाच

त्वमग्निर्भगवान् सूर्यस्त्वं सोमोज्योतिषां पतिः।
त्वमापस्त्वं क्षितिर्व्योम वायुमात्रेन्द्रियाणिच।।३।।

सुदर्शन नमस्तुभ्यं सहस्राराच्युतप्रिय।

सर्वास्त्रघातिन् विप्राय स्वस्तिभूया इडस्पते।।४।।

अंबरीष ने कहा – प्रभो सुदर्शन आप अग्निस्वरूपा है। आप ही परम समर्थ सूर्य हैं। समस्त नक्षत्र मंडल के अधिपति चन्द्रमा भी आपके स्वरुप हैं। जल, पृथ्वी, आकाश, वायु, पंच तंमात्रा और संपूर्ण इंद्रियों के रूप में भी आप हैं।।३।। भगवान् के प्यारे, हजार दांत वाले चक्र देव! मैं आपको नमस्कार करता हूँ। समस्त अस्त्र शस्त्रों को नष्ट कर देने वाले एवं पृथ्वी के रक्षक। आप इन ब्राह्मण की रक्षा कीजिये।।४।।

त्वं धर्मस्त्वमृतं सत्यं त्वं यज्ञोऽरिवल यज्ञभुक्।

त्वंलोकपालः सर्वात्मा त्वं तेजः पौरूषं परम्।।५।।

नमः सुनाभाखिलधर्मसेतवे। ह्यधर्मशीलासुरधूमकेतवे।

त्रैलोक्यगोपाय विशुद्धवर्चसे, मनोजवायाद्भुतकर्मणे गृणे ।।६।।

आप ही धर्म है मधुर एवं सत्य वाणी हैं, आप ही समस्त यज्ञों के अधिपति और स्वयं यज्ञ भी हैं। आप समस्त लोकों के रक्षक एवं सर्वलोक स्वरूप भी हैं। आप परम पुरूष परमात्मा के श्रेष्ठ तेज हैं।।५।। सुनाभ! आप समस्त धर्मों की मर्यादा के रक्षक हैं। अधर्म का आचरण करने वाले असुरों को भस्म करने के लिये आप साक्षात् अग्नि हैं। आप ही तीन लोकों के रक्षक एवं विशुद्ध तेजोमय हैं। आपकी गति मन के वेग के समान है और आपके कर्म अद्भुत हैं। मैं आपको नमस्कार करता हूँ, आपकी स्तुति करता हूँ।

त्वत्तेजसा धर्ममयेन संहृतं तमः प्रकाशश्च धृतो महात्मनाम्।
दुरत्यस्ते महिमा गिरांपते त्वद्रूपमेतत् सदसत् परावरम्।।७।।
यदा विसृष्टस्त्वमनंजनेन वै बलं प्रविष्टोऽजित दैत्यदानवम्।
बाहूदरोर्वंघ्रि शिरोधराणि वृक्णन्नजस्रंप्रधने विराजत।।८।।

वेद वाणी के अधीश्वर! आपके धर्म मयतेज से अन्धकार का नाश होता है और सूर्य आदि महापुरुषों के प्रकाश की रक्षा होती है। आपकी महिमा का पार अत्यन्त कठिन है। ऊंचे नीचे और छोटे बड़े के भेदभाव से युक्तयह समस्त कार्य कारणात्मक संसार आपका ही स्वरूप है।।७।।

सुदर्शन चक्र! आप पर कोई विजय नहीं प्राप्त सकता। जिस समय निरंजन भगवान् आपको चलाते हैं और दैत्य एवं दानवों की सेना में प्रवेश करते हैं उस समय युद्ध भूमि में उनकी भुजा, उदर, जंघा, चरण और गरदन आदि निरंतर काटते हुए आप अत्यन्त शोभायमान होते हैं।।८।।

स त्वं जगत्त्राण खलप्रहाणये निरूपितः सर्वसहो गदाभृता।
विप्रस्यचात्मत्कुल दैवहेतवे विधेहि भद्रं तदनुग्रहो हि नः।।२।।
यद्यस्ति दत्तमिष्टं वा स्वधर्मो वा स्वनुष्ठितः।
कुलं नो विप्र दैवं चेद् द्विजो भवतु विज्वरः।।१०।।

विश्व के रक्षक! आप रणभूमि में सब का प्रहार सह लेते हैं, आपका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता गदाधारी भगवान् ने दुष्टों के नाश के लिये ही आपको नियुक्त किया है। आप कृपा करके

हमारे कुल के भाग्योदय के लिये दुर्वासा जी का कल्याण कीजिये। हमारे ऊपर यह आपका महान् अनुग्रह होगा।।९।। यदि मैंने कुछ भी दान किया हो यज्ञ किया हो अथवा अपने धर्म का पालन किया हो, यदि हमारे वंश के लोग ब्राह्मणों को ही अपना आराध्यदेव समझते रहें हों, तो दुर्वासाजी की जलन मिट जाय।।१०।।

यदि नो भगवान् प्रीतः एकः सर्वगुणाश्रयः।

सर्वभूतात्मभावेन द्विजोभवतु विज्वरः।।११।।

श्री शुकउवाच

इति संस्तुवतो राज्ञो विष्णुचक्रं सुदर्शनम्।

अशाम्यत् सर्वतो विप्रं प्रदहद् राजयांचया।।१२।।

भगवान् समस्त गुणों के एक मात्र आश्रय हैं। यदि मैं ने समस्त प्राणियों के आत्मा के रूप में उन्हें देखा हो और वे मुझ पर प्रसन्न हों तो दुर्वासाजी के हृदय की सारी जलन मिट जाय।।१२।।

श्री शुकदेवजी कहते हैं :-

जब राजा अम्बरीष ने दुर्वासाजी को सब ओर से जलाने वाले भगवान् के सुदर्शन चक्र की इस प्रकार स्तुति की तब उनकी प्रार्थना से चक्र शांत हो गया।।१२।।

स मुक्तोऽस्याग्नितापेन दुर्वासाः स्वस्तिमांस्ततः।

प्रशशंस तमुर्वीशं युंजानः परमाशिषः।।१३।।

दुर्वासा उवाच -

अहो अनन्तदासानां महत्त्वं दृष्टमद्यमे।
कृतागसोऽपियद् राजन् मंगलानि समीहसे।।१४।।

जब दुर्वासा चक्र की आग से मुक्तहो गये और उनका चित्त स्वस्थ हो गया तब वे राजा अम्बरीष को अनेकानेक उत्तम आशीर्वाद देते हुए उनकी प्रशंसा करने लगे।।१३।।

दुर्वासाजी ने कहा–

धन्य हैं! आज मैंने भगवान् के प्रेमी भक्तों का महत्त्व देखा। राजन्! मैंने आपका अपराध किया फिर भी आप मेरे लिये मंगल कामना ही कर रहे हैं।।१४।।

दुष्करः को नु साधूनां दुस्त्यजो वा महात्मनाम्।
यैः संगृहीतो भगवान् सात्वतामृषभो हरिः।।१५।।
यन्नामश्रुतिमात्रेण पुमान् भवति निर्मलः।
तस्य तीर्थपदः किं वा दासानामव शिष्यते।।१६।।

जिन्होंने भक्त वत्सल भगवान् श्रीहरि के चरण कमलों को दृढ़ प्रेमभाव से पकड़ लिया है–उन साधु पुरुषों के लिये कौनसा कार्य कठिन है? जिनका हृदय उदार है वे महात्मा भला, किस वस्तु का परित्याग नहीं कर सकते?।।१५।। जिनके मंगलमय नामों के श्रवण मात्र से जीव निर्मल हो जाता है। उन्हीं तीर्थ पर भगवान् के चरण कमलों के जो दास हैं, उनके लिये कौनसा कर्त्तव्य शेष रह जाता है।।१६।।

राजन्ननुगृहीतोऽहं त्वयातिकरूणात्मना।
मदधं पृष्ठतः कृत्वा प्राणाः यन्मेऽभिरक्षिताः।।१७।।
राजा तमकृताहारः प्रत्यागमनकांक्षया।
चरणावुपसंगृह्य प्रसाद्य समभोजयत्।।१८।।

महाराज अम्बरीष! आपका हृदय करूणा भाव से परिपूर्ण है। आपने मेरे ऊपर महान् अनुग्रह किया। अहो आपने मेरे अपराध को भुलाकर मेरे प्राणों की रक्षा की है।।१७।।

परीक्षित! जब से दुर्वासाजी भागे थे, तब से अब तक राजा अम्बरीष ने भोजन नहीं किया था। वे उनके लौटने की बाट देख रहे थे। अब उन्होंने दुर्वासाजी के चरण पकड़ लिये और उन्हें प्रसन्न करके विधिपूर्वक भोजन कराया।।१८।।

सोऽशित्वाऽऽदृतमानीतमातिथ्यं सार्वकामिकम्।
तृप्तात्मा नृपतिंप्राह भुज्यतामिति सादरम्।।१९।।
प्रीतोऽस्म्यनुगृहीतोऽस्मि तव भागवतस्य वै।
दर्शनस्पर्शनालापै रातिथ्येनात्ममेधसा।।२०।।

राजा अम्बरीष बड़े आदर से अतिथि के योग्य सब प्रकार की भोजन सामग्री ले आये। दुर्वासाजी भोजन करके तृप्त हो गये। अब उन्होंने आदर से कहा। राजन् अब आप भी भोजन कीजिये।।१९।। अम्बरीष! आप भगवान् के परम प्रेमी भक्तहैं। आपके दर्शन, स्पर्श बातचीत और मनको भगवान् की और प्रवृत्त करने वाले आतिथ्य से मैं अत्यन्त प्रसन्न और अनुगृहीत हुआ हूँ।।२०।।

कर्मावदातमेतत् ते गायन्तिस्वःस्त्रियोमुहुः।

कीर्तिं परमपुण्यांच कीर्तयिष्यति भूरियम्।।२१।।

श्री शुकउवाच

एवं संकीर्त्य राजानं दुर्वासाः परितोषितः।

ययौ विहावयसाऽऽमन्त्र्य ब्रह्मलोकमहैतुकम्।।२२।।

स्वर्ग की देवांगनाएं बार बार आपके इस उज्जवल चरित्र का गान करेंगी। यह पृथ्वी आपकी परम पुण्यमयी कीर्ति का संकीर्तन करती रहेगी।।२१।।

श्री शुकदेवजी कहते हैं

दुर्वासाजी ने बहुत ही संतुष्ट होकर राजा अम्बरीष के गुणों की प्रशंसा की और उसके पश्चात् उनसे अनुमति लेकर आकाश मार्ग से उस ब्रह्म लोक की यात्रा की जो केवल निष्काम कर्म से ही प्राप्त होता है।।२२।।

संवत्सरोऽत्यगात् तावद् यावता नागतो गतः।

मुनिस्तद्दर्शनाकांक्षो राजाऽब्भक्षो बभूव ह।।२३।।

ऋषेर्विमोक्षं व्यसनं च बुद्ध्वा मेने स्ववीर्यं च परानुभावम्।।२४।।

परीक्षित्। जब सुदर्शन चक्र से भयभीत होकर दुर्वासाजी भाग गये थे, तब से लेकर उनके लौटने तक एक वर्ष का समय बीत गया। इतने दिनों तक राजा अम्बरीष उनके दर्शन की आकांक्षा से केवल जल पीकर रहे।।२३।। जब दुर्वासा जी चले गये तब उनके भोजन से बचे हुए अत्यन्त पवित्र अन्न का उन्होंने भोजन किया। अपने

कारण दुर्वासा जी का दुःख में पड़ना और फिर अपनी ही प्रार्थना से उनका छूटना इन दोनों बातों को उन्होंने अपने द्वारा होने पर भी भगवान् की ही महिमा समझा।।२४।।

एवं विधानेकगुणः स राजा परात्मति ब्रह्मणि वासुदेवे।
क्रियाकलापैः समुवाह भक्तिं यथाऽऽविरिञ्चियान् निरयांश्चकार।।२५।।

अथाम्बरीष स्तनयेषु राज्यं समानशीलेषु विसृज्य धीरः।
वनं विवेशात्मनि वासुदेवे मनो दधद् ध्वस्तगुणप्रवाहः।।२६।।

इत्येतत् पुण्यमाख्यानमम्बरीषस्य भूपतेः।
संकीर्तयन्ननुध्यायन भक्तो भगवतो भवेत्।।२७।।

राजा अम्बरीष के ऐसे ऐसे अनेकों गुण थे। अपने समस्त कर्मों के द्वारा वे परब्रह्म परमात्मा श्री भगवान् में भक्तिभाव की अभिवृद्धि करते रहते थे। उस भक्ति के प्रभाव से उन्होंने ब्रह्मलोक तक के समस्त भोगों को नरक के समान समझा।।२५।। तदन्तर राजा अम्बरीष ने अपने ही समान भक्त पुत्रों पर राज्य का भार छोड़ दिया और स्वयं वे वन में चले गये। वहाँ वे बड़ी धीरता के साथ आत्मस्वरूप भगवान् में अपना मन लगाकर गुणों के प्रवाह रूप संसार से मुक्त हो गये।।२६।।

परीक्षित! महाराज अम्बरीष का यह परम पवित्र आख्यान है। जो इसका संकीर्तन और स्मरण करता है वह भगवान् का भक्त हो जाता है।।२७।।

।।श्री सुदर्शन चक्रराज स्तुति संपूर्ण।।

श्रीहरिः

(14) अथ श्रीनारायणकवचम्

राजोवाच

यया गुप्तः सहस्राक्षः सवाहान् रिपुसैनिकान्।
क्रीडान्निव विनिर्जित्य त्रिलोक्या बुभुजे श्रियम्।।१।।
भगवंस्तन्ममाख्याहि वर्म नारायणात्मकम्।
यथाऽऽततायिनः शत्रून् येन गुप्तोऽजयन्मृधे।।२।।

श्रीशुक उवाच

वृतः पुरोहितस्त्वाष्ट्रो महेन्द्रायानुपृच्छते।
नारायणाख्यं वर्माह तदिहैकमनाः शृणु।।३।।

राजा परीक्षित्ने पूछा – भगवान्! देवराज इन्द्र ने जिससे सुरक्षित होकर शत्रुओं की चतुरङ्गिणी सेना को खेल-खेल में अनायास ही जीतकर त्रिलोकी की राजलक्ष्मी का उपभोग किया, आप उस नारायण कवच को मुझे सुनाइये और यह भी बतलाइये कि उन्होंने उससे सुरक्षित होकर रणभूमि में किस प्रकार आक्रमणकारी शत्रुओं पर विजय प्राप्त की।।१-२।।

श्रीशुकदेवजी ने कहा – परीक्षित्! जब देवताओं ने विश्वरूप को पुरोहित बना लिया, तब देवराज इन्द्र से प्रश्न करने पर विश्वरूप ने उन्हें नारायण कवच का उपदेश किया। तुम एकाग्रचित से उसका श्रवण करो।।३।।

विश्वरूप उवाच

धौतङ्घ्रिपाणिराचम्य सपवित्र उदङ्मुखः।
कृस्खाङ्गकरन्यासो मन्त्राभ्यां वाग्यतः शुचिः।।४।।
नारायणमयं वर्म संनह्येद् भय आगते।
पादयोर्जानुनोरूवोरूदरे हृद्यथोरसि।।५।।
मुखे शिरस्यानुपूर्व्यादोंकारादीनि विन्यसेत्।
ॐ नमो नारायणायेति विपर्ययमथापि वा।।६।।
करन्यासं ततः कुर्याद् द्वादशाक्षर विद्यया।
प्रणवादियकारान्तमङ्गुल्यङ्गुष्ठपर्वसु।।७।।
न्यसेद्धृदय ओङ्कारं विकारमनु मूर्धनि।

विश्वरूप ने कहा–देवराज इन्द्र! भय का अवसर उपस्थित होने पर नारायण कवच धारण करके अपने शरीर की रक्षा कर लेनी चाहिये। उसकी पवित्र विधि यह है कि पहले हाथ–पैर धोकर आचमन करे, फिर हाथ में कुशकी पवित्री धारण करके उत्तर मुँह बैठ जाय। इसके बाद कवचधारणपर्यन्त और कुछ न बोलने का निश्चय करके पवित्रता से 'ॐ नमो नारायणाय' और 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' इन मन्त्रों के द्वारा हृदयादि अङ्गन्यास तथा अङ्गुष्ठादि करन्यास करे। पहले 'ॐ नमो नारायणाय' इस अष्टाक्षर मन्त्र के ॐ आदि आठ अक्षरों का क्रमशः पैरों, घुटनों, जाँघों, पेट, हृदय, वक्षः स्थल, मुख और सिर में न्यास करे। अथवा पूर्वोक्त मन्त्र के यकार से लेकर ॐ कारपर्यन्त आठ अक्षरों का

सिर से आरम्भ करके उन्हीं आठ अङ्गों में विपरीत क्रम से न्यास करे।।४-६।। तदन्तर 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' - इस द्वादशाक्षर मन्त्र के ॐ आदि बारह अक्षरों का दायीं तर्जनी से बायीं तर्जनी तक दोनों हाथ की आठ अँगुलियों और दोनों अँगूठों की दो-दो गाँठों में न्यास करें।।७।। फिर 'ॐ विष्णवे नमः' इस मन्त्र के पहले

षकारं तु भ्रुवोर्मध्ये णकारं शिखया दिशेत्।।८।।
वेकारं नेत्रायोर्युञ्ज्यान्नकारं सर्वसंधिषु।
मकारमस्त्रमुद्दिश्य मन्त्रमूर्तिर्भवेद् बुधः।।९।।
सविसर्ग फडन्तं तत् सर्वदिक्षु विनिर्दिशेत्।
ॐ विष्णवे नम इति।।१०।।
आत्मानं परमं ध्यायेद् ध्येयं षट्शक्तिभिर्युतम्।
विद्यातेजस्तपोमूर्तिमिमं मन्त्रमुदाहरेत्।।११।।
ॐ हरिर्विदध्यान्मम सर्वरक्षां
न्यस्ताङ्घ्रिपद्मः पतगेन्द्रपृष्ठे।
दरारिचर्मासिग देषुचापपाशान् दधानोऽष्टगुणोऽष्टबाहुः।।१२।।

अक्षर 'ॐ' का हृदय में, 'वि' का ब्रहारन्ध्र में, 'ष' का भौंहों के बीच में, 'ण' का चोटी में, 'वे' का दोनों नेत्रों में और 'न' का शरीर की सब गाँठों में न्यास करे। तदन्तर 'ॐ मः अस्त्राय फट्' कहकर दिग्बन्ध करे। इस प्रकार न्यास करने से इस विधि को जानने वाला पुरुष मन्त्र स्वरूप हो जाता है।।८-२०।। इसके

बाद समग्र ऐश्वर्य, धर्म, यश, लक्ष्मी, ज्ञान और वैराग्य से परिपूर्ण इष्टदेव भगवान् का ध्यान करे और अपने को भी तद्रूप ही चिन्तन करे। तत्पश्चात् विद्या, तेज और तपः स्वरूप इस कवच का पाठ करे।।११।।

भगवान् हरि गरुड़जी की पीठपर अपने चरण-कमल रखे हुए हैं। अणिमादि आठों सिद्धियाँ उनकी सेवा कर रही है। आठ हाथों में शंख, चक्र, ढाल, तलवार, गदा, बाण, धनुष और पाश (फंदा) धारण किये हुए है। वे ही ॐ कारस्वरूप प्रभु सब प्रकार से सब और से मेरी रक्षा करें।।१२।।

जलेषु मां रक्षतु मत्स्यमूर्ति-
र्यादोग्णेभ्यो वरूणस्य पाशात्।
स्थलेषु मायावटुवामनोऽव्यात्
त्रिविक्रमः खेऽवतु विश्वरूपः।।१३।।
दुर्गेष्वटव्याजिमुखादिषु प्रभुः
पायान्नृसिंहोऽसुरयूथपारिः।
विमुञ्चतो यस्य महाट्टहासं
दिशो विनेदुर्न्यपतंश्च गर्भाः।।१४।।
रक्षत्वसौ माध्वनि यज्ञकल्पः
स्वदंष्ट्रयोन्नीतधरो वराहः।
रामोऽद्रिकूटेष्वथ विप्रवासे
सलक्ष्मणोऽव्याद् भरताग्रजोऽस्मान्।।१५।।

मामुग्रधर्मादखिलात् प्रमादा-

न्नारायणः पातु नरश्च हासात्।

मत्स्यमूर्ति भगवान् जल के भीतर जल जन्तुओं से और वरुण के पाश से मेरी रक्षा करें। माया से ब्रह्मचारी का रूप धारण करने वाले वामन भगवान् स्थल पर और विश्वरूप श्रीत्रिविक्रम भगवान् आकाश में मेरी रक्षा करें।।१३।। जिनके घोर अट्टहास करने पर सब दिशाएँ गूँज उठी थीं और गर्भवती दैत्यपत्नियों के गर्भ गिर गये थे। वे दैत्ययूथपतियों के शत्रु भगवान् नृसिंह जंगल, रणभूमि आदि विकट स्थानों में मेरी रक्षा करें।।।१४।। अपनी दाढ़ों पर पृथ्वी को उठा लेने वाले यज्ञमूर्ति वराह भगवान् मार्ग में, परशुरामजी पर्वतों के शिखरों पर और लक्ष्मणजी के सहित भरत के बड़े भाई भगवान् रामचन्द्र प्रवास के समय मेरी रक्षा करें।।१५।। भगवान् नारायण मारण-मोहन आदि भयंकर अभिचारों और सब प्रकार के प्रमाद से मेरी रक्षा करें।

दत्तस्त्वयोगादथ योगनाथः

पायाद् गुणेशः कपिलः कर्मबन्धात्।।१६।।

सनत्कुमारोऽवतु कामदेवा-

द्धयशीर्षा मां पथि देवहेलनात्।

देवर्षिवर्यः पुरुषार्चनान्तरात्

कूर्मो हरिर्मां निरयादशेषात्।।१७।।

धन्वन्तरिर्भगवान् पात्वपथ्याद्

द्वन्द्वाद् भयादृषभो निर्जितात्मा।
यज्ञश्च लोकादवताज्जनान्ताद्
बलो गणात् क्रोधवशादहीन्द्रः।।१८।।
द्वैपायनो भगवानप्रबोधाद्
बुद्धस्तु पाखण्डगणात् प्रमादात्।
कल्किः कलेः कालमलात् प्रपातु
धर्मावनायोरुकृतावतारः।।१९।।

ऋषिश्रेष्ठ नर गर्व से, योगेश्वर भगवान् दत्तात्रेय योग के विघ्नों से और त्रिगुणाधिपति भगवान् कपिल कर्मबन्धनों से मेरी रक्षा करें।।१६।। परमर्षि सनत्कुमार कामदेव से, हयग्रीव भगवान् मार्ग में चलते समय देवमूर्तियों को नमस्कार आदि न करने के अपराध से, देवर्षि नारद सेवापराधों से और भगवान् कच्छप सब प्रकार के नरकों से मेरी रक्षा करें।।१७।। भगवान् धन्वन्तरि कुपथ्य से, जितेन्द्रिय भगवान् ऋषभदेव सुख-दुःख आदि भयदायक द्वन्द्वो से, यज्ञभगवान् लोकापवाद से, बलरामजी मनुष्यकृत कष्टों से और श्रीशेषजी क्रोधवशनामक सर्पों के गण से मेरी रक्षा करें।।१८।। भगवान् श्रीकृष्ण द्वैपायन व्यासजी अज्ञान से तथा बुद्धदेव पाखण्डियों से और प्रमाद से मेरी रक्षा करें। धर्मरक्षा के लिये महान् अवतार धारण करने वाले भगवान् कल्कि पापबहुल

मां केशवो गदया प्रातरव्याद्
गोविन्द आसङ्गवमात्तवेणुः।

नारायणः प्राह्ण उदात्तशक्ति

र्मध्यंदिने विष्णुररीन्द्र पाणिः।।२०।।

देवोऽपराह्णे मधुहोग्रधन्वा

सायं त्रिधामावतु माधवो माम्।

दोषे हृषीकेश उतार्धरात्रे

निशीथ एकोऽवतु पद्मनाभः।।२१।।

श्रीवत्सधामापररात्र ईशः

प्रत्यूष ईशोऽसिधरो जनार्दनः।

दामोदरोऽव्यादनुसंध्यं प्रभाते

विश्वेश्वरो भगवान् कालमूर्तिः।।२२।।

कलिकाल के दोषों से मेरी रक्षा करें।।१९।। प्रातःकाल भगवान् केशव अपनी गदा लेकर, कुछ दिन चढ़ जाने पर भगवान् गोविन्द अपनी बाँसुरी लेकर, दोपहर के पहले भगवान् नारायण अपनी तीक्ष्ण शक्ति लेकर और दोपहर को भगवान् विष्णु चक्रराज सुदर्शन लेकर मेरी रक्षा करें।।२०।। तीसरे पहर में भगवान् मधुसूदन अपना प्रचण्ड धनुष लेकर मेरी रक्षा करें। सायंकाल में ब्रह्मा आदि त्रिमूर्तिधारी माधव, सूर्यास्त के बाद हृषीकेश, अर्धरात्रि के पूर्व तथा अर्धरात्रि के समय अकेले भगवान् पद्मनाभ मेरी रक्षा करें।।२१।। रात्रि के पिछले प्रहर में श्री वत्सलाञ्छन पूर्व श्रीदामोदर और सम्पूर्ण संध्याओं में कालमूर्ति भगवान् विश्वेश्वर मेरी रक्षा करें।।२२।।

चक्रं युगान्तानलतिग्मनेमि

भ्रमत् समन्ताद् भगवत्प्रयुक्तम्।

दंदग्धि दंदग्ध्यरिसैन्यमाशु

कक्षं यथा वातसखो हुताशः।।२३।।

गदेऽशनिस्पर्शनविस्फुलिङ्गे

निष्पिण्ढि निष्पिण्ढयजितप्रियासि।

कूष्माण्डवैनायकयक्षरक्षो-

भूतग्रहांश्चूर्णय चूर्णयारीन्।।२४।।

त्वं यातुधानप्रमथप्रेतमातृ-

पिशाचविप्रग्रहघोरदृष्टीन्।

दरेन्द्र विद्रावय कृष्णपूरितो

भीमस्वनोऽरेर्हृदयानि कम्पयन्।।२४।।

सुदर्शन! आपका आकार चक्र (रथ के पहिये) की तरह है। आपके किनारे का भाग प्रलयकालीन अग्नि के समान अत्यन्त तीव्र है। आप भगवान् की प्रेरणा से सब ओर घूमते रहते हैं। जैसे आग वायु की सहायता से सूखे घास-फूस को जला डालती है, वैसे ही आप हमारी शत्रु सेनाओं को शीघ्र से शीघ्र जला दीजिये, जला दीजिये।।२३।। कौमोदकी गदा! आपसे छूटने वाली चिनगारियों का स्पर्श वज्र के समान असह्य है। आप भगवान् विनायक, यक्ष, राक्षस, भूत और प्रतादि ग्रहों को अभी कुचल डालिये, कुचल डालिये तथा मेरे शत्रुओं को चूर-चूर कर

दीजिये।।२४।। शंख श्रेष्ठ! आप भगवान् श्री कृष्ण के फूँकने से भयंकर शब्द करके मेरे शत्रुओं का दिल दहला दीजिये एवं यातुधान, प्रथम, प्रेत, मातृका, पिशाच तथा ब्रह्मराक्षस आदि भयावने प्राणियों को यहाँ से झटपट भगा दीजिये।।२५।।

त्वं तिग्मधारासिवरारिसैन्य-

मीशप्रयुक्तो मम छिन्धि छिन्धि।

चक्षूंषि चर्मञ्छतचन्द्र छादय

द्विषामघोनां हर पापचक्षुषाम्।।२५।।

यन्नो भयं ग्रहेभ्योऽभूत् केतुभ्यो नृभ्य एव च।

सरीसृपेभ्यो दंष्ट्रिभ्यो भूतेभ्योंऽहोभ्य एव वा।।२७।।

सर्वाण्येतानि भगवान्नामरूपास्त्रकीर्तनात्।

प्रयान्तु संक्षयं सद्यो ये नः श्रेयः प्रतीपकाः।।२८।।

गरुडो भगवान् स्तोत्रस्तोभश्छन्दोमयः प्रभुः।

रक्षत्वशेषकृच्छ्रेभ्यो विष्वक्सेनः स्वनामभिः।।२९।।

सर्वापद्भ्यो हरेर्नामरूपयानायुधानि नः।

बुद्धीन्द्रियमनःप्राणान् पान्तु पार्षदभूषणाः।।३०।।

भगवान् की श्रेष्ठ तलवार! आपकी धार बहुत तीक्ष्ण है। आप भगवान् की प्रेरणा से मेरे शत्रुओं को छिन्न-भिन्न कर दीजिये। भगवान् की प्यारी ढाल! आपमें सैकड़ों चन्द्राकार मण्डल हैं। आप पापदृष्टि पापात्मा शत्रुओं की आँखें बंद कर दीजिये और उन्हें सदा के लिये अन्धा बना दीजिये।।२६।।

सूर्य आदि ग्रह, धूमकेतु (पुच्छल तारे) आदि केतु, दुष्ट मनुष्य, सर्पादि रेंगने वाले जन्तु, दाढ़ों वाले हिंसक पशु, भूत-प्रेत आदि तथा पापी प्राणियों से हमें जो-जो भय हो और जो-जो हमारे मङ्गलके विरोधी हों-वे सभी भगवान् के नाम, रूप तथा आयुधोंका कीर्तन करने से तत्काल नष्ट हो जायें।।२७-२८।। बृहद्, रथन्तर आदि सामवेदीय स्तोत्रों से जिनकी स्तुति की जाती है, वे वेदमूर्ति भगवान् गरुड़ और विष्वक्सेनजी अपने नामोचरण के प्रभाव से हमें सब प्रकार की विपत्तियों से बचाया।।२९।। श्रीहरि के नाम, रूप, वाहन, आयुध और श्रेष्ठ पार्षद हमारी बुद्धि, इन्द्रिय, मन और प्राणों को सब प्रकार की आपत्तियों से बचायें।।३०।।

यथा हि भगवानेव वस्तुतः सदसच्च यत्।

सत्येनानेन नः सर्वे यान्तु नाशमुपद्रवाः।।३१।।

यथैकात्म्यानुभावनां विकल्परहितः स्वयम्।

भूषणायुधलिङ्गाख्या धत्ते शक्तीः स्वमायया।।३२।।

तेनैव सत्यमानेन सर्वज्ञो भगवान् हरिः।

पातु सर्वैः स्वरूपैर्नः सदा सर्वत्र सर्वगः।।३३।।

विदिक्षु दिक्षूर्ध्वमधः समन्ता

दन्तर्बहिर्भगवान् नारसिंहः।

प्रहापयँल्लोकभयं स्वनेन

स्वतेजसा ग्रस्तसमस्ततेजाः।।३४।।

मघवन्निदमाख्यातं वर्म नारायणात्मकम्।

जितना भी कार्य अथवा कारण रूप जगत है, वह वास्तव में भगवान् ही हैं–इस सत्य के प्रभाव से हमारे सारे उपद्रव नष्ट हो जायँ।।३१।। जो लोग ब्रह्म और आत्मा की एकता का अनुभव कर चुके हैं, उनकी दृष्टि में भगवान् स्वरूप समस्त विकल्पों–भेदों से रहित है, फिर भी वे अपनी माया–शक्ति के द्वारा भूषण, आयुध और रूप नामक शक्तियों को धारण करते हैं। यह बात निश्चित रूप से सत्य है। इस कारण सर्वज्ञ, सर्वव्यापक भगवान् श्रीहरि सदा–सर्वत्र सब स्वरूपों से हमारी रक्षा करें।।३२–३३।। जो अपने भयंकर अट्टहास से सब लोगों के भय को भगा देते हैं और अपने तेज से सबका तेज ग्रस लेते हैं, वे भगवान् नृसिंह दिशा–विदिशा में, नीचे–ऊपर, बाहर–भीतर,–सब ओर से हमारी रक्षा करें।।३४।।

देवराज इन्द्र! मैंने तुम्हें यह नारायण कवच सुना दिया।

विजेष्यस्यञ्जसा येन दंशितोऽसुरयूथपान्।।३५।।

एतद् धारयमाणस्तु यं यं पश्यति चक्षुषा।

पदा वा संस्पृशेत् सद्यः साध्वसात् स विमुच्यते।।३६।।

न कुतश्चिद् भयं तस्य विद्यां धारतयो भवेत्।

राजदस्युग्रहादिभ्यो व्याघ्रादिभ्यश्च कर्हिचित्।।३७।।

इमां विद्यां पुरा कश्चित् कौशिको धारयन् द्विजः।

योगधारणया खाङ्गं जहौ स मरूधन्वनि।।३८।।

तस्योपरि विमानेन गन्धर्वपतिरेकदा।
ययौ चित्ररथः स्त्रीभिर्वृतो यत्र द्विजक्षयः।।३९।।
गगनान्न्यपतत् सद्यः सविमानो ह्यवाक्शिराः।

इस कवच से तुम अपने को सुरक्षित कर लो। बस, फिर तुम अनायास ही सब दैत्य यूथपतियों को जीत लोगे।।३५।। इस नारायणकवच को धारण करने वाला पुरुष जिसको भी अपने नेत्रों से देख लेता अथवा पैर से छू देता है, वह तत्काल भयो से मुक्त हो जाता है।।३६।। जो इस वैष्णवी विद्या को धारण कर लेता है, उसे राजा, डाकू, प्रेत, पिशाचादि और बाघ आदि हिंसक जीवों से कभी किसी प्रकार का भय नहीं होता ।।३७।। देवराज! प्राचीन काल की बात है, एक कौशिक गोत्री ब्राह्मण ने इस विद्या को धारण करके योग धारणा से अपना शरीर मरुभूमि में त्याग दिया।।३७।। जहाँ उस ब्राह्मण का शरीर अपना शरीर मरुभूमि में त्याग दिया।।३७।। जहाँ उस ब्राह्मण का शरीर पड़ा था, उसके ऊपर से एक दिन गन्धर्वराज चित्ररथ अपनी स्त्रियों के साथ विमान पर बैठकर निकले।।३९।। वहाँ आते ही वे नीचे की ओर सिर किये विमान सहित आकाश से पृथ्वी पर गिर पड़े। इस घटना से उनके आश्चर्य की सीमा न रही। जब उन्हें बालखिल्य मुनियों ने

स बालखिल्यवचनादस्थीन्यादाय विस्मितः।
प्रास्य प्राचीसरस्वत्यां स्नात्वा धाम स्वमन्वगात्।।४०।।

श्रीशुक उवाच

य इदं श्रृणुयात् काले यो धारयति चादृतः।
तं नमस्यन्ति भूतानि मुच्यसे सर्वतो भयात्।।४१।।
एतां विद्यामधिगतो विश्वरूपाच्छतक्रतुः।
त्रैलोक्यलक्ष्मीं बुभुजे विनिर्जित्य मृधेऽसुरान्।।४२।।

बतलाया कि यह नारायणकवच धारण करने का प्रभाव है तब उन्होंने उस ब्राह्मण देवता की हड्डियों को ले जाकर पूर्ववाहिनी सरस्वती नदी में प्रवाहित कर दिया और फिर स्नान करके वे अपने लोक को गये।।४०।।

श्रीशुकदेवजी कहते हैं–परीक्षित्! जो पुरुष इस नारायण कवच को समय पर सुनता है और जो आदरपूर्वक इसे धारण करता है, उसके सामने सभी प्राणी आदर से झुक जाते हैं और वह सब प्रकार के भयों से मुक्तहो जाता है।।४१।। परीक्षित्! शतक्रतु इन्द्र ने आचार्य विश्वरुपजी से यह वैष्णवी विद्या प्राप्त करके रणभूमि में असुरों को जीत लिया और वे त्रैलोक्य लक्ष्मी का उपभोग करने लगे।।४२।।

श्री नारायण कवचं सम्पूर्ण

(15) गजेन्द्र मोक्ष

श्री शुकः उवाच - श्री शुक देवजी ने कहा

एवं व्यवसितो बुद्धया समाधाय मनो हृदि।

जजाप परमं जाप्पं प्राग्जन्मन्यनु शिक्षितम्।।१।।

भावार्थ-बुद्धि द्वारा पिछले अध्याय में वर्णित रीति से निश्चय करके सीखकर कंठस्थ किये गये सर्वश्रेष्ठ एवं बारंबार दोहराने योग्य निम्नलिखित स्तोत्र का मन ही मन पाठ करने लगा।

गजेन्द्र उवाच - गजराजन ने (मन ही मन) कहा

ॐ नमो भगवते तस्मै यत एतच्चिदात्मकम्।

पुरुषायादिबीजाय परेशायामिधीमहि।।२।।

भावार्थ-जिनके प्रवेश करने पर (जिनकी चेतनता को पाकर) ये जड शरीर और मन आदि भी चेतन बन जाते हैं। चेतन की तरह व्यवहार करने लगता है। 'ओम' शब्द के द्वारा लक्षित तथा संपूर्ण शरीर में प्रकृति एवं पुरुषरूप से प्रविष्ट हुए उन सर्व समर्थ परमेश्वर को हम मन ही मन नमन करते हैं।

यस्मिन्निदं यश्चेदं येनेदं य इदं स्वयम्।

योऽस्मात्परस्माच्च परस्तं प्रपद्ये स्वयम्भुवम्।।३।।

भावार्थ-जिनके भरोसे (सहारे) यह विश्व टिका हुआ है, जिनसे यह निकला है, जिन्होंने इसकी रचना की है और जो स्वयं ही इसके रूप में प्रकट है, फिर भी जो इस दिखाई देने वाले जगत् से एवं उसकी कारण भूता प्रकृति से परे (विलक्षण) एवं श्रेष्ठ है,

उन अपने आप बिना किसी कारण के बने हुए भगवान् की मैं शरण लेता हूँ।

यः स्वात्मनीदं निजमाययार्पितं,
क्वचिद्विभातं क्व च तत्तिरोहितम्।।
अविद्धदृक् साक्ष्युभयं तदीक्षते,
स आत्ममूलोऽवतु मां परात्परः।।४।।

भावार्थ–अपनी संकल्प शक्ति द्वारा अपने ही स्वरुप में रचे हुए और इसीलिये सृष्टिकाल में प्रकट और प्रलयकाल में उसी प्रकार अप्रट रहने वाले इस शास्त्र प्रसिद्ध कार्य कारण रूप जगत् को जो अंकुरित दृष्टि होने के कारण साक्षी रूप से देखते रहते हैं–उनसे लिप्त नहीं होते हैं वे चक्षु आदि प्रकाशको के भी परम प्रकाशक प्रभु मेरी रक्षा करें।

कालेन पंचत्वमितेषु कृत्स्नशो,
लोकेषु पालेषु च सर्वहेतुषु।
तमस्तदाऽऽसीद् गहनं गभीरं,
यस्तस्य पारेऽभिविराजते विभुः।।५।।

भावार्थ–समय के प्रवाह से संपूर्ण लोकों के एवं ब्रह्मादि लोकपालों के पंच भूतों में प्रवेशकर जाने पर तथा पंचभूतों से लेकर महत्तत्व पर्यन्त संपूर्ण कारणों के उनकी परम कारण रूपा प्रकृति में लीन हो जाने पर उस समय दुर्ज्ञेय तथा अपार अंधकार रूप प्रकृति ही शेष रही थी। उसे अंधकार के परे अपने परम धाम में जो

सर्वव्यापक भगवान् सब ओर प्रकाशित रहते हैं, वे प्रभु मेरी रक्षा करें।

न यस्य देवा ऋषयः पदं विदु,
र्जन्तुः पुनः कोऽर्हति गन्तुमीरितुम्।
यथा नटस्याकृतिभिर्विचेष्टतो,
दुरत्यायानुक्रमणः स मावतु।।६।।

भावार्थ–अलग अलग रूपों में नाट्य करने वाले अभिनेता के वास्तविक स्वरूप को जिस प्रकार साधारण दर्शक नहीं जान सकते उसी प्रकार सत्त्वप्रधान देवता ऋषि भी जिनके स्वरूप को नहीं जानते, फिर अन्य साधारण जीव तो कौन जान अथवा वर्णन कर सकता है–वे दुर्गम चरित्र वाले प्रभु मेरी रक्षा करे।

दिदृक्षवो यस्य पदं सुमंगलं,
विमुक्तसंगामुनयः सुसाधवः।
चरन्त्यलोकव्रतमव्रणं वने,
भूतात्मभूताः सुहृदः स मे गतिः।।७।।

भावार्थ–आसक्तिसे सर्वथा छूटे हुए संपूर्ण प्राणियों में आत्मबुद्धि रखने वाले, सबके अकारण हितू एवं अतिशय सज्जन स्वभाव मुनिगण जिनके परम मंगलमय स्वरूप का साक्षात्कार करने की इच्छा से वन में रहकर अखण्ड, ब्रह्मचर्य आदि अलौकिक व्रतों का पालन करते हैं, वे प्रभु ही मेरी गति है।

न विद्यते यस्य च जन्म कर्म वा,

न नामरुपेगुणदोष एव वा।

तथापि लोकाप्ययसंभवाय यः,

स्वमायया तान्यनुकालमृच्छति।।८।।

भावार्थ–जिनका हमारी तरह कर्म वश न तो जन्म होता है और न जिनके द्वारा अहंकार प्रेरित कर्म ही होते हैं, जिनके निर्गुण स्वरूप का न तो कोई नाम है न रूप ही फिर भी जो समयानुसार जगत् की सृष्टि एवं प्रलय के लिये स्वेच्छा से जन्म आदि को स्वीकार करते हैं।

तस्मै नमः परेशाय ब्रह्मणेऽनन्तशक्त ये।

अरूपायोरूरूपाय नम आश्चर्य कर्मणे।।९।।

भावार्थ–उन अनन्त शक्तियुक्तपरब्रह्म परमेश्वर को नमस्कार है। उन प्राकृत आकार सहित एवं अनेको आकार वाले अद्भुत कर्मा भगवान् को बार–बार नमस्कार है।

नम आत्मप्रदीपाप साक्षिणे परमात्मने।

नमो गिरां विदूराय मनसश्चेतसामपि।।१०।।

भावार्थ–स्वयं प्रकाश एवं सबके साक्षी परमात्मा को नमस्कार है। उन प्रभु को जो मन, वाणी एवं चित्तवृत्तियों से भी परे हैं बार–बार नमस्कार है।

सत्त्वेन प्रतिलभ्याय नैष्कर्म्येण विपश्चिता।

नमः कैवल्यनाथाय निर्वाण सुखसंविदे।।११।।

भावार्थ–विवेकी पुरुष के द्वारा सत्त्वगुण विशिष्ट निवृत्ति धर्म के आचरण से प्राप्त होने योग्य मोक्ष सुख के देने वाले तथा मोक्ष सुख की अनुभूति रूप प्रभु को नमस्कार है।

नमः शान्ताय घोराय मूढाय गुणधर्मिणे।

निर्विशेषाय साम्याय नमो ज्ञानघनाय च।।१२।।

भावार्थ–सत्व गुण को स्वीकार करके शान्त, रजोगुण को स्वीकार करके घोर एवं तमोगुण को स्वीकार करके मूढ से प्रतीत होने वाले भेद रहित अत एव सदा समभाव से स्थित ज्ञान घन प्रभु को नमस्कार है।

क्षेत्रज्ञाय नमस्तुभ्यं सर्वाध्यक्षाय साक्षिणे।

पुरुषायात्ममूलाय मूलप्रकृतये नमः।।१३।।

भावार्थ–शरीर इन्द्रिय आदि के समुदाय रूप संपूर्ण पिंडों के ज्ञाता सब के स्वामी एवं साक्षी रूप आप को नमस्कार है, सब के अन्तर्यामी प्रकृति के भी परम कारण किन्तु स्वयं कारण रहित प्रभु को नमस्कार है।

सर्वेन्द्रियगुणद्रष्ट्रे सर्वप्रत्ययहेतवे।

असताच्छाययोक्ताय सदाभासाय ते नमः।।१४।।

भावार्थ–संपूर्ण इंद्रियों एवं उनके विषयों के ज्ञाता, समस्त प्रतीतियों के कारण रूप, संपूर्ण जड प्रपंच एवं सबकी मूलभूता अविद्या के द्वारा सूचित होने वाले तथा संपूर्ण विषयों के अविद्या रूप से प्रकाशित होने वाले आपको नमस्कार है।

नमो नमस्तेऽखिल कारणाय,
निष्कारणायाद्भुतकारणाय।
सर्वागमाम्नाय महार्णवाय,
नमोऽपवर्गाय परायणाय।।१५।।

भावार्थ–सबके कारण किन्तु स्वयं कारण रहित तथा कारण होने पर भी परिणाम रहित होने के कारण अन्य कारणों से विलक्षण कारण आपको बार बार नमस्कार है। संपूर्ण वेदों एवं शास्त्रों के परम तात्पर्य मोक्षरूप एवं श्रेष्ठ पुरुषों की परम गति भगवान् को नमस्कार है।

गुणारणिच्छन्नचिदूष्मपाय,
तत्क्षोभविस्फूर्जितमानसाय।
नैष्कर्म्यभावेन विवर्जितागम,
स्वयम्प्रकाशाय नमस्करोमि।।१६।।

भावार्थ–जो त्रिगुण रूप काष्ठों में छिपे हुए ज्ञान घन अग्नि है उक्त गुणों में हलचल होने पर जिनके मन में सृष्टि रचने की बाह्यवृत्ति जाग्रत हो जाती है तथा आत्म तत्व की भावना के द्वारा जो विधि निषेध रूप शास्त्र से ऊपर उठे हुए ज्ञानी महात्माओं मे जो स्वयं प्रकाशित रहते हैं, उन प्रभु को मैं नमस्कार करता हूँ।

मादृक्प्रपन्नपशुपाशविमोक्षणाय,
मुक्ताय भूरिकरूणाय नमोऽलयाय।
स्वांशेन सर्वतनुभृन्मनसि प्रतीत,

प्रत्यग्दृशे भगवते बृहते नमस्ते।।१७।।

भावार्थ–मुझ जैसे शरणागत पशु तुल्य (अविद्याग्रस्त) जीव की अविद्या रूप फांसी को सदा के लिये पूर्णरूप से काट देने वाले अत्यधिक दयालु एवं दया करने में कभी आलस्य न करने वाले नित्य मुक्तप्रभु को नमस्कार है। अपने अंश से संपूर्ण जीवों के मन में अन्तर्यामी रूप से प्रकट रहने वाले सब नियन्ता अनन्त परमात्मा आपको नमस्कार है।

आत्मात्मजाप्तगृहवितजनेषु सक्तै

र्दुष्प्रापणाय गुणसंग विवर्जिताय।

मुक्तात्मभिः स्वहृदये परिभाविताय।

ज्ञानात्मने भगवते नम ईश्वराय।।१८।।

भावार्थ–शरीर, पुत्र, मित्र, घर, संपत्ति एवं कुटुम्बियों में आसक्त लोगों के द्वारा कठिनता से प्राप्त होने वाले तथा मुक्तपुरुषों के द्वारा अपने हृदय में निरन्तर चिंतित ज्ञानस्वरूप सर्व समर्थ भगवान् को नमस्कार है।

यं धर्मकामार्थविमुक्ति कामा,

भजन्तइष्टां गतिमाप्नुवन्ति।

किंत्वाशिषो रात्यपि देहमव्ययं,

करोतु मेऽदभ्रदयो विमोक्षणम्।।१९।।

भावार्थ–जिन्हें धर्म अभिलषित भोग धन एवं मोक्ष की कामना से भजने वाले लोग अपनी मनचाही गति पा लेते हैं, अपितु जो

उन्हें अन्य प्रकार के अयाचित भोग एवं अविनाशी पार्षद शरीर भी देते हैं, वे अतिशय दयालु प्रभु मुझे इस विपत्ति से सदा के लिये उबार लें।

एकान्तिनो यस्यन कंचनार्थं,
वांछन्ति ये वै भगवत्प्रपन्नाः।
अत्यद्भुतं तच्चरितं सुमंगलं,
गायन्त आनंद समुद्रमग्नाः।।२०।।

भावार्थ–जिनके अनन्य भक्त जो वस्तुतः एक मात्र उन भगवान् के ही शरण है, धर्म अर्थ आदि किसी पदार्थ को नहीं चाहते, अपितु उन्हीं के परम मंगलमय एवं अत्यन्त विलक्षण चरित्रों का गान करते हुए आनन्द के समुद्र में गोते लगाते रहते हैं।

तमक्षरं ब्रह्म परं परेश,
मव्यक्त माध्यात्मिकयोगगम्यम्।
अतीन्द्रियं सूक्ष्ममिवातिदूर,
मनन्तमाद्यं परिपूर्णमीडे।।२१।।

भावार्थ–उन अविनाशी, सर्वव्यापक, सर्वश्रेष्ठ, ब्रह्मादि के भी नियामक अभक्तों के लिये अप्रकट होने पर भी भक्तियोग द्वारा प्राप्त करने योग्य अत्यन्त निकट होने पर भी माया के आचरण के अत्यन्त दूर प्रतीत होने वाले इन्द्रियों के द्वारा अगम्य अत्यन्त दुर्विज्ञेय अन्तरहित किंतु सब के आदिकारण एवं सब ओर से परिपूर्ण उन भगवान् की मैं स्तुति करता हूँ।

यस्य ब्रह्मादयोदेवा वेदा लोकाश्चराचराः।

नामरूपविभेदेन फल्ग्व्या च कलया कृताः।।२२।।

भावार्थ–ब्रह्मादि समस्त देवता चारों वेद तथा संपूर्ण चराचरजीव नाम और आकृति के भेद से जिनके अत्यन्त क्षुद्र अंश के द्वारा रचे गये हैं।

यथार्चिषोऽग्नेः सवितुर्गभस्तयो,

निर्यान्ति संयान्त्यसकृत स्वरोचिषः।

तथा यतोऽयं गुण सम्प्रवाहो,

बुद्धिर्मनः खानि शरीरसर्गाः।।२३।।

भावार्थ–जिस प्रकार प्रज्वलित अग्नि से लपटें तथा सूर्य से किरणे बार बार निकलती है और पुनः अपने कारणों में लीन हो जाती है, उसी प्रकार बुद्धि, मन इन्द्रियां और नाना योनियों के शरीर यह गुणमय प्रपंच जिन स्वयं प्रकाश परमात्मा से प्रकट होता है और पुनः उन्हीं में लीन हो जाता है।

स वै न देवा सुरमर्त्यतिर्यङ्,

न स्त्री न षण्ढो न पुमान् न जन्तुः।

नायं गुणः कर्म न सन्न चासन्,

निषेधशेषो जयतादशेषः।।२४।।

भावार्थ–वे भगवान् वास्तव में न तो देवता है न असुर, न मनुष्य है न तिर्यक (मनुष्य से नीची पशु, पक्षी आदि किसी) योनि के

प्राणी है। न वे स्त्री हैं न पुरुष और न नपुसंक ही है। न वे ऐसे कोई जीव है जिनका इन तीनों ही श्रेणियों में समावेश न हो सके। न वे गुण है न कर्म, न कार्य है न तो कारण ही है सबका निषेध हो जाने पर जो कुछ बच रहता है, वही उनका स्वरूप है और वे ही सब कुछ है, ऐसे भगवान् मेरे उद्धार के लिये आविर्भूत हों।

जिजीविषे नाहमिहामुया कि,

मन्तर्बहिश्चावृतयेभयोन्या।

इच्छामि कालेन न यस्य विप्लव,

स्तस्यात्मलोकावरणस्य मोक्षम्।।२५।।

भावार्थ-मैं इस ग्राह के चंगुल से छूटकर जीवित नहीं रहना चाहता हूँ, क्योंकि भीतर और बाहर सब और से अज्ञान के द्वारा ढके हुए इस हाथी के शरीर से मुझे क्या लेना है। मैं तो आत्मा के प्रकाश को ढक देने वाले उस अज्ञान की निवृत्ति चाहता हूँ। जिसका कालक्रम से अपने आप नाश नहीं होता अपितु भगवान् की दया से अथवा ज्ञान के उदय से होता है।

सोऽहं विश्वसृजं विश्वमविश्वंविश्ववेदसम्।

विश्वात्मानमजं ब्रह्म प्रणतोऽस्मि परंपदम्।।२६।।

भावार्थ-इस प्रकार मोक्ष का अभिलाषी मैं विश्व के रचयिता, स्वयं विश्व के रूप में प्रकट तथा विश्व से सर्वथा परे विश्व को खिलोना बनाकर खेलने वाले, विश्व में आत्मा रूप से व्याप्त, अजन्मा, सर्वव्यापक एवं प्राप्य वस्तुओं में सर्व श्रेष्ठ श्रीभगवान्

को केवल प्रणाम ही करता हूँ। उनकी शरण में हूँ।

योगरन्धितकर्माणो हृदियोगविभाविते।

योगिनो यं प्रपश्यन्ति योगेशं तं नतोऽस्म्यहम्।।२७।।

भावार्थ–जिन्होंने भगवद्भक्ति रूप योग के द्वारा कर्मों को जला डाला है, वे योगी लोग उसी योग के द्वारा शुद्ध किये हुए अपने हृदय में जिन्हें प्रकट हुआ देखते हैं, उन योगेश्वर भगवान् को मैं नमस्कार करता हूँ।

नमो नमस्तुभ्यमसह्यवेग,

शक्ति त्रयायाखिलधीगुणाय।

प्रपन्न पालाय दुरन्तशक्तये,

कदिन्द्रियाणामनवाप्यवर्त्मने।।२८।।

भावार्थ–जिनकी त्रिगुणात्मक (सत्व–रज–समरूप) शक्तियों का रागरूप वेग असह्य है, जो संपूर्ण इन्द्रियों के विषय रूप में प्रतीत हो रहे हैं, तथापि जिनकी इन्द्रियां विषयों में ही रची पची रहती है। ऐसे लोगों को जिनका मार्ग भी मिलना असंभव है, उन शरणागत रक्षक एवं अपार शक्तिशाली आपको बारबार नमस्कार है।

नायं वेद स्वमात्मानं यच्छक्त्याहंधियाहतम्।

तं दुरत्ययमाहात्म्यं भगवन्त मितोऽस्म्यहम्।।२९।।

भावार्थ–जिनकी अविद्यानामक शक्ति के कार्य रूप अंहकार से ढके हुए अपने स्वरूप को यह जीव जान नहीं पाता है उन अपार महिमा वाले भगवान् की मैं शरण आया हूँ।

श्रीशुकः उवाच – श्री शुकदेवजी ने कहा

एवं गजेन्द्रमुपवर्णितनिर्विशेषं,
ब्रह्मादयो विविध लिंगभिदाभिमानाः।
नैते यदोपससृपुर्निखिलात्मकत्वात्,
तत्राखिलामरममो हरिराविरासीत्।।३०।।

भावार्थ–जिसने पूर्वोक्त प्रकार से भगवान् के भेद रहित निराकार स्वरूप का वर्णन किया था, उस गजराज के समीप जब ब्रह्मा आदि कोई भी देवता नहीं आये, जो भिन्न भिन्न प्रकार के विशिष्ट विग्रहों को ही अपना स्वरूप मानते हैं। तब साक्षात् श्री हरि जो सबके आत्मा होने के कारण सर्व देवस्वरुप हैं वहां प्रकट हो गये।

तं तद्वदार्त्तमुपलभ्यजगन्निवासः,
स्तोत्रं निशम्य दिविजैः सह संस्तुवद्भिः।
छन्दोमयेन गरुडेन समुह्यमान,
श्चक्रायुधोऽभ्यगमदाशु यतोगजेन्द्रः।।३१।।

भावार्थ–उपर्युक्त गजराज को उस प्रकार दुःखी देखकर तथा उसके द्वारा पढी हुई स्तुति को सुनकर सुदर्शन चक्र धारी जगदाधार भगवान् इच्छानुरूप वेगवाले गरुडजी की पीठ पर बैठकर स्तवन करते हुए देवताओं के साथ तत्काल उस स्थान पर पहुंच गये जहां वह हाथी था।

सोऽन्तस्सरस्युरुबलेन गृहीत आर्तो,

दृष्ट्वा गुरुत्मति हरिं ख उपात्त चक्रम्।

उत्क्षिप्य साम्बुजकरं गिरमाहकृच्छा,

न्नारायणा खिलगुरो भगवन् नमस्ते।।३२।।

भावार्थ–सरोवर के भीतर महाबली ग्राह के द्वारा पकड़े जाकर दुःखी हुए उस हाथी ने आकाश में गरूड़ की पीठ पर चक्र को उठाये भगवान् श्री हरि को देखकर अपनी सूँड को जिसमें उसने (पूजा के लिये) कमल का एक फूल ले रखा था। ऊपर उठाया और बड़ी कठिनाई से **"सर्वपूज्य भगवान् नारायण! आपको प्रणाम है"** यह वाक्य कहा।

तं वीक्ष्य पीडितमजः सहसावतीर्य,

सग्राहमाशु सरसः कृपयोज्जहार।

ग्राहाद् विपाटितमुखादरिणागजेन्द्रं,

संपश्यतां हरिरमूमुचदुस्त्रियाणाम्।।३३।।

भावार्थ–उसे पीडित देखकर अजन्मा श्रीहरि एकाएक गरूड को छोडकर नीचे झीलपर उतर आये वे दया से प्रेरित हो ग्राहसहित उस गजराज को तत्काल झील से बाहर निकाल लाये और देवताओं के देखते देखते चक्र से उस ग्राह का मुंह चीरकर उसके चंगुल से उबार लिया।

श्री गजेन्द्र मोक्ष संपूर्ण

ये भगवान् श्रीकृष्णचंद्रजी के अन्य पुराणों से लिये हुए ७५ नामों सहित कीर्तन करने योग्य एक हजार (सहस्त्र) नाम सम्पूर्ण हुए। इस ग्रंथ में श्रीकृष्णचंद्रजी के अन्य पुराणों से आये हुए ७५ नाम संख्या निम्नानुसार है:-

२०. शुकवागमृताब्धीन्दुः ५६. सर्वसाक्षी १२४. साक्षी १२७. चतुमूर्तिः १२८. चतुर्धा २४०. सर्वेशः २०५. कोटि सूर्यसमप्रभः २०६. ब्रह्मकोटि प्रजापति २१०. सुधाकोटि स्वास्थ्य हेतुः २११. कामधुक् कोटिकामदः २१२. समुद्रकोटि गंभीरः २१३. तीर्थकोटि समाह्वः २१४. सुमेरूकोटिनिष्कम्पः २१५. कोटि ब्रह्माण्डविग्रहः २१६. कोट्यश्वमेधपाघ्न २१७. वायुकोटि महाबलः २१८. कोटीन्दु जगदानंदीः २१६. शिवकोटि प्रसादकृत् २४४. सहस्त्र कवचच्छेदी २५८. स्थिति प्रदः २६०. मानदः २६७. जनार्दनः ३६०. पुरुषावयवः ६१४. उपेन्द्र ६१५. इन्द्रावरजः ६२५. विश्वमूर्तिः ६२६. पृथुश्रवाः ६२७. पाशवद्धबलिः ६६१. रघुनाथः ६६२. रामचंद्र ६६३. रामभद्रः ६६४. रघुप्रियः ६६५. अनंत कीर्ति ६६६. पुण्यात्मा ६६७. पुण्यश्लोकैकभास्करः ६८६. अहल्या दुःखहारी ६६०. ग्रहस्वामी, ६६१. सलक्ष्मणः ६६२. चित्रकूट प्रियस्थानः ६६३. दण्डकारण्यपावनः ६६४. शरभंग सुतीक्ष्णादिपूजितः ६६५. अगस्त्यभाग्यभूः ६६६. ऋषि संप्रार्थितकृति ६६६. विराधवध पंडितः ७०४. जटायुवधमोक्षदः ७०५. शबरीपूजितः ७०७. दुंदुभ्यस्थि प्रहरणः ७०८. सप्तताल विभेदनः ७३०. केशवः ७७८. नंदव्रजजनानंदी ७८५. रामानुजः ७८६. वासुदेवः ८०५. अरण्य भोक्ता ८०६. बाललीला परायणः ८०७. प्रोत्साहजनक ८०८. अघासुर निषूदनः ८०६.

६६४. रघुप्रियः ६६५. अनंत कीर्ति ६६६. पुण्यात्मा ६६७. पुण्यश्लोकैकभास्करः ६८९. अहल्या दुःखहारी ६९०. ग्रहस्वामी. ६९१. सलक्ष्मणः ६९२. चित्रकूट प्रियस्थानः ६९३. दण्डकारण्यपावनः ६९४. शरभंग सुतीक्ष्णादिपूजितः ६९५. अगस्त्यभाग्यभूः ६९६. ऋषि संप्रार्थितकृति ६९९. विराधवध पंडितः ७०४. जटायुवधमोक्षदः ७०५. शबरीपूजितः ७०७. दुंदुभ्यस्थि प्रहरणः ७०८. सप्तताल विभेदनः ७३०. केशवः ७७८. नंदव्रजजनानंदी ७८५. रामानुजः ७८६. वासुदेवः ८०५. अरण्य भोक्ता ८०६. बाललीला परायणः ८०७. प्रोत्साहजनक ८०८. अघासुर निषूदनः ८०९.

गो.चि. श्री 105 श्री भूपेशकुमारजी (विशाल बाबा)

नाथद्वारा

जन्म दिनांक
५ जनवरी सन् १९८१

जन्म तिथि : पौष कृष्ण ३०
विक्रम संवत् २०३७

ब्रह्मवाद के सूत्र

(१) "ब्रह्म सर्वज्ञ है"

(२) "जीव अल्पज्ञ, अणु और ईश्वर का ही अंश है"

(३) "ब्रह्म अपरिमेय और अज्ञेय है, दुर्गम्य भी है किन्तु अनुग्रहैक गम्य भी वही है"

(४) "ब्रह्म सर्व धर्मों का केन्द्र है"

(५) "ब्रह्म सर्व सामर्थ्य सम्पन्न ईश्वर है और वही परमतत्व भगवान् श्री कृष्ण ही है"

(६) "ब्रह्म सर्व विरूद्ध धर्मों का आश्रय है"

(७) "ब्रह्म निर्दुष्ट है"

(८) "ब्रह्म सर्व सद्गुण संयुक्त है"

"कृष्णात्परं नास्ति दैवं वस्तुतो दोष वर्जितम्"

महाप्रभु श्री वल्लभाचार्य

चौधरी ऑफसेट प्रा.लि., उदयपुर , फोन. 0294 2584071/2673